राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, बुधवार, 6 अगस्त 2025

हिरोशिमा दिवस विशेष

शहर की शांतिपीठ संस्था चालीस साल से लगातार दे रही शांति का संदेश

# उदयपुर में फल-फूल रही तबाही के बाद फूटी 'शांति की कोपलें'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

**उदयपुर.** 6 अगस्त 1945 का दिन। संयुक्त राज्य अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर परमाणु बम गिराया था। परमाणु बम से यह दुनिया की सबसे बड़ी तबाही मानी गई है। तबाही के बाद 7 दशक में दुनियाभर में शांति की कोपलें फूटीं। इसी तरह से उदयपुर की भी संस्था पिछले 4 दशक से शांति के बीज बो रही है। भले ही हिरोशिमा और उदयपुर का सीधा संबंध नहीं, लेकिन एक रिश्ता भाईचारे और मानवता का है, जिसे मिशन के रूप में लेकर हिरोशिमा दिवस मनाया जाता है। संस्था के माध्यम से उदयपुर के अलावा दिल्ली, अहमदाबाद, साबरमती में भी आयोजन किए। खास बात यह है कि संस्था के कार्यों से प्रभावित बॉलीवुड एक्टर सुनील दत्त सहित कई नामी हस्तियां उदयपुर में आयोजन का हिस्सा बन चुकी है। आज देश में हिरोशिमा दिवस पर शांति का संदेश देने वालों की प्रथम सूची में उदयपुर की संस्था पहले पायदान पर है। बीते चार दशक में हजारों लोग आयोजनों से जुड़े, वहीं बच्चों ने लाखों चिट्ठियां राजदूतों को भेजकर शांति का संदेश दिया। माना जाता है कि त्रासदी के बाद शांति का संदेश देने के लिए जैसी प्रेरणा हिरोशिमा में है, उसके बाद सर्वाधिक उदयपुर से दिखती है।



संस्थापक सचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी

**इसलिए मनाया जाता है दिवस:** संयुक्त राज्य अमरीका ने 6 अगस्त 1945 को जापान के हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराया, जिससे हिरोशिमा में 2 लाख 80 हजार नागरिक, 43 हजार सैनिक मारे गए थे। बमबारी के परिणामस्वरूप 5 साल के दरमियान 2 लाख से ज्यादा लोग और मरे। तबाही के बाद दुनियाभर में शांति की अपील की जाने लगी। इसलिए 6 अगस्त को हिरोशिमा दिवस मनाया जाता है।

## कभी हिरोशिमा नहीं देखा, लेकिन संवेदनशील

**सलूम्बर** के ईटालीखेड़ा में जन्मे और उदयपुर में पले-बढ़े संस्थापक सचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी को शांति वाहक माना जाता है। हिरोशिमा दिवस पर जापान से न्योता आया, लेकिन कभी नहीं गए। इसके बावजूद हिरोशिमा त्रासदी को लेकर संवेदनशील रहे। शांति के प्रति विचारधारा के बारे में बताते हैं कि बचपन से ही भाईचारा और शांति के लिए काम करना चाहते थे। इसके लिए इंजीनियर और सिविल सेवा में जाने का विचार त्याग दिया। वे देश के महान वैज्ञानिक डॉ. डीएस कोठारी से प्रभावित थे, जो उदयपुर मूल के थे। उनकी प्रेरणा से ही शांतिपीठ की शुरुआत हुई। सन 1984 में रामकृष्ण परमहंस जयंती पर स्थापना की।

**उदयपुर मेयर को अंतरराष्ट्रीय संस्था से जोड़ा:** जापान के हिरोशिमा और नागासाकी के मेयर्स ने 1982 में 'मेयर्स फॉर पीस' संस्था की शुरुआत की। संस्था में दुनियाभर से 8500 मेयर सदस्य हैं, जो शांति का संदेश देने के लिए कार्यरत हैं। शांतिपीठ की पहल पर उदयपुर के मेयर को भी सदस्यता मिली। संभवतया राजस्थान में पहले मेयर हैं, जिनको 'मेयर्स फॉर पीस' की सदस्यता मिली हुई है।

## स्थापना, उद्देश्य और कार्य

**शांतिपीठ** उदयपुर में 1984 में स्थापित संगठन है, जिसकी स्थापना अनन्त गणेश त्रिवेदी ने की। संस्था पर्यावरण एवं विरासत संरक्षण, मानव मूल्य, शांति शिक्षा और परमाणु निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से समर्पित है।

**संस्था** विज्ञान और अहिंसा के बीच सामंजस्य स्थापित करके समाज में प्रेम, सत्य, शांति एवं मानव मूल्यों को बढ़ावा देती है। युवाओं में शांति, विश्व सौहार्द, मानवाधिकार और जिम्मेदार नागरिकता के प्रति जागरूकता के लिए कार्यरत है।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, शनिवार 15 अगस्त, 2026

**शांतिपीठ का संवाद** • 2 करोड़ लोगों का विस्थापन और 20 लाख निर्दोषों की मौत मानवता को कंपा देने वाली घटना

# विभाजन की त्रासदी अनमिट दर्द, अब राष्ट्र योग अपनाने की जरूरत

उदयपुर | विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान की ओर से संवाद कार्यक्रम हुआ। वक्ताओं ने वर्ष 1947 के विभाजन की भीषण त्रासदी, भड़की हिंसा, निर्मम हत्याओं और दर्दनाक विस्थापन की पीड़ा को याद किया। सबने एक स्वर में सामाजिक सद्भाव, भाईचारे और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का आह्वान किया।

वक्ताओं ने कहा कि विभाजन के समय दो करोड़ लोगों का विस्थापन और 20 लाख से अधिक निर्दोष नागरिकों की जान जाना ऐसा अनमिट दर्द है, जिसकी स्मृति मात्र से संवेदनशील मानवता कांप उठती है। इस अकल्पनीय त्रासदी के बाद भी भारत अपनी वसुधैव कुटुंबकम की प्राचीन ऋषि-परंपरा को कायम रखे हुए है और अखंड राष्ट्र की संकल्प-ज्योति के साथ निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। विषय-प्रवर्तन करते हुए

## जल्दबाजी में लिया फैसला और अधूरी नीतियां बनीं त्रासदी का कारण

नगर निगम के पूर्व आयुक्त दिनेश कोठारी ने कहा कि औपनिवेशिक ब्रिटेन की नीतियों और तत्कालीन नेताओं की जल्दबाजी के कारण देश का विभाजन स्वीकार किया गया। धर्म के आधार पर हुआ यह विभाजन न केवल अधूरा रहा, बल्कि देश के टुकड़े होने के बाद भी समस्याएं जस की तस बनी रहीं। इसी की परिणति थी कि वर्ष 1990 में कश्मीर में एक बार फिर धर्म के नाम पर लोगों को निशाना बनाया गया और उन्हें अपनी ही मातृभूमि से बेदखल होना पड़ा। अब हमें पूर्ण विश्वास, सद्भाव और एकजुटता के साथ राष्ट्र धर्म का पालन करना होगा। संवाद में डॉ. इंद्र जोशी, एडवोकेट उमेशचंद्र शर्मा सहित कई गणमान्य लोगों ने विचार रखे। अंत में मौन रखकर विभाजन त्रासदी में जान गंवाने वाले निर्दोषों और शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई।

बीएन विवि के फार्मेसी विभागाध्यक्ष डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने कहा कि यह स्मृति दिवस हमें इतिहास से सीख लेकर सौहार्द, शांति और राष्ट्रीय अखंडता को मजबूत करने का संदेश देता है। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि राष्ट्र के प्रति हमारे दायित्व शहीदों की प्रेरणा और आत्म-बोध से तय होने चाहिए। मैं राष्ट्र के लिए क्या योगदान दे सकता हूं...' इस भाव से ही राष्ट्र-बोध क्रियाशील होगा। कर्म योग, ज्ञान योग और भक्ति योग की ही तरह आज देश को राष्ट्र योग अपनाने की सख्त जरूरत है। यह पहल युवाओं को करनी होगी।

## विभाजन सिंधी समाज से अपनी जन्मभूमि छीन सका, पर पहचान और हौसला नहीं : राजानी

उदयपुर | सिंधी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हरीश राजानी ने कहा कि विभाजन ने सिंधी समाज से जन्मभूमि तो छीन ली, लेकिन सांस्कृतिक पहचान, स्वाभिमान और हौसले को नहीं छीन सका। यह त्रासदी बेहद गहरी थी। सिंध की वह धरती, जहां सदियों से सिंधी सभ्यता, साहित्य और व्यापार फला-फूला, वह रातों-रात सीमा पार चली गई। लाखों परिवारों को घर, जमीन, कारोबार और रिश्ते छोड़ने पड़े। भारत आए सिंधी परिवार अपने साथ समृद्ध संस्कृति, भाषा, संतों की वाणी, भगवान झूलेलाल के प्रति आस्था और कड़ी मेहनत लेकर आए थे। इस दिवस का उद्देश्य इतिहास से सीख लेकर देश की एकता, अखंडता और सद्भाव को मजबूत करना है।



दैनिक भास्कर
गुरुवार, 13 अगस्त, 2026

# युवा दिवस पर सुविवि में परिचर्चा : पर्यावरण संरक्षण व राष्ट्र निर्माण में भागीदारी पर मंथन

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर



मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग और शांतिपीठ संस्थान के साझे में अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर 'अलग परिस्थितियाँ, समान आकांक्षाएं' विषय पर परिचर्चा आयोजित हुई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. कैलाश डागा ने की। कला संकाय अधिष्ठाता प्रो. नीरज शर्मा और शांतिपीठ संस्थान के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी मुख्य वक्ता रहे। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हर युवा की परिस्थितियां अलग हो सकती हैं, लेकिन बेहतर भविष्य और सम्मानजनक जीवन की आकांक्षा समान होती है। युवा शक्ति सकारात्मक सोच, अनुशासन और संवेदनशीलता से राष्ट्र निर्माण में बड़ी भूमिका निभा सकती है। कुलगुरु प्रो. कैलाश डागा ने कहा कि युवा केवल देश का भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान के परिवर्तनकारी नेतृत्व की शक्ति हैं। उन्होंने विद्यार्थियों और शोधार्थियों से सीधा संवाद कर उनकी आकांक्षाएं और विचार जाने।

प्रो. नीरज शर्मा ने शिक्षा और रोजगार के साथ-साथ सामाजिक व पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति संवेदनशील रहने पर बल दिया। विभागाध्यक्ष डॉ. अनुया वर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि जलवायु परिवर्तन, जल संकट और जैव विविधता संरक्षण में युवा निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

कार्यक्रम में डॉ. गिरिराज सिंह चौहान, दिनेश कोठारी, डॉ. कुंजन आचार्य, जयश्री सिंह, राजकुमार मेनारिया, राजनंदिनी मेनारिया और मानसी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। संचालन डॉ. सोनिका जैन ने किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, गुरुवार, 13 अगस्त, 2026

# युवा देश का भविष्य ही नहीं, आज का नेतृत्व भी

**उदयपुर@पत्रिका.** सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग और शांतिपीठ संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में युवा दिवस पर अलग परिस्थितियां, समान आकांक्षाएं पर संगोष्ठी हुई। अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. कैलाश डागा ने कहा कि युवा केवल देश का भविष्य ही नहीं, बल्कि वर्तमान के परिवर्तनकारी नेतृत्व की वास्तविक शक्ति हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए उनके विचारों और भविष्य की योजनाओं की जानकारी ली। मुख्य वक्ता एवं शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने युवाओं से मेवाड़ की शौर्य व त्याग की गौरवशाली परंपरा से प्रेरणा लेते हुए पर्यावरण विघटन जैसी गंभीर चुनौतियों से निपटने का आह्वान किया। अधिष्ठाता प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि शिक्षा और रोजगार के साथ-साथ युवाओं को पर्यावरणीय व सामाजिक चुनौतियों के प्रति संवेदनशील होना आवश्यक है।



सुविवि व शांतिपीठ के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में चर्चा करते हुए।

उदयपुर, गुरुवार 13 अगस्त, 2026
प्रातःकाल

# युवाओं की ऊर्जा से बनेगा सतत भविष्य

## अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर आयोजन



**उदयपुर (वि)।** मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के पर्यावरण विज्ञान विभाग एवं शांतिपीठ संस्थान, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर 'अलग परिस्थितियाँ, समान आकांक्षाएँ' विषय पर एक प्रेरणादायी एवं विचारोत्तेजक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में युवाओं की ऊर्जा, प्रतिभा, आकांक्षाओं और सामाजिक एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को सकारात्मक दिशा देने पर विशेष जोर दिया गया। अध्यक्षता मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. कैलाश डागा ने की। इस अवसर पर कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. नीरज शर्मा तथा शांतिपीठ संस्थान के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। अनंत गणेश त्रिवेदी ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक युवा की परिस्थितियाँ भले ही अलग हों, लेकिन बेहतर भविष्य, सम्मानजनक जीवन और समाज में सकारात्मक परिवर्तन की आकांक्षा सभी युवाओं में समान होती है। कुलगुरु प्रो. कैलाश डागा ने अपने ने कहा कि युवा केवल देश का भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान के परिवर्तनकारी नेतृत्व की महत्वपूर्ण शक्ति हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से अपने ज्ञान, कौशल और ऊर्जा का उपयोग समाज एवं राष्ट्र की बेहतरी के लिए करने का आह्वान किया। कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. नीरज शर्मा ने युवाओं की बहुआयामी भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज की युवा पीढ़ी को शिक्षा और रोजगार के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति भी संवेदनशील होना आवश्यक है। पर्यावरण विज्ञान विभाग की इंचार्ज हेड डॉ. अनुया वर्मा ने सभी अतिथियों का आत्मीय एवं गरिमापूर्ण स्वागत किया। डॉ. गिरिराज सिंह चौहान, दिनेश कोठारी एवं डॉ. कुंजन आचार्य सहित अन्य शिक्षक एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

City भास्कर
उदयपुर • शनिवार 19 अप्रैल, 2025



विश्व विरासत दिवस • शहर भर में हुईं सेमिनार-संगोष्ठियां, वक्ताओं का आह्वान

# झील-पहाड़ियां, जंगल-बावड़ियां भी हमारी विरासत, नई पीढ़ी के लिए इन्हें भी सहेजना होगा, बच्चों को सांस्कृतिक धरोहरों के चित्र भी दिए



देवाली स्थित हंसराज चिल्ड्रन होम में विरासत सत्र हुआ।

**उदयपुर** | विश्व विरासत दिवस शुक्रवार को मनाया गया। सेमिनार-संगोष्ठी समेत कई चर्चा सत्र हुए। वक्ताओं ने कहा कि महल-हवेलियों वाले इस शहर में प्रकृति ने भी कई विरासतें दी हैं। इनमें झील-पहाड़ियां, जंगल-बावड़ियां और कई प्राकृतिक स्रोत हैं। इन्हें बचाना साझा जिम्मा है। अगली पीढ़ी के लिए इन धरोहर-विरासतों को बचाना होगा।

महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउंडेशन की ओर से देवाली स्थित हंसराज चिल्ड्रन होम में विरासत सत्र हुआ। डॉ. मनीष श्रीमाली ने महाराणा प्रताप के जीवन पर प्रकाश डाला। बालिकाओं को प्रेरक कहानियां सुनाईं। बच्चों ने सवाल भी पूछे। फाउंडेशन ने 'इंडिया कल्चरल जिग्सा' गतिविधि कराई। बच्चों को भारत का नक्शा और राज्यों की सांस्कृतिक धरोहरों के चित्र दिए गए। बालिकाओं ने चित्रों को राज्यों के अनुसार नक्शे में चिपकाया। फाउंडेशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. मयंक गुप्ता ने बताया कि इन गतिविधियों का उद्देश्य बच्चों को भारत की समृद्ध विरासत से जोड़ना है।

**शांति पीठ में विचार गोष्ठी :** शान्तिपीठ संस्थान में शुक्रवार को विचार गोष्ठी हुई। सुविवि के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने कहा कि धरोहर चाहे मूर्त हो या अमूर्त, उनका संरक्षण हमारी नैतिक और सामूहिक जिम्मेदारी है। उत्तराधिकार में मिली विरासत के हम न्यासी हो सकते हैं, लेकिन उसे नष्ट करने का अधिकार हमें नहीं है। विरासत अगली पीढ़ी को सौंपना भी हमारा दायित्व है। सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं के साथ ही प्रकृति-पर्यावरण, साहित्य, संगीत और विभिन्न कलाओं के रूप में पिछली पीढ़ी से प्राप्त ज्ञान-विज्ञान के मौखिक और लिखित स्वरूपों के भी संरक्षण आवश्यकता है। शांति पीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि श्रुति और स्मृति भारत की महान विरासत है। भारतीय वांग्मय में सारा देवत्व प्रकृति में देखा गया है और इसीलिए प्रकृति की उपासना करते हुए परम सत्य का मार्ग प्रशस्त किया गया है। उन्होंने कहा कि त्याग, बलिदान और मानवीय अस्मिता के आदर्शों की पहचान प्राप्त मेवाड़ एक शौर्य धाम है जिसे यूनेस्को में ...र्ज कराते हुए इसके संरक्षण के पुख्ता इंतजाम किए जाने ...ए। बी एन विवि के डॉ कमल सिंह राठौड़ व एडवोकेट ...चन्द्र शर्मा ने भी विचार रखे।

## साझा प्रयास करने होंगे, तभी बचा रहेगा पर्यटन और सामाजिक-आर्थिक ढांचा

अखिल भारतीय नव वर्ष समारोह समिति और आलोक संस्थान के साझे में सेक्टर-11 स्थित आलोक संस्थान में व्याख्यानमाला और संकल्प दिवस मनाया गया। विषय था - माछला मगरा, झीलें एवं पहाड़ : हमारी प्राकृतिक धरोहर बचाने की गुहार। मुख्य वक्ता डॉ. प्रदीप कुमावत ने कहा कि पहाड़, झीलें और वन हमारी समृद्धि का आधार हैं। इनके संरक्षण में विफल रहे तो पर्यटन और सामाजिक-आर्थिक ढांचा प्रभावित होगा।

उन्होंने माछला मगरा क्षेत्र में अतिक्रमण, झीलों के सिकुड़ने और पहाड़ों के दोहन पर चिंता जताई। कहा कि केवल सरकार पर निर्भर नहीं रह सकते। नागरिकों, संस्थानों और समुदाय को मिलकर प्रयास करने होंगे।




डॉ. कुमावत ने संकल्प दिलाया कि माछला मगरा क्षेत्र में अवैध निर्माण रोका जाएगा। झीलों का पुनरुद्धार होगा। पहाड़ी वनस्पति और तलछट संरक्षित की जाएगी। विद्यालय और समुदाय स्तर पर जागरूकता बढ़ाई जाएगी। कार्यक्रम की शुरुआत सहायक प्रशासक प्रतीक कुमावत ने की। प्राचार्य शशांक टांक ने आभार जताया।

## पानी-सुरक्षा देने वाली बावड़ियां सामाजिक मिलन स्थल भी थीं

भारतीय इतिहास संकलन समिति और साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ की ओर से 'आपदा में बावड़ियों का उपयोग' विषय पर गोष्ठी हुई। इस वर्ष की थीम 'आपदा और संघर्ष प्रतिरोधी विरासत' रही। इतिहास के विद्यार्थियों और विद्वानों ने मेवाड़ की बावड़ियों पर विचार रखे। छगनलाल बोहरा ने कहा कि मेवाड़ बावड़ियों का गढ़ है।

राजा-महाराजाओं ने जन सुविधा के लिए बावड़ियां बनवाईं। ये आपदा में पेयजल और सुरक्षा देती हैं। सार्वजनिक स्थलों पर बनी बावड़ियां आज भी उपयोगी हैं। डॉ. विवेक भटनागर ने देबारी की त्रिमुखी बावड़ी का उल्लेख किया। यह 1675 में महाराणा राजसिंह की रानी रामरस दे ने बनवाई थी। इसे जया बावड़ी भी कहा जाता है। इसमें तीन अलंकृत प्रवेश द्वार हैं। प्रस्तर अभिलेख में बप्पा से लेकर राजसिंह तक के शासकों की उपलब्धियां दर्ज हैं। इसमें मालपुरा विजय, चारुमती विवाह और सर्वऋतु विलास बाग का उल्लेख है।

डॉ. जीवन सिंह खरकवाल ने बताया कि मध्यकालीन भारत में बावड़ियां पेयजल स्रोत, सांस्कृतिक केंद्र और धार्मिक स्थल थीं। इन पर रहट लगते थे। गणेश, भैरव और ग्राम



देवता की स्थापना होती थी। ये सामाजिक मिलन स्थल भी थीं। इन पर अभिलेख भी मिलते हैं, जिससे ये ऐतिहासिक विरासत बन गईं। डॉ. रेखा महात्मा ने बताया कि नीलकंठ महादेव की बावड़ी, जिसे छतरी वाली बावड़ी भी कहते हैं, महाराणा प्रताप के राजतिलक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। आज यह संरक्षण के अभाव में जीर्णशीर्ण हो चुकी है। डॉ. मनीष श्रीमाली, दीपक शर्मा और धीरज वैष्णव भी मौजूद रहे।

## एक नजर धरोहर पर...

## आहड़ संग्रहालय में विरासत फोटो प्रदर्शनी का शुभारंभ



विश्व विरासत सप्ताह के मौके पर आहड़ संग्रहालय में शुक्रवार से विरासत फोटोग्राफी प्रदर्शनी शुरू हुई। इसकी थीम एक नजर धरोहर पर है।

आयोजन उदयपुर गजट, द आर्ट पिवोट और विश्व विरासत कला महोत्सव की ओर से किया जा रहा है। प्रदर्शनी में स्थानीय कलाकार, फोटोग्राफर और स्कैचर्स की कृतियां शामिल हैं। मकसद आहड़ संग्रहालय जैसे कम देखे गए सांस्कृतिक स्थलों से लोगों को फिर से जोड़ना है। साथ ही युवा पीढ़ी को राजस्थानी विरासत से जोड़ने की प्रेरणा देना है। प्रदर्शनी का क्यूरेशन चित्रकार प्रो. राजेश यादव ने किया है। इसमें राहुल माली, यश दीक्षित और सुनील लड्ढा ने योगदान दिया है। कार्यक्रम का समन्वय विपुल शर्मा, रिनी दीक्षित, भास्कर चौधरी और रविंदर सिंह ने किया। इस मौके पर चित्रकार रघुनाथ शर्मा और कला के विद्यार्थी भी मौजूद रहे। आयोजन को पुरातत्व अधीक्षक हिमांशु सिंह का समर्थन मिला है। यह प्रदर्शनी 25 अप्रैल तक तक लगाई जाएगी।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 19 अप्रेल, 2025



www.mahanagartimes.com

## इलाकों का दौरा

स्थिति को नियंत्रण में लाया गया है। हमें भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए और कदम उठाने चाहिए। मैं निश्चित रूप से मुर्शिदाबाद का दौरा करूंगा। क्षेत्र के लोगों ने वहां बीएसएफ कैंप बनाने का अनुरोध किया है।

बता दें, यह दौरा वक्फ (संशोधन) अधिनियम के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के दौरान 11 अप्रेल को भड़की हिंसा के मद्देनजर हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप तीन लोगों की मौत हो गई, कई अन्य घायल हो गए और व्यापक संपत्ति का नुकसान हुआ। कई परिवार विस्थापित हो गए हैं, जिनमें से कई झारखंड के पाकुड़ जिले में चले गए हैं, जबकि अन्य ने मालदा में स्थापित राहत शिविरों में शरण ली है।

इससे पहले गुरुवार को कलकत्ता हाईकोर्ट ने कहा कि कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए केंद्रीय बल कुछ समय तक

# जीवन रतन मॉडर्न स्कूल ने की हैरिटेज वॉक का आयोजन

## झीलें, पहाड़ संरक्षण का दिलाया संकल्प




फ्रेम : अनंत गणेश

विश्व विरासत दिवस पर अखिल भारतीय नववर्ष समारोह समिति एवं आलोक संस्थान के तत्वावधान में आलोक संस्थान हिरणमगरी सेक्टर 11 में माछला मगरा, झीलें एवं पहाड़ : हमारी प्राकृतिक धरोहर बचाने की गुहार विषयक व्याख्यानमाला एवं संकल्प दिवस मनाया गया। मुख्य वक्ता आलोक संस्थान के निदेशक डॉ प्रदीप कुमावत ने कहा हमारी प्राकृतिक विरासतों पहाड़, झीलें, वन हमारी समृद्धि के आधार हैं। यदि इन धरोहरों के संरक्षण में सफल नहीं हुए तो भविष्य में न केवल पर्यटन उद्योग प्रभावित होगा बल्कि शहर का सामाजिक, आर्थिक स्वरूप भी संकट में आ जाएगा। डॉ कुमावत ने माछला मगरा क्षेत्र में बढ़ते अतिक्रमण, सिकुड़ती झीलों, पहाड़ों के अवैध दोहन पर चिंता व्यक्त की। इन सभी के सामुदायिक स्तर पर संरक्षण का उन्होंने संकल्प दिलाया। सहायक प्रशासक प्रतीक कुमावत ने स्वागत भाषण दिया। प्राचार्य शशांक टांक ने आभार जताया।

क संतुलित आयाम का उदाहरण प्रस्तुत यह विचार विश्व पर शान्तिपीठ र गोष्ठी में वक्ताओं सुविवि में संस्कृत नीरज शर्मा ने कहा र्त हो या अमूर्त, करना हमारी नैतिक और सामूहिक जिम्मेदारी है। उत्तराधिकार में प्राप्त विरासत के हम न्यासी हो सकते हैं परन्तु उसे नष्ट करने का अधिकार हमें नहीं है क्योंकि विरासत को अगली पीढ़ी को सौंपना भी हमारा दायित्व है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा श्रुति और स्मृति भारत की महान विरासत है। भारतीय वांग्मय में सारा देवत्व प्रकृति में देखा गया है और इसीलिए प्रकृति की उपासना करते हुए परम सत्य का मार्ग प्रशस्त किया गया है और उपलब्ध अमृत को दुनियां में बांटा है। यह भारत की विरासत है। उन्होंने कहा नैतिक पतन से प्रकृति रूठ रही है। प्रकृति में व्याप्त अनहद नाद को असंतुलित कर दिया है। उन्होंने स्थानीय स्तर पर सचेत होने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि त्याग, बलिदान और मानवीय अस्मिता के आदर्शों की पहचान प्राप्त मेवाड़ एक शौर्य धाम है, जिसे यूनेस्को में दर्ज कराते हुए इसके संरक्षण के पुख्ता इंतजाम किए जाने चाहिए। बीएन विश्वविद्यालय के डॉ कमलसिंह राठौड़ ने कहा उदयपुर की विरासत हमारी पहचान है और इसे बचाना हमारा कर्तव्य। एडवोकेट उमेशचन्द्र शर्मा ने विरासत के प्रति संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता की आवश्यकता प्रतिपादित की।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार, 12 दिसम्बर 2025

अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस पर संगोष्ठी

# 'अरावली का संवर्धन और संरक्षण सबकी जिम्मेदारी'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com



संगोष्ठी में मंचासीन अतिथि। पत्रिका

**उदयपुर.** अरावली हमारा आदि तीर्थ हैं, जहां लौकिक ओर पारलोकिक कल्याण के लिए आस्था ही जुड़ी हुई नहीं है अपितु यह प्राणी मात्र की जीवन रेखा है। इसके संवर्धन व संरक्षण की प्राथमिक जिम्मेदारी हमारी सबकी है। देश की कार्यपालिका हो या न्यायपालिका, सभी उच्च संस्थाओं को इसकी हिफाजत पर गंभीर विचार करना चाहिए। यह विचार गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस के अवसर पर सीटीएई के सभागार में शान्तिपीठ संस्थान व महाराणा प्रताप कृषि विवि. की ओर से आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। संगोष्ठी से पूर्व विश्व विद्यालय के छात्र-छात्राओं के साथ प्रतिभागियों ने महाराणा प्रताप पहाड़ी की चोटी तक चढ़ाई की। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि पेसिफिक विवि. के अध्यक्ष डॉ. बी.पी शर्मा ने कहा कि 60-70 प्रतिशत जल हमें पहाड़ों से ही मिलता है। हिमालय में अब मात्र दो तिहाई ग्लेशियर बचे हैं। पिछले कई दशकों में वृक्ष कटते गए और विलायती बबूल को पनपाया गया जिसके दुष्परिणाम हम भुगत रहे हैं और जैव विविधता संकटग्रस्त हो चुकी हैं। अब हम पर्वतों को बचाने के लिए सैटेलाइट और सेंसर सिग्नल का इस्तेमाल कर सकते हैं। उन्होंने प्रस्तावित किया कि मेवाड़ को शौर्य धाम के रूप में यूनेस्को में दर्ज कराया जाना चाहिए। पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने अतिवृष्टि और अनावृष्टि का मूल कारण पर्यावरण विघटन को बताया। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ियां सुरक्षित रहें, इसके लिए जन जागरूकता और जवाबदेही अभियान की आवश्यकता है। समिधा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. चन्द्रगुप्त सिंह चौहान ने कहा, पहाड़ियां दैवीय संपदा हैं, इसलिए इनका नामकरण किया जाना चाहिए। जिससे स्थानीय लोगों का जुड़ाव होगा। वे इनके संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध भी होंगे। इस अवसर पर सीटीएई के डीन डॉ. सुनील जोशी, पूर्व आइएएस दिनेश कोठारी, उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा, एमएलएसयू में पर्यावरण विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. डीएस राठौड़, जी.पी.सोनी, लक्ष्मण पुरी गोस्वामी ने भी संबोधित किया। छात्र आर्य कटारा ने कविता पाठ किया। छात्रा दिव्या सुरैया ने विचार व्यक्त किए।

प्रातःकाल
उदयपुर, शुक्रवार 12 दिसंबर, 2025

# शांतिपीठ व एमपीयूएटी के साझे में संगोष्ठी आयोजित

**उदयपुर ( वि. )।** अरावली हमारा आदि तीर्थ है जहां लौकिक और पारलौकिक कल्याण हेतु आस्था मात्र जुड़ी हुई नहीं है अपितु यह प्राणी मात्र की जीवन रेखा है। इसके संवर्धन एवं संरक्षण की हमारी सब की प्राथमिक जिम्मेदारी है। देश की कार्य पालिका हो या न्याय पालिका,सभी उच्च संस्थाओं को इसकी हिफाजत पर गंभीर विचार करना चाहिए। अरावली प्राणवान है। इतिहास गवाह है कि इसकी जीवंतता ने हमारी अस्मिता और गरिमा को अक्षुण्ण रखा है। आज समाज अरावली संरक्षण के लिए उत्तरदाई है। आवश्यकता है कि युवा वर्ग आगे आए और प्राचीन धरोहर को सुरक्षित करते हुए स्वयं को भावी संकटों से मुक्त रखे ।उक्त विचार आज अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस के अवसर पर सी टी ए ई के सभागार में शान्तिपीठ संस्थान एवं महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के साझे में आयोजित संगोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किए।

संगोष्ठी के पूर्व प्रतिभागियों ने विश्व विद्यालय के छात्र छात्राओं के साथ पास ही स्थित महाराणा प्रताप



पहाड़ी की चोटी तक चढ़ाई की जिसमें मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय के पर्यावरण विभाग के छात्र भी सम्मिलित थे।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए पेसिफ्कि विश्व विद्यालय के अध्यक्ष डॉ. बी पी शर्मा ने कहा कि 60 - 70 प्रतिशत जल हमें पहाड़ों से ही मिलता है। इको सिस्टम पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि हिमालय में अब मात्र दो तिहाई ग्लेशियर बचें हुए हैं।

उन्होंने कहा पिछली कई दशाब्दियों वृक्ष कटते गये और विलायती बबूल को पनपाया गया जिसके दुष्परिणाम हम आज भुगत रहे हैं और जैव विविधता संकट ग्रस्त हो चुकी है। अब हम पर्वतों को बचाने के लिए सैटेलाइट और सेंसर सिग्नल का इस्तेमाल कर सकते हैं।

अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ उमाशंकर शर्मा ने अति वृष्टि और अनावृष्टि का मूल कारण पर्यावरण विघटन बताते हुए कहा कि आने वाली पीढ़ियां सुरक्षित रहें इसके लिए जन जागरुकता और जवाबदेही अभियान की आवश्यकता है।

समिधा संस्थान के अध्यक्ष एवं समाज सेवी डा चन्द्रगुप्त सिंह चौहान ने कहा कि पहाड़ियां दैवी संपदा है, इसलिए इनका नामकरण किया जाना चाहिए जिससे स्थानीय लोगों का जुड़ाव होगा और वे इनके संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध भी होंगे।

लक्ष्मण पुरी गोस्वामी ने कहा कि सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी को मारा नहीं जाता।

उन्होंने कहा कि जहां के महाराणा ने घास की रोटी खा कर भी पौरुष और प्रकृति की अस्मिता बरकरार रखी, वह चेतना कभी नष्ट नहीं हो सकती।

सामाजिक कार्यकर्ता आरोग्य शेखर ने कहा कि जिस तरह माउंट आबू में सीमेंट का बहिष्कार है, हमें भी ऐसा करना चाहिए। छात्र आर्य कटारा ने कविता पाठ की,न बचाया अरावली को तो रोएगा मानव जीवन,छात्रा दिव्या सुरैया ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर
शुक्रवार, 12 दिसंबर, 2025

**इंटरनेशनल माउंटेन डे पर संगोष्ठी** • महाराणा प्रताप पहाड़ी पर चढ़ाई कर दिया संरक्षण का संदेश

# अरावली आदि तीर्थ, जीवन रेखा और धरोहर, शौर्य धाम की तरह स्थापित हो मेवाड़ : त्रिवेदी

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

अरावली सिर्फ आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि प्राणी मात्र की जीवन रेखा है। इसका संरक्षण करना हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है। इसी चेतना के साथ गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस पर सीटीएई सभागार में शान्तिपीठ संस्थान व एमपीयूएटी की ओर से संगोष्ठी आयोजित हुई।

कार्यक्रम से पहले विद्यार्थियों व विशेषज्ञों ने महाराणा प्रताप पहाड़ी की चोटी तक चढ़ाई कर अरावली बचाने का संदेश दिया। सुविवि के पर्यावरण विभाग के छात्र भी इस पर्वत यात्रा में शामिल रहे। मुख्य अतिथि पेसिफिक यूनिवर्सिटी के


संगोष्ठी में मौजूद वक्ता।

अध्यक्ष डॉ. बीपी शर्मा ने कहा कि 60–70% पानी हमें पहाड़ों से मिलता है।

ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने और विलायती बबूल के प्रसार को उन्होंने सबसे बड़ा पर्यावरण संकट बताया। बोले-'दशकों से वृक्ष कटते गए, जैव-विविधता टूटती गई। अब समय है सैटेलाइट और सेंसर तकनीक से पर्वतों की निगरानी का।' मेवाड़ को 'शौर्य धाम' के रूप में यूनेस्को में दर्ज किया जाए: शान्तिपीठ संस्थान के अनंत गणेश ने अरावली व जैव-विविधता संरक्षण को युद्धस्तर पर अकाउंटेबिलिटी के साथ लागू करने की बात कही। प्रस्ताव रखा कि मेवाड़ को 'शौर्य धाम' के रूप में यूनेस्को में दर्ज कराया जाए, जिससे प्राकृतिक धरोहर के नए आयाम स्थापित होंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए एमपीयूएटी के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि बदलती जलवायु का मूल कारण पर्यावरण का लगातार हो रहा क्षरण है। आने वाली पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए जन-जागरूकता और जवाबदेही जरूरी है। समिधा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. चन्द्रगुप्त सिंह चौहान ने कहा कि पहाड़ दैवी संपदा हैं। इनके नामकरण से स्थानीय लोगों का भावनात्मक जुड़ाव बढ़ेगा और संरक्षण के प्रयास प्रबल होंगे।

उदयपुर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 12 दिसंबर 2025
विश्वसनीयता के
dainiknavajyoti.com

# अरावली हमारा आदि तीर्थ, इसके संवर्धन एवं संरक्षण की सब की प्राथमिक जिम्मेदारी

**उदयपुर।** अरावली हमारा आदि तीर्थ है जहां लौकिक और पारलौकिक कल्याण के लिए आस्था मात्र जुड़ी हुई नहीं है अपितु यह प्राणी मात्र की जीवन रेखा है। इसके संवर्धन एवं संरक्षण की हमारी सब की प्राथमिक जिम्मेदारी है। देश की कार्य पालिका हो या न्याय पालिका,सभी उच्च संस्थाओं को इसकी हिफाजत पर गंभीर विचार करना चाहिए। अरावली प्राणवान है। इतिहास गवाह है कि इसकी जीवंतता ने हमारी अस्मिता और गरिमा को अक्षुण्ण रखा है। आज समाज अरावली संरक्षण के लिए उत्तरदाई है। आवश्यकता है कि युवा वर्ग आगे आए और प्राचीन धरोहर को सुरक्षित करते हुए स्वयं को भावी संकटों से मुक्त रखे।य

ह विचार गुरूवार को वक्ताओं ने अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस पर सी टी ए ई के सभागार में शान्तिपीठ संस्थान एवं महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के साझे में आयोजित



संगोष्ठी में व्यक्त किए। संगोष्ठी के पूर्व प्रतिभागियों ने विश्व विद्यालय के छात्र छात्राओं के साथ पास ही स्थित महाराणा प्रताप पहाड़ी की चोटी तक चढ़ाई की जिसमें सुविवि पर्यावरण विभाग के छात्र भी सम्मिलित थे।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि पेसिफिक विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डॉ. बी पी शर्मा ने कहा कि पिछली कई दशाब्दियों से वृक्ष कटते गये और विलायती बबूल को पनपाया गया जिसके दुष्परिणाम हम आज भुगत रहे हैं और जैव विविधता संकट ग्रस्त हो चुकी है। अब हम पर्वतों को बचाने के लिए सैटेलाइट और सेंसर सिग्नल का इस्तेमाल कर सकते हैं। उन्होंने प्रस्तावित किया कि मेवाड़ को शौर्य धाम के रुप में यूनेस्को में दर्ज कराया जाना चाहिए।

अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ उमाशंकर शर्मा ने अति वृष्टि और अनावृष्टि का मूल कारण पर्यावरण विघटन बताते हुए कहा कि आने वाली पीढ़ियां सुरक्षित रहें इसके लिए जन जागरुकता और जवाबदेही अभियान की आवश्यकता है।



समिधा संस्थान के अध्यक्ष एवं समाज सेवी डॉ. चन्द्रगुप्त सिंह चौहान ने कहा कि पहाड़ियां दैवी संपदा है, इसलिए इनका नामकरण किया जाना चाहिए जिससे स्थानीय लोगों का जुड़ाव होगा और वे इनके संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध भी होंगे।

सी टी ए ई के डीन डॉ. सुनील जोशी ने मई- जून महीनों में पहाड़ों में लगने वाली आग के कारणों पर शोध की आवश्यकता बताई,इसके कारणों में आशंका व्यक्त की। पूर्व आई ए एस दिनेश कोठारी ने कहा कि कुंभलगढ़ में अनाब शनाब होटलों से प्रकृति के साथ खिलवाड़ हुआ है, हमें इससे,सबक ले कर प्रकृति के व्यवसायीकरण पर नियंत्रण करना चाहिए।

अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा ने युवाओं को आह्वान किया कि वे अरावली संरक्षण में अहम भूमिका निभाने आगे आएं। सुविवि पर्यावरण विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ डी एस राठौड़,सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता जी पी सोनी,लक्ष्मण पुरी गोस्वामी,सामाजिक कार्यकर्ता आरोग्य शेखर ने भी विचार व्यक्त किए।

पधारो म्हारे देस... हेरिटेज वॉक

# विश्व पर्यटन दिवस : पर रंगारंग प्रस्तुतियां

**उदयपुर** | विश्व पर्यटन दिवस पर शुक्रवार को पर्यटन विभाग की ओर से हेरिटेज वॉक, पर्यटन स्थलों पर लोक कलाकारों की प्रस्तुति और पर्यटकों का स्वागत किया गया। उपनिदेशक पर्यटन शिखा सक्सेना ने बताया कि शहर में सुबह 7 से 9 बजे ओल्ड सिटी में हेरिटेज वॉक में देसी-विदेशी पर्यटकों ने हिस्सा लिया। गाइड एसोसिएशन एवं पर्यटन व्यवसायियों के अलावा आम जन भी मौजूद रहे।

वॉक जगदीश चौक से लाल घाट, गणगौर घाट, दाई जी पुलिया होते हुए अंबराई घाट पर समाप्त हुई। इसमें शहर की समृद्ध हेरिटेज के बारे में विस्तार से बताया गया। पीस थीम से पर्यटक काफी आकर्षित हुए और उत्साह के साथ वॉक में शामिल होते चले गए। पर्यटकों को देसी व्यंजन जैसे रबड़ी कचौड़ी इत्यादि का स्वाद चखाया। वॉक का संचालन चिन्मय दीक्षित ने किया। निराश्रित राजकीय बालगृह के 23 बच्चों को दोपहर में विभिन्न पर्यटन स्थलों का निशुल्क भ्रमण कराया। बच्चों के लिए गुलाब बाग में टॉय ट्रेन, फिश एक्वेरियम, बर्ड पार्क, सहेलियों की बाड़ी में भ्रमण कराया। संग्रहालयों में निशुल्क रहा प्रवेश,



कार्यक्रम में शामिल शहरवासी।

पौधरोपण भी किया। सहेलियों की बाड़ी, जगदीश चौक, आहड़ संग्रहालय में सुबह 9 से 12 बजे तक पर्यटकों का स्वागत पारंपरिक तरीके से विभिन्न गाइड एसोसिएशन के साथ मिलकर किया गया। लोक कलाकारों ने कच्छी घोड़ी, कठपुतली का प्रदर्शन किया। जगदीश चौक, राजकीय संग्रहालय आहाड़ में पर्यटकों का प्रवेश निशुल्क रखा, लगभग 150 से 200 पर्यटकों ने संग्रहालय का अवलोकन किया। इसके बाद शाम 4.30 बजे राज्य होटल प्रबंधन संस्थान में पौधरोपण किया। चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इसके अलावा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय किटोड़ा ग्राम पंचायत काया, उदयपुर में भी चित्रकला प्रतियोगिता रखी गई। विजेताओं को विभाग की ओर से पुरस्कृत किया गया।

City

कला को सहेजने की कवायद

# 20 साल बाद बा वर्कशॉप, एक पे

**उदयपुर**| पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की ओर से बागोर की हवेली में करीब 20 साल बाद हो रही लिथोग्राफी वर्कशॉप में युवा कलाकार इस लुप्त होती पीढ़ी को सीख रहे हैं।

6 से 7 दिन में तैयार होने वाली लिथोग्राफी पेंटिंग की रोचक प्रोसेस को देखने शहर के कलाप्रेमी भी पहुंच रहे हैं। यहां सुबह से शाम तक पत्थरों पर सालों पुरानी तकनीक से पेंटिंग बनाई जा रही है। अभी यहां शहर के 5 कॉलेज के 20 स्टूडेंट्स हिस्सा ले रहे हैं। इस कार्यशाला के लिए बतौर एक्सपर्ट अहमदाबाद से जानी यश राजेश कुमार व बड़ौदा से उत्पल प्रजापति आए हैं। यह 30 सितंबर तक चलेगी।



# प्रताप गौरव केंद्र : चित्रक विद्यार्थियों ने उकेरा मेवा

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शनिवार, 28 सितंबर 2024

# झीलों की नगरी बनेगी विश्व पर्यटन का हब




**ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर।** चित्तौड़ सांसद सीपी जोशी ने कहा कि झीलों की नगरी आगामी दिनों में विश्व पर्यटन का हब बनेगी। शीघ्र ही अन्तरराष्ट्रीय एयरपोर्ट का शुभारंभ होगा जिससे देश एवं विदेशी पर्यटन में लाभ होगा। जोशी शुक्रवार को पर्यटन दिवस पर राजस्थान विद्यापीठ के संघटक डिपार्टमेंट ऑफ ट्रेवल, ट्यूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेंट के तत्वावधान में प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे। सांसद जोशी ने कहा कि भारत का गौरवशाली इतिहास रहा है जिसको आने वाली पीढ़ी में रूपांतरित करने की जरूरत है। कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा कि भारत की वैश्विक संस्कृति व धरोहर सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। विशिष्ठ अतिथि बीएन संस्थान के प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह रूपाखेड़ी, रामी रॉयल के संस्थापक अशोक जैन, महाराणा प्रताप स्मारक समिति के उपाध्यक्ष युद्धवीर सिंह, प्रो. बीएस राठौड़ थे। अतिथियों का स्वागत समन्वयक डॉ. मधु मूर्डिया ने किया। समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

**पर्यटन विश्व शान्ति के लक्ष्यों को अर्जित करने का जरिया :** विश्व पर्यटन दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित संवाद में विचार व्यक्त करते हुए दर्शन शास्त्र के वरिष्ठ प्रो एस आर व्यास ने कहा कि पर्यटन विविधता में एकता के दर्शनों का सुगम साधन है।शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि पर्यटन विश्व शान्ति के लक्ष्यों को अर्जित करने में बहुत बड़ा जरिया बन सकता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी सुमति लाल बोहरा ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ इन्द्र जोशी ने आभार व्यक्त किया। इधर लोकजन सेवा संस्थान के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में प्रोफेसर विमल शर्मा, विक्रमदेव पालीवाल आदि ने विचार व्यक्त किए।

पधारो म्हारे देस... हेरिटेज वॉक में शामिल हुए पर्यटक, लोककला और संस्कृति को जाना

# विश्व पर्यटन दिवस : सैलानियों का स्वागत, पर्यटन स्थलों पर रंगारंग प्रस्तुतियां और समृद्ध हेरिटेज के बारे में बताया

**उदयपुर** | विश्व पर्यटन दिवस पर शुक्रवार को पर्यटन विभाग की ओर से हेरिटेज वॉक, पर्यटन स्थलों पर लोक कलाकारों की प्रस्तुति और पर्यटकों का स्वागत किया गया। उपनिदेशक पर्यटन शिखा सक्सेना ने बताया कि शहर में सुबह 7 से 9 बजे ओल्ड सिटी में हेरिटेज वॉक में देसी-विदेशी पर्यटकों ने हिस्सा लिया। गाइड एसोसिएशन एवं पर्यटन व्यवसायियों के अलावा आम जन भी मौजूद रहे।

वॉक जगदीश चौक से लाल घाट, गणगौर घाट, दाई जी पुलिया होते हुए अंबराई घाट पर समाप्त हुई। इसमें शहर की समृद्ध हेरिटेज के बारे में विस्तार से बताया गया। पीस थीम से पर्यटक काफी आकर्षित हुए और उत्साह के साथ वॉक में शामिल होते चले गए। पर्यटकों को देसी व्यंजन जैसे रबड़ी कचौड़ी इत्यादि का स्वाद चखाया। वॉक का संचालन चिन्मय दीक्षित ने किया। निराश्रित राजकीय बालगृह के 23 बच्चों को दोपहर में विभिन्न पर्यटन स्थलों का निशुल्क भ्रमण कराया। बच्चों के लिए गुलाब बाग में टॉय ट्रेन, फिश एक्वेरियम, बर्ड पार्क, सहेलियों की बाड़ी में भ्रमण कराया। संग्रहालयों में निशुल्क रहा प्रवेश,



कार्यक्रम में शामिल शहरवासी।

पौधरोपण भी किया। सहेलियों की बाड़ी, जगदीश चौक, आहड़ संग्रहालय में सुबह 9 से 12 बजे तक पर्यटकों का स्वागत पारंपरिक तरीके से विभिन्न गाइड एसोसिएशन के साथ मिलकर किया गया। लोक कलाकारों ने कच्छी घोड़ी, कठपुतली का प्रदर्शन किया। जगदीश चौक, राजकीय संग्रहालय आहाड़ में पर्यटकों का प्रवेश निशुल्क रखा, लगभग 150 से 200 पर्यटकों ने संग्रहालय का अवलोकन किया। इसके बाद शाम 4.30 बजे राज्य होटल प्रबंधन संस्थान में पौधरोपण किया। चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इसके अलावा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय किटोड़ा ग्राम पंचायत काया, उदयपुर में भी चित्रकला प्रतियोगिता रखी गई। विजेताओं को विभाग की ओर से पुरस्कृत किया गया।

## सिटी पैलेस में महाराणा जगत सिंह द्वितीय की जयंती भी मनाई

महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउंडेशन की ओर से सिटी पैलेस म्यूजियम में कला के माध्यम से पर्यटन और शांति की थीम को प्रस्तुत किया गया। फाउण्डेशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. मयंक गुप्ता ने बताया कि पर्यटकों के लिए सिटी पैलेस संग्रहालय का रेखाचित्र डिस्प्ले किया गया। इसमें आगंतुकों से रंग भरवाकर आकर्षक बनाया गया। इस आयोजन के साथ ही उदयपुर विरासत के निर्माताओं में महाराणा जगतसिंह द्वितीय की जयंती भी मनाई गई, उनकी 315वीं जयंती पर सिटी पैलेस म्यूजियम स्थित राय आंगन में मंत्रोच्चारण के साथ उनके चित्र पर माल्यार्पण व पूंजा-अर्चना कर दीप प्रज्वलित किया गया। होटल एसोसिएशन ने पुडुचेरी प्रशासन से की चर्चा, पर्यटन दिवस समारोह में शिरकत

बीसीआई संस्थापक मुकेश माधवानी ने बताया कि विश्व पर्यटन दिवस के मौके पर पुडुचेरी में होटल एसोसिएशन उदयपुर के उपाध्यक्ष, बीसीआई टूरिज्म चार्टर अध्यक्ष यशवर्धन राणावत ने कार्यक्रम में विशेष अतिथि के तौर पर शिरकत की एवं पर्यटन


सिटी पैलेस में रेखाचित्र में रंग भरती पर्यटक।

पर भेंट व चर्चा की। राणावत ने होटल एसोसिएशन पुडुचेरी व रेस्टोरेंट एसोसिएशन से बात व चर्चा की और उन्हें उदयपुर आने का न्योता दिया। उधर, शान्तिपीठ संस्थान में कार्यक्रम हुआ। दर्शन शास्त्र के वरिष्ठ प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि पर्यटन व्यक्ति और विश्व समाजों खुशहाल जीवन जीने के लिए नवाचारों की खोज करता है। इसलिए शास्त्रों में चरैवेती चरैवेती का आह्वान किया गया है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि पर्यटन विश्व शान्ति में बहुत बड़ा जरिया बन सकता है। पर्यटन केवल उद्योग तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं विश्व मैत्री की समझ विकसित करने महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

## विद्यापीठ में सेमिनार संपन्न




राजस्थान विद्यापीठ के संघटक डिपार्टमेंट ऑफ ट्रेवल, टूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेंट, केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय व रामी रॉयल के साझे में प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में सेमिनार हुई। चित्तौड़ सांसद सी.पी. जोशी मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि भारत का गौरवशाली इतिहास रहा है जिसको आने वाली पीढ़ी में रूपांतरित करने की जरूरत है।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा कि पर्यटन से देश में रोजगार के अवसर एवं जीडीपी में योगदान मिलता है। पर्यटन के विकास में भारत सरकार के विभिन्न आयाम कार्यरत है, जिसमें राष्ट्रीय होटल प्रबंधन, भारतीय पर्यटन विकास आदि प्रमुख है। विशिष्ट अतिथि बीएन संस्थान के प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह रूपाखेड़ी, रामी रॉयल के संस्थापक अशोक जैन, महाराणा प्रताप स्मारक समिति के उपाध्यक्ष युद्धवीर सिंह, प्रो. बीएस राठौड़ ने भी विचार रखे।




## झीलों की नगरी बनेगी विश्व पर्यटन का हब



जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 28 सितंबर, 2024

# पर्यटन दिवस मनाया, लोक कलाकारों ने दी प्रस्तुतियां, विश्व शांति का संदेश

महानगर संवाददाता

उदयपुर। विश्व पर्यटन दिवस पर शुक्रवार को पर्यटन विभाग के तत्वावधान में आयोजन हुए। इसमें हैरिटेज वॉक, लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां आकर्षण रहीं।

पर्यटन उपनिदेशक पर्यटन शिखा सक्सेना ने बताया इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से टूरिज्म एंड पीस थीम रखी गई। सुबह 7 से 9 बजे ओल्ड सिटी एरिया में हैरिटेज वॉक का आयोजन हुआ, जिसमें देशी, विदेशी पर्यटकों ने हिस्सा लिया। हैरिटेज वॉक जगदीश चौक से शुरू होकर लालघाट, गणगौर घाट, दाईजी पुलिया होते हुए अमराई घाट पर समाप्त हुई। इसमें शहर की समृद्ध हैरिटेज के बारे में विस्तार से बताया गया। पीस थीम से पर्यटक खूब आकर्षित हुए और उत्साह के साथ वॉक में शामिल होते चले गए। इसके अतिरिक्त पर्यटकों को देसी व्यंजन रबड़ी, कचौड़ी इत्यादि का स्वाद चखाया गया। हैरिटेज वॉक का संचालन चिन्मय दीक्षित ने किया। सहेलियों की बाड़ी, जगदीश चौक, आहड़ संग्रहालय में प्रातः 9 से 12 बजे तक देशी, विदेशी पर्यटकों का पारंपरिक तरीके से विभिन्न गाइड एसोसिएशन के साथ स्वागत किया गया। विभाग द्वारा आमंत्रित लोक कलाकारों ने कच्छी घोड़ी नृत्य, कठपुतली का प्रदर्शन किया। जगदीश चौक एवं राजकीय संग्रहालय आहाड़ में पर्यटकों का प्रवेश निशुल्क रहा, जिसमें लगभग 150 से 200 पर्यटकों ने संग्रहालय का अवलोकन किया। उपनिदेशक शिखा सक्सेना ने बताया शाम 4.30 बजे राज्य होटल प्रबंधन संस्थान में पौधरोपण हुआ और चित्रकला प्रतियोगिता भी। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय किटोड़ा काया में भी चित्रकला प्रतियोगिता हुई, जिसके विजेताओं को विभाग ने पुरस्कृत किया। इधर, निराश्रित राजकीय बालगृह के 23 बच्चों को दोपहर में विभिन्न पर्यटन स्थलों गुलाबबाग में टॉय ट्रेन, पिश एक्वेरियम, बर्ड पार्क, सहेलियों की बाड़ी का निशुल्क भ्रमण कराया।

**शान्तिपीठ संस्थान में संवाद** : पर्यटन दिवस पर शांतिपीठ में संवाद हुआ। इसमें दर्शन शास्त्र के वरिष्ठ प्रो एसआर व्यास ने कहा पर्यटन व्यक्ति, विश्व समाजों को हमेशा नित नूतन बनाए रखता है और खुशहाल जीवन जीने के लिए नवाचारों की खोज करता है। शान्तिपीठ संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा पर्यटन विश्व शान्ति के लक्ष्यों को अर्जित करने में बहुत बड़ा जरिया बन सकता है। बशर्ते हम इसे मूल्य अनुपूरक दिशा दे पाएं। पर्यटन केवल उद्योग तक सीमित नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं विश्व मैत्री की समझ विकसित करने महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। आवश्यकता है भारतीय तीर्थाटन की समृद्ध परम्परा को पुनर्स्थापित करने की, जिससे विरासत एवं पर्यावरण को भी अपेक्षित संरक्षण प्राप्त हो सकेगा। उन्होंने एनलाईटन्ड टूरिज्म को रेखांकित करते हुए कहा उदयपुर की विरासत में वह सब कुछ है, जिससे यह दुनिया में विश्व शान्तिनगर का दर्जा हासिल कर सकता है। पूर्व आईएएस सुमतिलाल बोहरा ने आशा जताई कि जिस देश में अमन चैन है, वहां पर्यटन खूब फलता फूलता है। भारत शान्तिप्रिय देश होने के कारण बहुत ही पसंदीदा क्षेत्र है। यहां की भौगोलिक, सांस्कृतिक, भाषाई एवं खानपान की विविधता के कारण यह पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। डॉ इन्द्र जोशी ने आभार जताया।

## झीलों की नगरी बनेगी विश्व पर्यटन का हब : सीपी जोशी

झीलों की नगरी आगामी दिनों में विश्व पर्यटन का हब बनेगी। शीघ्र ही अन्तरराष्ट्रीय एयरपोर्ट का शुभारंभ होगा, जिससे देश, विदेशी पर्यटन में लाभ होगा। विश्व पर्यटन में सांस्कृति, आध्यात्मिक धरोहर का मेवाड़ महत्वपूर्ण केन्द्र है। इससे संबंधित विरासत के घटकों की सुरक्षा करना आम समाज की जिम्मेदारी है। यह विचार शुक्रवार को अन्तरराष्ट्रीय पर्यटन दिवस पर राजस्थान विद्यापीठ के डिपार्टमेंट ऑफ ट्रेवलर ट्यूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेंट, मिनिस्ट्री ऑफ ट्यूरिज्म भारत सरकार, रामी रॉयल के तत्वावधान में प्रतापनगर आईटी सभागार में हुए समारोह में चित्तौड़ सांसद सीपी जोशी ने व्यक्त किए। जोशी ने कहा भारत का गौरवशाली इतिहास रहा है जिसको आने वाली पीढ़ी में रूपांतरित करने की जरूरत है। देश में विलेज ट्यूरिज्म बढ़ रहा है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर बढ़े हैं। इस दिशा में सरकार अपना काम कर रही है। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा भारतीय संस्कृति बेजोड़, जीवंत है। भारत की वैचिक संस्कृति व धरोहर सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। पर्यटन से देश में रोजगार के अवसर एवं जीडीपी में पर्याप्त योगदान मिलता है। पर्यटन के विकास में भारत सरकार के विभिन्न आयाम कार्यरत है, जिसमें राष्ट्रीय होटल प्रबंधन, भारतीय पर्यटन विकास आदि प्रमुख हैं। भारतीय पर्यटन में विभिन्न संस्कृतियां परिलक्षित होती हैं जो विश्व में अपने आप में एक अनूठी स्मृति हैं। विशिष्ट अतिथि बीएन संस्थान के प्रबंध निदेशक मोहब्बतसिंह रूपावेड़ी, रामी रॉयल के संस्थापक अशोक जैन, महाराणा प्रताप स्मारक समिति उपाध्यक्ष युद्धवीरसिंह, प्रो बीएस राठौड़ ने भी विचार व्यक्त किए। प्रारंभ में समन्वयक डॉ मधु मुर्डिया ने अतिथियों का स्वागत कर समारोह की जानकारी दी। समारोह में अतिथियों ने महाविद्यालय की प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया। संचालन रिया गर्ग ने किया। आभार डॉ मुर्डिया ने जताया। इस दौरान एस्टकोर्ट गाईड कमलसिंह, डीएस झाला, दिग्विजयसिंह शक्तावत, झीलगढ़ के जीएम रूपम सरकार, रामी रॉयल के जीएम दिनेश उपाध्याय, लाभगढ़ रिसोर्ट के जीएम उज्ज्वल मेवारिया, रजिस्ट्रार डॉ तरूण श्रीमाली, परीक्षा नियंत्रक डॉ पारस जैन, प्रो प्रेमसिंह रावलोत, डॉ सुनिता मुर्डिया, डॉ शिल्पा कंठालिया आदि उपस्थित थे।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 20 अप्रेल, 2024

# पुरा सम्पदाओं के संरक्षण के लिए विरासत में मिली प्रताप की चेतना पुनर्जागृत करें : अनंत गणेश

महानगर संवाददाता

**उदयपुर।** एकलिंगजी-नागदा नगरी की सुरक्षा हेतु निर्मित चितिकोट (सुरक्षा दीवार) संरक्षण के अभाव में नष्ट होने के कगार पर है। एकलिंगजी मंदिर भले ही मेवाड़ के राजा गुहिल वंशज बप्पारावल के समय निर्मित हुआ, किन्तु सुरक्षा दीवारें-चितिकोट अति प्राचीन संभवतः राजा चित्रांगद मौर्य के समय बनीं जो अतीत के इतिहास को बयां करती हैं।



विश्व विरासत दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के पर्यावरण एवं दिव्य विरासत पुनरोत्थान अभियान के तहत हुए अध्ययन में यह बात उभरी। ग्लोबल हिस्ट्री फार्म के संस्थापक अध्यक्ष एवं तक्षशीला विद्यापीठ के निदेशक डॉ. जीएल मेनारिया ने कहा बप्पारावल ने उत्तर भारत में सर्वप्रथम जलप्रबंधन हेतु एवं एकलिंगजी की सुरक्षा हेतु झीलों का निर्माण कराया, जिसमें मंदिर की पूर्व दिशा में भौजेला तालाब व घासा ग्राम में तालाब बनवाये जो अति प्राचीन सरस्वती नदी की लुप्त शाखा त्रिकुट गंगा की त्रिवेणी पर वर्तमान एकलिंगजी बनवाया। इसकी सुरक्षा हेतु पर्वतों पर चितिकोट बनवाई जो सुदृढ़ थी। नष्ट होती दिव्य विरासत पर चिंता प्रकट करते हुए शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा महाराणा प्रताप ने क्षात्र धर्म का निर्वहन करते हुए मेवाड़ को अजेय बना दिया। आज आवश्यकता है हमें विरासत में मिली प्रताप की चेतना को पुनर्जागृत करें तभी हम विलुप्ति के कगार पर पहुंची मेवाड़ की दिव्य विरासत को बचा पायेंगे।

उन्होंने कहा हमारी विरासत प्रकृति अनुकूलन का संदेश देती है। शब्द शाश्वत है। इसे मूर्त रूप देने का करिश्मा हमारी विरासतों ने किया है किन्तु अविवेकशील विकास की दौड़ में जीवन अमर्यादित हो चला, जिससे मूल्यों का भयानक पतन हुआ और परिणामस्वरूप मानव सहित सारा जीव, जगत अभूतपूर्व संकट में खड़ा है। अध्ययन में स्पष्ट हुआ एकलिंगजी मंदिर के पास ही राजा भर्तहरी की गुफ है जो विंध्यवासिनी मंदिर के सम्मुख है। राजा विक्रमादित्य भर्तहरी के छोटे भाई थे। पिता राजा गर्धव सेन ने भर्तहरी को उत्तराधिकारी बनाया किन्तु उन्होंने अपने भाई को सिंहासन सौंपकर संन्यास ले लिया। यह स्थल ईसापूर्व प्रथम शताब्दी से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार विरासत से जुड़े अनेक छोटे-बड़े मंदिर और कलात्मक पुरास्थल अतिक्रमण के शिकार हो रहे हैं। बीएन विवि फार्मेसी विभागाध्यक्ष डॉ. कमलसिंह राठौड़ ने कहा हमें बिना विलम्ब किये सक्रिय जनभागीदारी से मेवाड़ की विरासतों को सुरक्षित करना होगा। विरासत संरक्षण समिति देलवाड़ा' के बहादुरसिंह चुण्डावत ने कहा प्रकृति और विरासत को बचाये बगैर हम सुरक्षित नहीं हो सकते। हमें इसे व्यापक अभियान चलाना होगा। अंतरराष्ट्रीय कुश्ती कोच कैलाश पालीवाल, एडवोकेट भरत कुमावत, बाबूलाल गमेती आदि ने भी अध्ययन के बाद संवाद में भागीदारी की।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार, 13 दिसम्बर 2024

# हमारे सारे पर्वत पूजनीय



उदयपुर. विश्व पर्वत दिवस पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में टीम चीरवा स्थित राठासेन माता मंदिर पहुंची। अवलोकन, अध्ययन एवं दर्शनों के बाद मंदिर परिसर में संवाद कार्यक्रम हुआ। सुविवि के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि गंगा, यमुना, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र आदि भारत की सभी नदियों का जन्म पर्वतों से होता है। पर्वतों को अचलतीर्थ कहा जाता है। इनसे निकलने वाली नदियों के संगम प्रयागतीर्थ कहलाते हैं। हमारे सारे पर्वत पूजनीय हैं। शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जगद्गुरू शंकराचार्य की परम्परा में वीतरागी परिव्राजकों के नामकरण भी पर्वत, गिरि आदि होते हैं, जो इनका सनातन महत्व प्रतिपादित करते हैं। इस दौरान डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़, दिनेश कोठारी, डॉ. कमल सिंह राठौड़, महेन्द्रपाल सिंह चौहान, महेश प्रताप सिंह गुंजोल, निर्भय सिंह, लाल सिंह झाला, शंकर सिंह राणावत ने भी विचार रखे।

प्रातःकाल
उदयपुर, शुक्रवार 13 दिसम्बर, 2024

## पर्वत दिवस पर संवाद

# 'हमारे सारे पर्वत पूजनीय'



उदयपुर (वि.)। विश्व पर्वत दिवस पर बुधवार को शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में एक टीम चीरवा स्थित राठासेन माता मंदिर पहुंची जहां अवलोकन अध्ययन एवं दर्शनों के बाद मंदिर परिसर में आयोजित संवाद में सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि गंगा, यमुना, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र आदि भारत की सभी नदियों का जन्म पर्वतों से होता है। हमारी माता पृथ्वी पर्वतरूपी स्तनों वाली है। इन पर्वतों के उद्गम वाली नदियों के जल रूपी दूध से ही हमारे जीवन, सभ्यता और संस्कृति का पोषण हुआ है। उन्होंने कहा पर्वतों को अचलतीर्थ कहा जाता है और इनसे निकलने वाली नदियों के संगम प्रयागतीर्थ कहलाते हैं। हमारे सारे पर्वत पूजनीय हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जगदुरू शंकराचार्य की परम्परा में वीतरागी परिव्राजकों के नामकरण भी पर्वत, गिरि आदि होते हैं जो इनका सनातन महत्व प्रतिपादित करते हैं। मो.सु.विश्वविद्यालय में पर्यावरण विभागध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि पर्यटन और विकास के नाम पर्वतों का खनन- दोहन और विनाश करते हुए हम स्वयं अपना और समूचे प्राणीजगत का सर्वनाश कर रहे है। हमें संरक्षण की दिशा में युवा पीढ़ी को जोड़ना होगा। संवाद में बोलते हुए देवस्थान विभाग के पूर्व आयुक्त एवं कलाविद् दिनेश कोठारी ने कहा प्रातःकालीन मंगलाचरण में हम सभी प्रमुख नदियों, पर्वतों, वनों आदि का स्मरण और स्तवन करते हैं। बी.एन. विश्वविद्यालय के डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने कहा कि अरण्य संस्कृति की प्रासंगिकता अक्षुण्ण है, हम इस दिव्य विरासत के आश्रय में ही स्वस्थ जीवन जी सकते है। संवाद में महेन्द्रपाल सिंह चौहान, महेश प्रताप सिंह गुंजोल, निर्भय सिंह झाला, लाल सिंह झाला, शंकर सिंह राणावत आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 13 दिसंबर 2024

# सभी वैदिक देवता विराट प्रकृति के ही विभिन्न स्वरूप

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। सनातन वैदिक संस्कृति में प्रकृति और मनुष्य के सह अस्तित्व का पोषण होता है। सभी वैदिक देवता विराट प्रकृति के ही विभिन्न स्वरूप हैं जिनकी हम उपासना करते आए हैं। माता भूमि पुत्रोहम्पृथिव्याः के संस्कार वाली सनातन संस्कृति में पर्वतों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह विचार सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने बुधवार को विश्व पर्वत दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित संवाद में व्यक्त किए। इस मौके पर एक टीम चीरवा स्थित राठासेन माता मंदिर पहुंची जहां दर्शनों के बाद संवाद हुआ। प्रो.शर्मा ने कहा कि हमारे सारे पर्वत पूजनीय हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हिमालय पर्वत के कारण ही उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश देवभूमि कहलाते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि भारत में संसार की प्राचीनतम पर्वतमाला अरावली और नवीनतम पर्वतमाला हिमालय की मौजूदगी है। सुविवि पर्यावरण विभागाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि पर्यटन और विकास के नाम पर्वतों का खनन- दोहन और विनाश करते हुए हम स्वयं अपना और समूचे प्राणीजगत का सर्वनाश कर रहे है। कलाविद् दिनेश कोठारी,बी.एन. विश्वविद्यालय के डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने चीरवा व आस-पास में पहाडियों की कटाई पर गम्भीर चिंता व्यक्त करते हुए स्थानीय लोगों को जिम्मेदारी पूर्वक आगे आने का आह्वान किया।

दैनिक भास्कर उदयपुर, शुक्रवार 13 दिसंबर, 2024

# सनातन वैदिक संस्कृति में है मनुष्य के अस्तित्व का पोषण

उदयपुर| विश्व पर्वत दिवस पर शांति पीठ संस्थान की ओर से संवाद का आयोजन हुआ। संवाद में वक्ताओं ने कहा कि सनातन वैदिक संस्कृति में प्रकृति और मनुष्य के सह अस्तित्व का पोषण होता है।

शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में एक टीम चीरवा स्थित राठासेन माता मंदिर पहुंची। यहां अवलोकन अध्ययन एवं दर्शनों के बाद मंदिर परिसर में आयोजित संवाद में बोलते हुए प्रो. नीरज शर्मा ने कहा गंगा, यमुना, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र आदि भारत की सभी नदियों का जन्म पर्वतों से होता है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जगद्गुरू शंकराचार्य की परम्परा में वीतरागी परिव्राजकों के नामकरण भी पर्वत, गिरि आदि होते हैं जो इनका सनातन महत्व प्रतिपादित करते हैं।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 13 दिसंबर, 2024

# हमारे सभी पर्वत पूजनीय हैं : प्रो शर्मा

महानगर संवाददाता



उदयपुर। सनातन वैदिक संस्कृति में प्रकृति और मनुष्य के सह अस्तित्व का पोषण होता है। सभी वैदिक देवता विराट प्रकृति के ही विभिन्न स्वरूप हैं, जिनकी हम उपासना करते आए हैं। सनातन संस्कृति में पर्वतों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यह विचार बुधवार को विश्व पर्वत दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में चीरवा स्थित राठासेन माता मंदिर के अवलोकन, अध्ययन एवं दर्शनों के बाद मंदिर में हुए संवाद में सुविवि के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा गंगा, यमुना, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र आदि भारत की सभी नदियों का जन्म पर्वतों से होता है। इन पर्वतों के उद्गम वाली नदियों के जल रूपी दूध से ही हमारे जीवन, सभ्यता और संस्कृति का पोषण हुआ है। पर्वतों को अचल तीर्थ कहा जाता है और इनसे निकलने वाली नदियों के संगम प्रयाग तीर्थ कहलाते हैं। हमारे सारे पर्वत पूजनीय हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा जगद्गुरू शंकराचार्य की परम्परा में वीतरागी परिव्राजकों के नामकरण भी पर्वत, गिरि आदि होते हैं जो इनका सनातन महत्व प्रतिपादित करते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने इन्द्र से अधिक आराध्य गोवर्धन को कहा तथा साथ ही स्वयं गिरिराजधरण के रूप में जन-जन के उपास्य बन गए। ब्रज मंडल में गोवर्धन परिक्रमा पर्वत में परमात्मा का दर्शन कराती है। उन्होंने कहा हिमालय पर्वत के कारण ही उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश देवभूमि कहलाते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं भारत में संसार की प्राचीनतम पर्वतमाला अरावली और नवीनतम पर्वतमाला हिमालय की मौजूदगी है। पर्वतों में ही औषधियाँ वनस्पतियाँ जंगल जलस्रोत और बहुमूल्य अपूरणीय संसाधन मौजूद होते हैं। यही शक्ति का संचय है। इस ईश्वर प्रदत्त संचित शक्ति का संरक्षण मनुष्य का प्राथमिक और सर्वोच्च कर्तव्य है। शिव और शक्ति की निरन्तरता भी रह सकती है जब हमारे पर्वत संरक्षित होंगे। सुविवि में पर्यावरण विभागाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्रसिंह राठौड़ ने कहा पर्यटन और विकास के नाम पर्वतों का खनन-दोहन और विनाश करते हुए हम स्वयं अपना और समूचे प्राणी जगत का सर्वनाश कर रहे हैं। हमें संरक्षण की दिशा में युवा पीढ़ी को जोड़ना होगा। देवस्थान विभाग के पूर्व आयुक्त एवं कलाविद् दिनेश कोठारी ने कहा प्रातःकालीन मंगलाचरण में हम सभी प्रमुख नदियों, पर्वतों, वनों आदि का स्मरण और स्तवन करते हैं।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, रविवार 09 जून, 2024

# ढीकली रोड स्थित पहाड़ी को गोद लेगा विद्यापीठ

**उदयपुर** | शांति पीठ संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि, सुविवि एवं भूपाल नोबल्स विवि के साझे में पर्यावरण जागरण सप्ताह का शनिवार को समापन हुआ। समापन समारोह में अतिथि शहर विधायक ताराचंद जैन ने कहा कि पिछले 75 वर्षों से पर्यावरण के छेड़खानी की जा रही है जिसका खामियाजा आज हम सभी को उठाना पड़ रहा है।

पर्यावरण के लिए मास्टर प्लान बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि आयड़ को पुराने स्वरूप में लाने का प्रयास किया जा



रहा है इसके लिए शहर के प्रबुद्ध नागरिक एवं पर्यावरणविदों के सुझाव भी आये है उसके आधार पर आगे कार्य किया जायेगा। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि पर्यावरण सरंक्षण की दिशा में पहल करते हुए संस्थान द्वारा ढीकली रोड स्थित आवला पहाड़ी को गोद लेगा। जिसमें संस्थान एवं आमजन के माध्यम से पौधारोपण किया जायेगा। प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत करते हुए शांति पीठ प्रमुख अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जनभागीदारी से ही पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है इसके लिए पिछले एक सप्ताह से शहर के राजनीति, धार्मिक, सामाजिक एवं विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों के साथ बैठकर मंथन किया जा रहा है जिसके माध्यम से बड़े स्तर पर इस दिशा में कार्य किया जा सके।

राष्ट्रदूत उदयपुर, 9 जून 2024

# 'विद्यापीठ ढीकली रोड स्थित आवला पहाड़ी को गोद लेगा'

उदयपुर, (कासं)। पिछले 75 वर्षों से पर्यावरण से छेडखानी की जा रही है जिसका खामियाजा आज हम सभी को उठाना पड रहा है। तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा। पर्यावरण नहीं बचेगा तो हमारा जीवन भी नहीं बचेगा। पर्यावरण के लिए मास्टर प्लान बनाने की जरूरत है। हमारी नाकामियों के साथ युद्ध स्तर पर पहाडो को काटा जा रहा है, इसके लिए आमजन को जागरूक होना होगा। उदयपुर शहर के आसपास 20 से अधिक पहाडिया है जिन्हे सामाजिक संस्थाओं को गोद देकर उसमें व्यापक



पर्यावरण जागरण सप्ताह के समापन समारोह का समापन हुआ।

- **शहर का पर्यावरण मास्टर प्लान बनाने की जरूरत : ताराचंद जैन**

रूप से पौधारोपण किया जा सकता है जिससे हमारे तापमान में भी कमी आयेगी।

उक्त विचार शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस पर शांति पीठ संस्थान, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि, मोहन लाल सुखाडिया विवि एवं भूपाल नोबल्स विवि के संयुक्त तत्वावधान में विद्यापीठ के प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में आयोजित पर्यावरण जागरण सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर नगर विधायक ताराचंद जैन ने बतौर मुख्य अतिथि कही। उन्होंने कहा कि आयड को पुराने स्वरूप में लाने का प्रयास किया जा रहा है इसके लिए शहर के प्रबुद्ध नागरिक एवं पर्यावरणविदो के सुझाव भी आये है उसके आधार पर आगे कार्य किया जायेगा। पूरे वर्षपर्यन्त पानी आयड नदी में बहे ऐसा प्रयास किया जा रहा है। उदयपुर शहर जैसा शहर पूरे विश्व में नहीं है। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि पर्यावरण सरंक्षण की दिशा में पहल करते हुए संस्थान द्वारा ढीकली रोड स्थित आवला पहाडी को गोद लेना जिसमें संस्थान एवं आमजन के माध्यम से पौधारोपण किया जायेगा। उन्होंने कहा कि हमारी आज कई सभ्यताएँ नष्ट हो गयी है जिसके लिए हम सभी जिम्मेदार है। जलवायु परिवर्तन के कारण आमजन की 5 वर्ष आयु कम हो गई है। विश्व के 100 प्रदुषित शहरों में 83 शहर हमारे भारत में ही है जिसे बदलना होगा।प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थापक अनंग गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जनभागीदारी से हीं पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है इसके लिए पिछले एक सप्ताह से शहर के राजनीति, धार्मिक, सामाजिक एवं विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों के साथ बैठकर मंथन किया जा रहा है । सुखाडिया विवि के डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड ने सात दिवसीय कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए दिनों हुए नवाचारों की जानकारी प्रस्तुत की। संचालन एडवोकेट भरत कुमावत ने किया।

### पर्यावरण जागरण सप्ताह का हुआ समापन: विद्यापीठ ढीकली रोड़ स्थित पहाड़ी को लेगा गोद

# शहर का पर्यावरण मास्टर प्लान बनाने की जरूरत: जैन



उदयपुर (कासं)। पिछले 75 वर्षों से पर्यावरण के छेड़खानी की जा रही है जिसका खामियाजा आज हम सभी को उठाना पड़ रहा हैं। तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा। पर्यावरण नहीं बचेगा तो हमारा जीवन भी नहीं बचेगा। पर्यावरण के लिए मास्टर प्लान बनाने की जरूरत है। हमारी नाकामियों के साथ युद्ध स्तर पर पहाड़ों को काटा जा रहा है, इसके लिए आमजन को जागरूक होना होगा। उदयपुर शहर के आसपास 20 से अधिक पहाड़िया है जिन्हे सामाजिक संस्थाओं को गोद देकर उसमें व्यापक रूप से पौधारोपण किया जा सकता है जिससे हमारे तापमान में भी कमी आयेगी।

उक्त विचार शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस पर शांति पीठ संस्थान, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि, मोहन लाल सुखाड़िया विवि एवं भूपाल नोबल्स विवि के संयुक्त तत्वावधान में विद्यापीठ के प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में आयोजित पर्यावरण जागरण सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर नगर विधायक ताराचंद जैन ने बतौर मुख्य अतिथि कही। उन्होंने कहा कि आयड़ को पुराने स्वरूप में लाने का प्रयास किया जा रहा है इसके लिए शहर के प्रबुद्ध नागरिक एवं पर्यावरणविदों के सुझाव भी आये है उसके आधार पर आगे कार्य किया जायेगा। पूरे वर्षपर्यन्त पानी आयड़ नदी में बहे ऐसा प्रयास किया जा रहा है। उदयपुर शहर जैसा शहर पूरे विश्व में नहीं है।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में पहल करते हुए संस्थान द्वारा ढीकली रोड़ स्थित आवला पहाड़ी को गोद लेना जिसमें संस्थान एवं आमजन के माध्यम से पौधारोपण किया जायेगा। उन्होंने कहा कि हमारी आज कई सभ्यताएं नष्ट हो गयी है जिसके लिए हम सभी जिम्मेदार है। जलवायु परिवर्तन के कारण आमजन की 05 वर्ष आयु कम हो गई है। विश्व के 100 प्रदुषित शहरों में 83 शहर हमारे भारत में ही है जिसे बदलना होगा।

प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थापक अनंग गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जनभागीदारी से ही पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है इसके लिए पिछले एक सप्ताह से शहर के राजनीति, धार्मिक, सामाजिक एवं विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों के साथ बैठकर मंथन किया जा रहा है जिसके माध्यम से बड़े स्तर पर इस दिशा में कार्य किया जा सके। सुखाड़िया विवि के डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़ ने सात दिवसीय कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए दिनों हुए नवाचारों की जानकारी प्रस्तुत की। संचालन एडवोकेट भरत कुमावत ने किया जबकि आभार एडवोकेट उमेश शर्मा ने जताया। इस अवसर पर. प्रो. बी कुमार, प्रो. एलएन दशौरा, प्रो. अनुजा वर्मा, डॉ. सोनिका जैन, डॉ. जयश्री, दलपत राज बातरा, डॉ. कमल सिंह राठौड़, राजकुमार चैधरी, संहित शहर के गणमान्य नागरिक एवं पर्यावरण प्रेमी स्कोलर्स उपस्थित थे।

## गुरु जी सन्त कुमार की वर्सी 12 को

उदयपुर (कासं)। वैकुण्ठ धाम के गुरुजी शैलेश सन्त कुमार ब्रिजवानी ने बताया कि सिंधी समाज की बाबा संत कुमार महाराज साहब की प्रथम पावन वर्सी श्रद्धा व प्रेम पूर्वक मनाई जाएगी। यह 12 जून बुधवार से 14 जून शुक्रवार तक कार्यक्रम होगा जो कि शक्ति नगर स्थित श्री बिलोचिस्तान भवन में होगा। 12 जून बुधवार को श्री बिलोचिस्तान भवन में स्वास्तिक पूजन से आसादीवार, शब्द कीर्तन व आरती तथा श्री पाठ साहिब प्रारंभ होगा। इसी प्रकार 13 जून गुरुवार को आसादीवार, शब्द कीर्तन, आरती और शाम 6:30 बजे आरती व रात्रि कीर्तन 9 बजे से भाई महेंद्र सिंह उदयपुर वाले एव भाई सन्नी मूलचंदानी नवसारी वालों द्वारा कीर्तन होगा व 14 जून शुक्रवार प्रातः 8 बजे से आसादीवार, शब्द कीर्तन, रागमाला के साथ श्री पाठ साहिब का भोग उपरांत आरती अरदास तथा लंगर साहिब के साथ कार्यक्रम पूर्ण होगा।

प्रातःकाल
उदयपुर, शुक्रवार 7 जून, 2024

# पर्यावरण एवं भूमि सुधार पर गोष्ठी का आयोजन



**उदयपुर (वि)।** अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर शांतिपीठ संस्थान, मोलासु विश्वविद्यालय, जे आर एन राजस्थान विद्यापीठ तथा बीएन विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में चलाए जा रहे पर्यावारण जागरण सप्ताह के तहत सुखाड़िया विश्वविद्यालय स्थित पर्यावरण विभाग में भूमि एवं पर्यावरण सुधार पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। अध्यक्षता शांतिपीठ संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने की। मुख्य अतिथि विज्ञान महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता प्रो अतुल त्यागी, मुख्य वक्ता गुजरात स्थित कच्छ विश्वविद्यालय की अर्थ एंड एनवायरमेंट डिपार्टमेंट की असिस्टेंट प्रो. डॉ सीमा शर्मा, विशिष्ट अतिथि सामाजिक एवं मानवीकी महाविद्यालय अधिष्ठाता प्रो हेमंत द्विवेदी, पर्यावरण विभागाध्यक्ष डॉ. देवेंद्र सिंह राठौड़ थे। गोष्ठी संयोजक अनुया वर्मा ने बताया कि पर्यावरण जागरण सप्ताह के तहत आयोजित गोष्ठी में सेव उदयपुर - सेव द अर्थ थीम पर भू एवं पर्यावरण वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों तथा उदयपुर शहर के जागरूक संस्थाओं के प्रतिनिधि नागरिकों ने व्यापक शोध परक विचार मंथन करते हुए उदयपुर शहर के भूमि एवं पर्यावरण सुधार पर व्यापक कार्य योजना बनाकर उदयपुर की पर्यावरण की समस्याओं के निदानात्मक उपायों पर कार्य करने का निर्णय लिया। विभागाध्यक्ष डॉ. डी एस राठौड़ ने कहा कि पर्यावरण विभाग द्वारा एयर कंडीशंस द्वारा उत्सर्जित सीएफसी गैस एवं कृषि में काम में आने वाले कीटनाशकों का निर्धारित मानदंडों से अधिक उपयोग किए जाने से मिट्टी की उर्वरकता पर पड़ने वाले प्रभावों का विस्तृत वर्णन किया। डॉ हेमंत द्विवेदी ने वर्तमान पर्यावरण दशाओं पर टिप्पणी करते हुए कहा कि आज मनुष्य भी नरभक्षी नर स्वरूप में दिखाई दे रहा है। दक्षिण एशिया में खाने में मिलावट के प्रति गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आर्थिक विकास की चाहत में मानवीयता ही विलुप्त हो चुकी है इसलिए पर्यावरण संरक्षण जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। विज्ञान महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता प्रो अतुल त्यागी ने भी विचार रखे। मुख्य वक्ता डॉ सीमा शर्मा ने कच्छ स्थित व्हाइट डेजर्ट के नाम से प्रसिद्ध बन्नी घास क्षेत्र के मरुस्थलीकरण पर पीपीटी प्रेजेंटेशन दिया। समाजसेवी डॉ जिनेंद्र शास्त्री, प्रो पीआर व्यास, बीएन विश्वविद्यालय की डॉ जय श्री सिंह व डॉ कमल सिंह राठौड़, राजकुमार मेनारिया आदि मौजूद थे।

जय राजस्थान दिनांक : 2 जून, 2024

# पर्यावरण जागरण सप्ताह का हुआ आ

# महाराणा प्रताप एवं प्रकृति एव के पूरक - अनंत गणेश त्रि

उदयपुर, 01 जुन (नसं)। प्राणी मात्र के लिए पर्यावरण संकट मानव जनित ही है, जिसके लिए हम सभी जिम्मेदार है, जिसे मानव को ही अपनी जागरूकता और निस्वार्थ प्रयासों से संकटमोचन का कार्य प्रकृति सौंदर्य की दिशा में करना होगा। पर्यावरण शुद्धिकरण एवं प्रदूषण को रोकने के लिए देश के विभिन्न वैज्ञानिक विभिन्न दिशा में प्रयासरत और क्रियाशील, लेकिन जब तक मानव स्वयं जागरूक और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नहीं होगा तब तक इसका उपचार संभव नहीं है।

मानव को वर्तमान संदर्भ में पौधारोपण और प्राकृतिक सौंदर्य की दिशा में संपूर्ण शहर या राज्य की चिंता न कर अपने आस पास के सीमित क्षेत्र को विकसित करने का संकल्प लेकर अपने क्षेत्र में पूर्ण मनोबल से प्रयासरत होकर मानव कल्याण की दिशा में पर्यावरण को शुद्ध परिष्कृत करने का संकल्प लेना आवश्यक है।

उक्त विचार शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस पर शांति पीठ संस्थान, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि, मोहन लाल सुखाड़िया विवि एवं भूपाल नोबल्स विवि के संयुक्त तत्वावधान में विद्यापीठ के प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में आयोजित पर्यावरण जागरण सप्ताह का शुभारंभ करते हुए राजस्थान सरकार के जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने बतौर मुख्य अतिथि कही।

खराड़ी ने कहा कि उद्योग आदि से होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए नवीन तकनीक को अपना कर मानव के निस्वार्थ समर्पण और अनुशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता बताई।

पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का भी संदर्भ देते हुए कहा कि विकट समस्या के समाधान में जिस प्रकार चीन के साथ युद्ध काल में देश ने एक समय का भोजन त्याग किया, इस प्रकार त्याग बलिदान शौर्य समर्पण की भूमि मेवाड़ को पर्यावरण की



# वैदिक जीवन द निवारण का एव

दिशा में भी संकल्पित कदम आगे बढ़ना होगा, तभी जाकर मानव कल्याण की दिशा सुनियोजित होगी

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि मानव सेवा और जीव सेवा जीवन का सर्वोत्तम सारगर्भित ध्येय है, जो वसुधैव कुटुंबकम की संकल्पना को सिद्ध करता है।

उन्होंने मंत्री खराड़ी की सादगी और सरलता को सकारात्मक ऊर्जा का परिचायक बताते हुए कहा कि उनके विचार, मन में उमंग उनके आदर्श, समाज में सेवा भाव के लिए प्रेरणा स्वरूप है उन्होंने पर्यावरण जागरूकता के लिए मानवीय गतिविधि का सक्रिय होना अत्यंत आवश्यक बताया तथा हरित क्रांति और हरा भरा राजस्थान की संकल्पना को पुनर्जीवित करने का उत्तरदायित्व समाज का है।

उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा आर्श ग्रन्थों वेद पुराणों में पर्यावरण सम्बंधित तथ्यों पर विस्तृत विवेचना करते हुए सभी को भारतीय ज्ञान का स्वरूप समझाया तथा कहा की आत्मा और परमात्मा के बीच जो चक्र हैं उनके अनेक तत्वों को परिलक्षित करना अनिवार्य है, जिस प्रकार अंधकार से प्रकाश की ओर एक से अनेक की संकल्पना पर प्रकाश डाला।

श्री पालीवाल ने सभी को अपने जोन में संगठन का विप्रजनों को संगठित करने के लिए निर्देशित किया है।

# स्वाति सिंह की ग



उदयपुर, 1 जून। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर द्वारा शिल्पग्राम में शनिवार को आयोजित गुलज़ार-ए-गज़ल कार्यक्रम के पहले दिन स्वाती सिंह एवं दल ने अपनी प्रस्तुति दी। इससे पहले अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर के निदेशक फुरकान खान ने बताया कि गुलज़ार-ए-गज़ल कार्यक्रम में शिल्पग्राम के मुक्ताकाशी रंगमंच पर देहरादून से पैशन क्लब ऑफ म्यूजिक की स्वाति सिंह एवं दल द्वारा गज़ इन प्रस्तुतियों एक अहसान, रहे हो, तुम आया, आज रंजिश ही सह अंत में दर्शकों दम मस्त कल को रोमांचित कलाकारों का कार्यक्रम में बिजलवान, ईलेक्ट्रिक गि गिटार पर जो

# शहर की 26 बस्ति लगाया नशा मुक्ति



उद विश्व त उपलक्ष के माध्य 26 कच शिविर आयोज परियोज ने बताया कि इन बस्तियों में कचरा बिनने वाले क समाज के लोग हैं जो की व्यसन से अधिक परियोजना के मा इनके जीवनस्तर सुधार, स्वा उन्नयन के लिए पिछले 2 वर्षों से कई गतिविधियों क है। इसी अभियान के अंतर्गत जोगी तालाब स्थित समाजसेवी डॉक्टर पीसी जैन ने नशा मुक्ति शिविर में के साथ बातचीत की और माउथ ओपनिंग टेस्ट के द्वा पुरुषों को चिन्हित किया और नशा छोड़ने के लिए व्यक्तियों ने नशा छोड़ने की सहमति जताई उन्हें निशु करवाई गई सिटीलीड प्रदीप चौबीसा ने बताया की इ 950 व्यक्तियों को नशे के दुष्परिणाम की जानकारी द को चिन्हित करके नशा छोड़ने के लिए प्रेरित किया

इस अभियान में प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर नरेंद्र शर्मा

उदयपुर एक्सप्रेस . उदयपुर, रविवार 2 मई, 2024

# पर्यावरण जागरण सप्ताह का हुआ आगाजः जल, जंगल, जमीन को बचाने का लिया संकल्प

## महाराणा प्रताप एवं प्रकृति एक दूसरे के पूरकः त्रिवेदी

## जनसहभागिता से ही टाला जा सकता है, पर्यावरण संकटः खराड़ी

## वैदिक जीवन दर्शन ही वैश्विक पर्यावरण संकट निवारण का एक मात्र उपायः प्रो. सारंगदेवोत




**उदयपुर (कासं)।** प्राणी मात्र के लिए पर्यावरण संकट मानव जनित ही है, जिसके लिए हम सभी जिम्मेदार हैं, जिसे मानव को ही अपनी जागरूकता और निस्वार्थ प्रयासों से संकटमोचन का कार्य प्रकृति सौंदर्य की दिशा में करना होगा। पर्यावरण शुद्धिकरण एवं प्रदूषण को रोकने के लिए देश के विभिन्न वैज्ञानिक विभिन्न दिशा में प्रयासरत और क्रियाशील, लेकिन जब तक मानव स्वयं जागरूक और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नहीं होगा तब तक इसका उपचार संभव नहीं है। मानव को वर्तमान संदर्भ में पौधारोपण और प्राकृतिक सौंदर्य की दिशा में संपूर्ण शहर या राज्य की चिंता न कर अपने आस पास के सीमित क्षेत्र को विकसित करने का संकल्प लेकर अपने क्षेत्र में पूर्ण मनोबल से प्रयासरत होकर मानव कल्याण की दिशा में पर्यावरण को शुद्ध परिष्कृत करने का संकल्प लेना आवश्यक है, उक्त विचार शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस पर शांति पीठ संस्थान, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि, मोहन लाल सुखाड़िया विवि एवं भूपाल नोबल्स विवि के संयुक्त तत्वाबधान में विद्यापीठ के प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में आयोजित पर्यावरण जागरण सप्ताह का शुभारंभ करते हुए राजस्थान सरकार के जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने बतौर मुख्य अतिथि कही।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि मानव सेवा और जीव सेवा जीवन का सर्वोत्तम सारगर्भित ध्येय है, जो वसुधैव कुटुंबकम की संकल्पना को सिद्ध करता है। उन्होंने मंत्री खराड़ी की सादगी और सरलता को सकारात्मक ऊर्जा का परिचायक बताते हुए कहा कि उनके विचार, मन में उमंग उनके आदर्श, समाज में सेवा भाव के लिए प्रेरणा स्वरूप है उन्होंने पर्यावरण जागरूकता के लिए मानवीय गतिविधि का सक्रिय होना अत्यंत आवश्यक बताया तथा हरित क्रांति और हरा भरा राजस्थान की संकल्पना को पुनर्जीवित करने का उत्तरदायित्व समाज का है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा आर्श ग्रन्थों वेद पुराणों में पर्यावरण सम्बंधित तथ्यों पर विस्तृत विवेचना करते हुए सभी को भारतीय ज्ञान का स्वरूप समझाया तथा कहा की आत्मा और परमात्मा के बीच जो चक्र हैं उनके अनेक तत्वों को परिलक्षित करना अनिवार्य है, जिस प्रकार अंधकार से प्रकाश की ओर एक से अनेक की संकल्पना पर प्रकाश डाला। उन्होंने वाटर हार्वेस्टिंग की चिंता की ओर दृष्टिगोचर करते हुए प्रेरित किया।

प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने जलवायु परिवर्तन को गंभीर वैश्विक समस्या बताते हुए कहा कि महाराणा प्रताप तथा अरावली की प्रकृति आपस में एक दूसरे के पूरक है तथा दोनों ने एक दूसरे की रक्षा की व आश्रय दिया। पर्यावरण समस्या के समाधान के लिए आने वाले समय में एक समग्र कार्य योजना बनाकर उदयपुर की प्रकृति, पर्यावरण एवं अरावली संरक्षण हेतु व्यापक जनसहभागिता से एक विशाल अभियान चलाया जायेगा।

पूर्व कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने मेवाड़ की पर्यावरण विरासत को बचाने तथा पीपल, आम, आंवला, तुलसी आदि के पौधों को अधिकाधिक लगाने पर जोर दिया। साथ ही स्थानीय वातावरण के विपरित प्रभाव डालने वाले कानोकोरपश, निलगिरी जैसे पौधों से परहेज करने का आग्रह किया।

सुखाड़िया विवि के पर्यावरण विभाग प्रमुख डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़ ने पर्यावरण संरक्षण के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझाते हुए व्यक्तिगत सामाजिक तथा प्रशासनिक त्रिस्तरीकरण पर विशेषज्ञतापूर्वक सुव्यवस्थित कार्य योजना बनाने पर जोर दिया। देहात अध्यक्ष चन्द्रगुप्त सिंह चौहान ने पर्यावरण को सबसे महत्वपूर्ण सत्कार्य एवं ईश्वरीय पूजा के समकक्ष बताया। भाजपा के युवा नेता डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री ने कहा कि वृक्षारोपण मात्र दिखावा न होकर उनका संरक्षण भी सुनिश्चित हो।

सेवा निवृत मुख्य सिंचाई अभियंता जीपी सोनी ने कहा कि उदयपुर शहर का न्यूनतम 40 प्रतिशत भाग हरियाली से आच्छादित होना चाहिए तथा बंजर भूमि का विकास तथा जल संसाधन बढ़ाना सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ आवश्यक है व पर्यावरण संस्कृति को नुकसान पहुंचाने वालों को सख्त दंड देने की आवश्कयता है।

पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक सतीष श्रीमाली ने कहा कि प्रत्येक घर के बाहर न्यूनतम तीन पेड़, लगाना आवश्यक है, व शहर की सिवरेज व नालियों को सुव्यवस्थित करना, शहर में गुलाब बाग जैसे अच्छे उद्यान विकसित करना वर्तमान समय की अतिआवश्यकता है। इस अवसर पर डॉ. जयश्री, रजिस्ट्रार डॉ. तरूण श्रीमाली, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन, डॉ. युवराज सिंह राठौड़, डॉ. धमेन्द्र राजौरा, लोक अधिकार के संभाग अध्यक्ष बसंती देवी वैष्णव, उपाध्यक्ष दलपत राज बातरा, जिलाध्यक्ष एडवोकेट तरूणा पुरोहित, घनश्याम लाल पटवा, प्रमोद वर्मा, डॉ. कमल सिंह राठौड़, प्रो. सरोज गर्ग, प्रो. मंजु मांडोत, डॉ. हीना खान, डॉ. नीरू राठौड़, डॉ. अमी राठौड़, डॉ. रचना राठौड़, डॉ. सुनिता मुर्डिया, प्रो. आईजे माथुर, डॉ. एसबी नागर, डॉ. बबीता रसीद, डॉ. लीली जैन, डॉ. यज्ञ आमेटा, केके कुमावत सहित विद्यापीठ के डीन, डायरेक्टर सहित शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। संचालन एडवोकेट भरत कुमावत ने किया जबकि आभार एडवोकेट उमेश शर्मा ने जताया।

राष्ट्रदूत उदयपुर, 2 जून, 2024

# जनसहभागिता से ही टाला जा सकता है पर्यावरण संकट : मंत्री खराड़ी

उदयपुर, (कासं)। प्राणी मात्र के लिए पर्यावरण संकट मानव जनित ही है, जिसके लिए हम सभी जिम्मेदार है, जिसे मानव को ही अपनी जागरूकता और निस्वार्थ प्रयासों से संकटमोचन का कार्य प्रकृति सौंदर्य की दिशा में करना होगा। पर्यावरण शुद्धिकरण एवं प्रदूषण को रोकने के लिए देश के विभिन्न वैज्ञानिक विभिन्न दिशा में प्रयासरत और क्रियाशील, लेकिन जब तक मानव स्वयं जागरूक और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नहीं होगा तब तक इसका उपचार संभव नहीं है। मानव को वर्तमान संदर्भ में पौधारोपण और प्राकृतिक सौंदर्य की दिशा में संपूर्ण शहर या राज्य की चिंता न कर अपने आस पास के




उदयपुर के विद्यापीठ में आयोजित पर्यावरण जागरण सप्ताह में कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराडी को पुस्तक भेंट की।

- **कुलपति सारंगदेवोत ने कहा कि पर्यावरण जागरूकता के लिए मानवीय गतिविधि का सक्रिय होना अत्यंत आवश्यक है**

सीमित क्षेत्र को विकसित करने का संकल्प लेकर अपने क्षेत्र में पूर्ण मनोबल से प्रयासरत होकर मानव कल्याण की दिशा में पर्यावरण को शुद्ध परिष्कृत करने का संकल्प लेना आवश्यक है।

उक्त विचार शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस पर शांति पीठ संस्थान, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि, मोहन लाल सुखाडिया विवि एवं भूपाल नोबल्स विवि के संयुक्त तत्वावधान में विद्यापीठ के प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में आयोजित पर्यावरण जागरण सप्ताह का शुभारंभ करते हुए राजस्थान सरकार के जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल ने बतौर मुख्य अतिथि कही।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि मानव सेवा और जीव सेवा जीवन का सर्वोत्तम सारगर्भित ध्येय है, जो वसुधैव कुटुंबकम की संकल्पना को सिद्ध करता है। उन्होंने मंत्री खराडी की सादगी और सरलता को सकारात्मक ऊर्जा का परिचायक बताते हुए कहा कि उनके विचार, मन में उमंग उनके आदर्श, समाज में सेवा भाव के लिए प्रेरणा स्वरूप है उन्होंने पर्यावरण जागरूकता के लिए मानवीय गतिविधि का सक्रिय होना अत्यंत आवश्यक बताया तथा हरित क्रांति और हरा भरा राजस्थान की संकल्पना को पुनर्जीवित करने का उत्तरदायित्व समाज का है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा आर्श ग्रन्थों वेद पुराणों में पर्यावरण सम्बंधित तथ्यों पर विस्तृत विवेचना करते हुए सभी को भारतीय ज्ञान का स्वरूप समझाया तथा कहा की आत्मा और परमात्मा के बीच जाच चक्र है उनके अनेक तत्वों को परिलक्षित करना अनिवार्य है, जिस प्रकार अंधकार से प्रकाश की ओर एक से अनेक की संकल्पना पर प्रकाश डाला। उन्होंने वाटर हार्वेस्टिंग की चिंता की ओर दृष्टिगोचर करते हुए प्रेरित किया। प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत संस्थापक अनंग गणेश त्रिवेदी किया। पूर्व कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने मेवाड की पर्यावरण विरासत को बचाने तथा पीपल, आम, आंवला, तुलसी आदि के पौधों को अधिकाधिक लगाने पर जोर दिया।

देहात अध्यक्ष चन्द्रगुप्त सिंह चौहान ने कहा कि अधिक से अधिक फलदार पौधें लगाये जिसे रोजगार व प्राकृतिक सौन्दर्यता में भी वृद्धि होगी। भाजपा के युवा नेता डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री ने कहा कि वृक्ष लगाने से हमारे ग्रह, नक्षत्रों में भी सुधार होता है।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, रविवार 21 अप्रैल, 2024

# सुरक्षा दीवार संरक्षण के अभाव में बदहाल



**उदयपुर** | एकलिंग जी-नागदा नगरी की सुरक्षा के लिए सुरक्षा दीवार संरक्षण के अभाव में नष्ट होने के कगार पर है। विश्व विरासत दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के पर्यावरण एवं दिव्य विरासत पुनरोत्थान अभियान के तहत हुए अध्ययन में यह बात सामने आई।

तक्षशिला विद्यापीठ के निदेशक डॉ. जी.एल मेनारिया ने कहा कि बप्पा रावल ने जल प्रबंधन एवं एकलिंगजी की सुरक्षा के लिए झीलों का निर्माण कराया। साथ ही चिति कोट भी बनवाया। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने बताया कि आज आवश्यकता है हमें विरासत में मिली प्रताप की चेतना को पुनजार्गृत करें। तभी हम विलुप्त होने के कंगार पर पहुंची विरासत को बचा पाएंगे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, सोमवार, 10 जून 2024

# ढीकली रोड स्थित पहाड़ी को गोद लेगा विद्यापीठ



**उदयपुर** शहर के आसपास 20 से अधिक पहाड़ियां हैं, जिन्हें सामाजिक संस्थाओं को गोद देकर व्यापक पौधरोपण किया जा सकता है। जिससे पर्यावरण सुरक्षित होगा और शहर के तापमान में भी कमी आएगी। यह बात शनिवार को शांति पीठ संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, सुविवि एवं बीएन विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पर्यावरण जागरण सप्ताह के समापन पर विधायक ताराचंद जैन ने बतौर मुख्य अतिथि कही।

विद्यापीठ के प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में हुए समारोह में उन्होंने कहा कि आयड़ को पुराने स्वरूप में लाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए शहर के प्रबुद्ध नागरिकों एवं पर्यावरणविदों के सुझाव भी आए हैं। उसके आधार पर आगे कार्य किया जाएगा। वर्ष पर्यन्त आयड़ नदी में पानी बहे, ऐसा प्रयास किया जा रहा है। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि पर्यावरण सरंक्षण की दिशा में पहल करते हुए संस्थान ढीकली रोड स्थित आवला पहाड़ी को गोद लेगा। जिसमें संस्थान एवं आमजन के माध्यम से पौधरोपण किया जाएगा। अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थापक अनंग गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जनभागीदारी से ही पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है। सुखाड़िया विवि के डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़, प्रो. बी कुमार, प्रो. एलएन दशोरा, प्रो. अनुया वर्मा, डॉ. सोनिका जैन, डॉ. जयश्री, दलपत राज बातरा, डॉ. कमल सिंह राठौड़, राजकुमार चौधरी सहित शहर के प्रबुद्धजन एवं पर्यावरण प्रेमी उपस्थित रहे। उमेश शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, मंगलवार, 11 जून 2024

# पर्यावरण जागरण को लेकर काव्य गोष्ठी

**उदयपुर** . पर्यावरण जागरण को लेकर शांति पीठ संस्थान में काव्य गोष्ठी हुई। जिसमें कवि अजात शत्रु ,भीलवाड़ा के राजेंद्र गोपाल व्यास, भरत कुमावत, मनोज गंधर्व आदि ने काव्यपाठ किया। संस्थापक आनंद गणेश त्रिवेदी ने स्वागत किया। प्रमुख अतिथि पूर्व कलक्टर सुमतिलाल बोहरा थे। डॉ ओपी महात्मा, कैलाश पालीवाल, संध्या आदि उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर मंगलवार 11 जून 2024

# पर्यावरण संरक्षण को लेकर हुई काव्य गोष्ठी

**उदयपुर** | पर्यावरण संरक्षण को लेकर शांति पीठ संस्थान में सोमवार को काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ। गोष्ठी में कविताओं के माध्यम से पर्यावरण बचाने का आह्वान किया गया।

कवि अजात शत्रु ने ढलान पर सीधे खड़े पेड़ को नमस्कार, पत्थरों की चोटों को जो खाता, बदले में फलों को लौटाता बोल जिंदगी बोल तुझे कितना बोल जो पेड़ कभी मेरे पिता ने लगाया पिता के जैसा ही है उसका साया, भीलवाड़ा से राजेंद्र गोपाल व्यास तुम मुझे एक किरण दे दो मैं तुम्हें सूरज लौटाऊंगा..., हवा है जल्दी पर कली में अभी गंध है..... से श्रोताओं को भाव विभोर करते हुए काव्य पाठ,गीत, मिसरे, कविता के माध्यम से काव्यात्मक ढंग से पर्यावरण की त्रासदी के कारण निवारणों को अभिव्यक्तियां दी। गोष्ठी के प्रारंभ में संस्थापक आनंद गणेश त्रिवेदी ने स्वागत करते हुए कवियों के सामने प्रश्न रखा कि गौर तमस के दौर जरा ये बतायें कि वर्तमान शताब्दी उल्लास की शताब्दी कैसे बने?

जय राजस्थान दिनांक : 9 जून, 2024

# पर्यावरण जागरण सप्ताह का हुआ समापनः विद्यापीठ ढ़ीकली रोड़ स्थित पहाड़ी को लेगा गोद

## जनभागीदारी से ही होगा पर्यावरण का संरक्षण - अनंत गणेश त्रिवेदी

## शहर का पर्यावरण मास्टर प्लान बनाने की जरूरत - ताराचंद जैन

उदयपुर, 08 जुन (नसं)। पिछले 75 वर्षो से पर्यावरण के छेड़खानी की जा रही है जिसका खामियाजा आज हम सभी को उठाना पड़ रहा है। तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा। पर्यावरण नहीं बचेगा तो हमारा जीवन भी नहीं बचेगा। पर्यावरण के लिए मास्टर प्लान बनाने की जरूरत है। हमारी नाकामियों के साथ युद्ध स्तर पर पहाड़ों को काटा जा रहा है, इसके लिए आमजन को जागरूक होना होगा। उदयपुर शहर के आसपास 20 से अधिक पहाड़िया है जिन्हे सामाजिक संस्थाओं को गोद देकर उसमें व्यापक रूप से पौधारोपण किया जा सकता है जिससे हमारे तापमान में भी कमी आयेगी। उक्त विचार शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस पर शांति पीठ संस्थान, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि, मोहन लाल सुखाड़िया विवि एवं भूपाल नोबल्स विवि के संयुक्त तत्वावधान में विद्यापीठ के प्रतापनगर



स्थित आईटी सभागार में आयोजित पर्यावरण जागरण सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर नगर विधायक ताराचंद जैन ने बतौर मुख्य अतिथि कही उन्होंने कहा कि आयड़ को पुराने स्वरूप में लाने का प्रयास किया जा रहा है इसके लिए शहर के प्रबुद्ध नागरिक एवं पर्यावरणविदो के सुझाव भी आये है उसके आधार पर आगे कार्य किया जायेगा। पूरे वर्षपर्यन्त पानी आयड़ नदी में बहे ऐसा प्रयास किया जा रहा है। उदयपुर शहर जैसा शहर पूरे विश्व में नहीं है।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि पर्यावरण सरंक्षण की दिशा में पहल करते हुए संस्थान द्वारा ढ़ीकली रोड़ स्थित आवला पहाड़ी को गोद लेना जिसमें संस्थान एवं आमजन के माध्यम से पौधारोपण किया जायेगा। उन्होंने कहा कि हमारी आज कई सभ्यताएँ नष्ट हो गयी है जिसके लिए हम सभी जिम्मेदार है।

जलवायु परिवर्तन के कारण आमजन की 05 वर्ष आयु कम हो गई है। विश्व के 100 प्रदुषित शहरों में 83 शहर हमारे भारत में ही है जिसे बदलना होगा। प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थापक अनंग गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जनभागीदारी से ही पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है इसके लिए पिछले एक सप्ताह से शहर के राजनीति, धार्मिक, सामाजिक एवं विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों के साथ बैठकर मंथन किया जा रहा है जिसके माध्यम से बड़े स्तर पर इस दिशा में कार्य किया जा सके।

सुखाड़िया विवि के डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़ ने सात दिवसीय कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए दिनों हुए नवाचारों की जानकारी प्रस्तुत की। संचालन एडवोकेट भरत कुमावत ने किया जबकि आभार एडवोकेट उमेश शर्मा ने जताया।

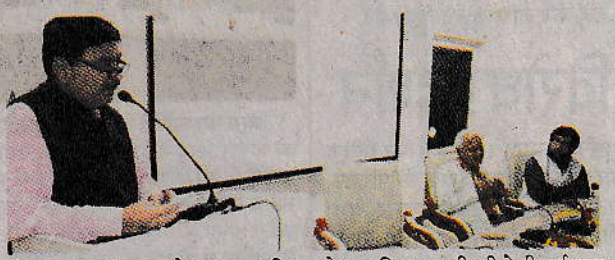
इस अवसर पर प्रो. बी कुमार, प्रो. एलएन दशौरा, प्रो. अनुया वर्मा, डॉ. सोनिका जैन, डॉ. जयश्री, दलपत राज बातरा, डॉ. कमल सिंह राठौड़, राजकुमार चैधरी, सहित शहर के गणमान्य नागरिक एवं पर्यावरण प्रेमी स्कोलर्स उपस्थित थे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, रविवार, 9 जून 2024

# शहर का पर्यावरण मास्टर प्लान बनाने की जरूरत : ताराचंद जैन

## विद्यापीठ ढीकली रोड स्थित पहाड़ी को लेगा गोद

ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर। पिछले 75 वर्षों से पर्यावरण के छेड़छाड़ की जा रही है, जिसका खामियाजा आज हम सभी को उठाना पड़ रहा है। पर्यावरण के लिए मास्टर प्लान बनाने की जरूरत है। ये विचार शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस पर शांति पीठ संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय एवं भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में विद्यापीठ के प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में आयोजित पर्यावरण जागरण सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर नगर विधायक ताराचंद जैन ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त



किए। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि पर्यावरण सरंक्षण की दिशा में पहल करते हुए संस्थान द्वारा ढीकली रोड स्थित आवला पहाड़ी को गोद लिया जाएगा, जिसमें संस्थान एवं आमजन के माध्यम से पौधरोपण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हमारी आज कई सभ्यताएं नष्ट हो गई हैं, जिसके लिए हम सभी जिम्मेदार हैं।

संस्थापक अनंग गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जनभागीदारी से ही पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है। सुखाड़िया विवि के डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़ ने सात दिवसीय कार्यक्रमों की जानकारी दी। संचालन एडवोकेट भरत कुमावत ने किया। इस अवसर पर प्रो. बी कुमार, प्रो. एलएन दशौरा, प्रो. अनुया वर्मा, डॉ. सोनिका जैन, डॉ. जयश्री, दलपत राज बातरा, डॉ. कमल सिंह राठौड़, राजकुमार चौधरी आदि उपस्थित थे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार, 7 जून, 2024

## पर्यावरण एवं भूमि सुधार पर गोष्ठी का आयोजन

# शहर के पर्यावरण सुधार कार्यक्रम पर बनेगी विस्तृत कार्य योजना

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

**उदयपुर.** शांतिपीठ संस्थान, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, राजस्थान विद्यापीठ तथा बीएन विश्वविद्यालय के तत्वावधान में चलाए जा रहे पर्यावरण जागरण सप्ताह के अंतर्गत गुरुवार को पर्यावरण दिवस पर सुविवि के पर्यावरण विभाग में भूमि एवं पर्यावरण सुधार पर गोष्ठी हुई।

अध्यक्षता शांतिपीठ संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने की। मुख्य अतिथि विज्ञान महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता प्रो. अतुल त्यागी, मुख्य वक्ता कच्छ विश्वविद्यालय में अर्थ एंड एनवायरमेंट डिपार्टमेंट की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सीमा शर्मा, विशिष्ट अतिथि आर्ट्स कॉलेज अधिष्ठाता प्रो. हेमंत द्विवेदी, पर्यावरण विभाग अध्यक्ष डॉ. देवेंद्र सिंह राठौड़ थे।

संयोजक अनुया वर्मा ने बताया कि पर्यावरण जागरण सप्ताह के तहत गोष्ठी में " सेव उदयपुर - सेव द अर्थ" थीम पर भू एवं पर्यावरण वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों तथा जागरूक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने विचार मंथन किया।

दि इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स इंडिया उदयपुर लोकल सेंटर पर वार्ता हुई। मानद सचिव पुरुषोत्तम पालीवाल ने रूपरेखा बताई। अध्यक्ष सीपी जैन ने स्वागत किया। मुख्य वक्ता डॉ. एम एल परिहार, डॉ. निहाल जैन, राजेन्द्र कुमार सिंघवी, सीपी जैन ने विचार रखे। इसके बाद पौधरोपण किया गया।

भारत विकास परिषद सुभाष शाखा की ओर से डॉ. पीसी जैन की मौजूदगी में सुन्दरवास में पौधरोपण किया गया। मीडिया प्रभारी राजेंद्र खोखावत ने बताया कि डॉ. मंजू जैन, रणजीत लाल जैन, भजन लाल गोयल, संजय अलावत, निर्भय सिंह बाबेल मौजूद रहे।






पर्यावरण एवं भूमि सुधार पर आयोजित गोष्ठी तथा द इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स इंडिया उदयपुर लोकल सेंटर पर आयोजित वार्ता। पत्रिका





भारत विकास परिषद सुभाष शाखा तथा पर्यावरण संरक्षण गतिविधि उदयपुर महानगर के आयोजन।



पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में एयरपोर्ट पर शपथ लेते हुए स्टाफ।

## अनूठा मैच : जितने छक्के और डॉट बॉल, उतने ही लगाने होंगे पौधे

**पर्यावरण** दिवस पर पर्यावरण प्रेमियों ने मैत्री क्रिकेट का आयोजन किया। विशेषता ये रही कि जितने छक्के लगे, डॉट बॉल हुई, उतने पौधे लगाए जाएंगे। आयोजक विवेक कौशल और कपिल वर्मा ने बताया कि हर वर्ष ग्रुप की ओर से पौधारोपण किया जाता है। इस बार 110 छक्के और डॉट बॉल हुई, इतने पौधे ग्रुप की ओर से लगाए जाएंगे। खिलाड़ियों



भूपेन्द्र हाडा, प्रणय गोयल, आवेज अली, साजिद, रविन्द्र, हिमांशु और सावन दोसी द्वारा दस-दस पौधे लगाए जाएंगे।

**एयरपोर्ट पर पौधरोपण:** भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, सीआइएसएफ, एयरलाइंस और अन्य एयरपोर्ट स्टाफ द्वारा पौधरोपण करने व उसकी देखभाल की शपथ ली गई।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, गुरुवार, 6 जून, 2024

# समाज, संस्था और संगठनों ने मनाया पर्यावरण दिवस, कहीं पर गोष्ठी तो कहीं पर बांटे पौधे

उदयपुर| विश्व पर्यावरण दिवस पर बुधवार को शहरभर में समाज, संस्था और संगठनों की ओर से विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। इसके तहत कहीं पर गोष्ठी तो कहीं पर पौधरोपण और पौधे बांटे गए।

कार्यक्रमों की कड़ी में शान्तिपीठ संस्थान एवं जोनल रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के साझे में हुई संगोष्ठी में पर्यावरण विद, इतिहासकार, भूगोल शास्त्री सहित कई विशेषज्ञों एवं युवा प्रशिक्षणार्थियों के मध्य चिंतन एवं विचार आदान-प्रदान किये गये। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए सुविवि के प्रो नीरज शर्मा ने मानव व प्रकृति के अंतर्संबंधों पर विशद विवेचना करते हुए कहा कि हमनें प्रकृति से सापेक्षित जीवन शैली के प्रतिकूल व्यवहार किया है और दुष्प्रभावों से विकास से अधिक विनाश को आमंत्रित किया है। शान्तिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हमें प्रकृति की ओर लौटने की दृढ़ इच्छा शक्ति जागृत करनी होगी तभी समावेशी विकास की दिशा में आगे बढ़ पायेंगे।

इसी तरह लाभगढ़ पैलेस रिसोर्ट एंड स्पा में जनरल मैनेजर उज्जवल मेनारिया एवं समस्त स्टाफ ने पिछोला झील सफाई में सहयोग किया और शाम को 75 पौधे रोपे।

## मोती मगरी फल-छायादार पेड़ लगाए

मोती मगरी महाराणा प्रताप स्मारक समिति की ओर से वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की 484वीं जयंती 9 जून को मनाई जाएगी। इस उपलक्ष्य में विश्व पर्यावरण दिवस पर बुधवार को परिसर में 10-10 फीट ऊंचे विभिन्न तरह के फलदार-छायादार 484 पेड़ लगाए गए। समिति अध्यक्ष डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने बताया कि वर्षा ऋतु में पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन की इस पहल को गति प्रदान करेंगे।

इधर उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ परिसर गोवर्धन विलास मे 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाते हुए सघन पौधरोपण किया।

**इन संस्थाओं ने भी मनाया पर्यावरण दिवसः** ग्राहक पंचायत की गोष्ठी, भारतीय कुमावत क्षत्रिय समाज की ओर से वृक्ष दान अभियान का शुभारंभ, भाजपा के सरदार पटेल मंडल, रोटरी क्लब ऑफ उदयपुर, जीबीएच अमेरिकन आदि।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, गुरुवार, 06 जून 2024

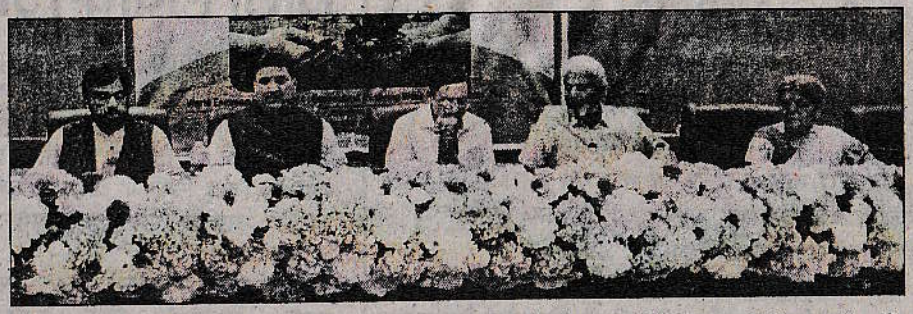
# सौ पौधे लगाकर बनाई शीशम वाटिका

सुखाड़िया सर्किल स्थित क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान में मिशन लाईफ के तहत विभिन्न कार्यक्रम हुए। प्राचार्य जय प्रकाश ने पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई। इसके बाद शीशम के 100 पौधे लगाकर शीशम वाटिका बनाई गई। पौधों की सुरक्षा के लिए ट्री गार्ड लगाए गए और प्रशिक्षणार्थियों को देख-रेख की जिम्मेदारी दी गई। जैव विविधता को प्रेरित करने के लिये शान्तिपीठ, उदयपुर के सहयोग से प्राचार्य-क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, उत्तर पश्चिम रेलवे-उदयपुर की अध्यक्षता में सेमिनार हुई। इसमें एमएलएसयू के प्रो. नीरज शर्मा, सेवानिवृत्त प्राध्यापक एवं पर्यावरणविद् पी.आर. व्यास एवं शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने संबोधित किया। प्रतियोगिताओं के 9 विजेताओं को मेडल एवं प्रमाण-पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया।

उदयपुर एक्सप्रेस
उदयपुर, मंगलवार 4 जून, 2024

# जल, जंगल और जमीन बचेंगे तो जीवन बचेगा: डॉ जैन

**पर्यावरणीय स्थिरता के लिए सामाजिक सह-अस्तित्व की आवश्यकता: प्रो सारंगदेवोत**
**स्वच्छ पानी की आवश्यकता आज सबसे बड़ी जरुरत: प्रो कर्नाटक**
**पर्यावरण बचाने के लिए नैतिक बल को संगठित करने की आवश्यकता : अनंत गणेश**



उदयपुर (कासं)। भूपाल नोबल्स यूनिवर्सिटी में पर्यावरण जागृति सप्ताह (1-8 जून) की श्रृंखला में एक संगोष्ठी आयोजित हुई जिसमे पर्यावरणविदों, कृषिविदों, अर्थशास्त्रियों, कानूनी विशेषज्ञों और नौकरशाहों के साथ-साथ नागरिकों और अकादमिक क्षेत्र के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. निहाल चंद जैन- पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राजस्थान, विशिष्ट अतिथि, एमपीयूएटी के कुलपति प्रो अजीत कुमार कर्नाटक और शांतिपीठ संस्थान, उदयपुर के संस्थापक-संरक्षक अनंत गणेश त्रिवेदी थे। कार्यक्रम अध्यक्षता बीएन संस्थान के कार्यवाहक अध्यक्ष और राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो शिव सिंह सारंगदेवोत ने की। कार्यक्रम का थीम पर्यावरण संरक्षण, संरक्षण और जलवायु परिवर्तन था।

डॉ जैन ने कहा की प्रकृति स्वत: जीवित रहती है और बढ़ती है यदि मनुष्य इसे विस्तार करने दें और इसे जीवित रहने दें। जीवित रहने के लिए केवल अपने स्वयं के प्रवाह की आवश्यकता होती है और यह स्थिरता तभी कायम रहती है जब मनुष्य पर्यावरण-अनुकूल और अधिक प्रकृति-प्रेमी बने रहें। यह व्याख्यान पर्यावरणीय अनुकूलनशीलता की चुनौतियों में सिद्ध हुआ। अनंत गणेश त्रिवेदी ने उदयपुर की पहाड़ियों और झीलों की दुर्दशा का बहुत करूणिक चित्र प्रस्तुत किया। डॉ कर्नाटक ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में बताया की जैव विविधता सभी को समायोजित करती है, लेकिन मानव जाति की अंतर्निहित पसंद और विरासत दोनों को प्रकृति के समानता सिद्धांतों को समायोजित करने में कठिनाई होती है। आज हमें 500 करोड़ नये पेड़ लगाने की जरुरत हैं।

प्रो. सारंगदेवोत ने कहा की जंगलप्रकृति में प्राकृतिक भौतिक उपस्थिति यह जाने बिना है कि पशुवाद, पूंजीवाद और पर्यावरणवाद और समाजवाद इन नामकरणों का क्या अर्थ है। इसलिए सामाजिक पारिस्थितिकी को स्वस्थ पर्यावरणीय स्थिरता लाने के लिए प्रकृति की शक्तियों और सुंदर रूपों के पुनर्निर्माण के साथ सामाजिक सह-अस्तित्व की आवश्यकता है। बीएन संस्थान के सचिव डॉ महेंद्र सिंह आगरिया और प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह राठौड़ ने अपने सन्देश में कहा की इस वर्ष के विश्व पर्यावरण दिवस का विषय भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखा लचीलापन है। सबको आव्हान किया की सभी पेड़ लगा कर पृथ्वी का श्रृंगार करें। इसमें जीपी सोनी, मुख्य अभियंता सिंचाई विभाग, सतीश श्रीमाली, पूर्व अतिरिक्त नगर नियोजक, डॉ. शशि चित्तौड़ा, डीन एजुकेशन, उमेश चंद्र शर्मा, उच्च न्यायालय अधिवक्ता, डॉ चेतन सिंह चौहान, प्राचार्य बीएनआईपीएस, डॉ. जयश्री सिंह, प्रमुख अंग्रेजी विभाग, डॉ. कमल सिंह राठौड़, प्राध्यापक, फार्मेसी, मनोज गन्धर्व, भरत कुमावत और राजकुमार मेनारिया डॉ सीमा शर्मा, आदि गणमान्य उपस्थित थे। डॉ खुशबु ने कार्यक्रम का संचालन किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, सोमवार, 3 जून 2024

# नागदा के खुम्मण रावल के देवरा का अध्ययन



उदयपुर . पर्यावरण जागरण सप्ताह के अंतर्गत रविवार को पुरा-पर्यावरण की टीम ने मेवाड़ की प्राचीन राजधानी नागदा पहुंच कर खुम्माण रावल का देवरा का अध्ययन व अवलोकन किया। जहां स्थानीय जन प्रतिनिधि व जागरूक लोग भी सम्मिलित हुए। पुराविद् डॉ. ललित पाण्डे ने कहा कि खुम्माण रावल का देवरा एक पूर्व मध्यकालीन मंदिर है। जो नागर शैली में शास्त्रोक्त सिद्धांतों पर भगवान शिव को समर्पित है। मंदिर के एक स्तम्भ पर विक्रमी संवत 1244 अर्थात 1182 ई का एक अभिलेख उत्कीर्ण है। शान्तिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि वनों में स्थापित पुरा संपदा, सभ्यता और प्रकृति के अभाज्य संबंधों को परिलक्षित करती है। इतिहास वादों का मत है कि खुम्माण रावल के काल में उत्तर भारत में नागदा की शिक्षा- संस्कृति नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला के समान थी। उन्होंने कहा कि बप्पा रावल से कमल नाथ तक का क्षेत्र कभी पाराशर देव वन से जाना जाता था। पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक, राजस्थान सतीश श्रीमाली ने क्षेत्र का प्लान बनाने की जरूरत बताई। अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा, सुविवि के डॉ. राजेन्द्र सिंह राठौड़, कैलाश पुरी के पूर्व सरपंच अशोक मोड़, एडवोकेट भरत कुमावत, निखिल माली, मदनलाल ओड़, लोकेश चौधरी, पूर्व वन अधिकारी दलपत बातरा आदि उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर उदयपुर, सोमवार 03 जून, 2024

# पर्यावरण जागरण सप्ताहः राजधानी नागदा पहुंची टीम, अध्ययन कर किया अवलोकन



उदयपुर| पर्यावरण जागरण सप्ताह के तहत रविवार को टीम मेवाड़ की प्राचीन राजधानी नागदा पहुंची। यहां पर खुम्माण रावल का देवरा का अध्ययन व अवलोकन किया। अध्ययन के दौरान पुराविद् डॉ. ललित पाण्डे ने कहा कि खुम्माण रावल का देवरा एक पूर्व मध्यकालीन मंदिर है जो नागर शैली में शास्त्रोक्त सिद्धांतों पर भगवान शिव को समर्पित मंदिर है। मंदिर की जीर्ण शीर्ष अवस्था देखकर अत्यंत आत्म ग्लानि व क्षोभ का अनुभव होता है जबकि मंदिर परिसर में राजकीय संरक्षित स्मारक का बोर्ड भी शोभायमान है। मंदिर को इस सीमा तक हानि पहुंचाई गई है कि फर्शी के शीला खण्ड के साथ-साथ मंदिर की पार्श्व दीवारों पर उत्कीर्ण मूर्तियां तक काट कर ले जाई जा चुकी हैं। शान्तिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने संवाद के दौरान कहा कि वनों में स्थापित पुरा संपदा सभ्यता और प्रकृति के अभाज्य संबंधों को परिलक्षित करती है। पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक राजस्थान सतीश श्रीमाली ने क्षेत्र का प्लान बनाने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि मंदिर संरक्षण के साथ ही जैव विविधता को बरकरार रखे जाने की ख़ास आवश्यकता है।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 3 जून 2024

# खुम्माण रावल का देवरा का किया अध्ययन



ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। पर्यावरण जागरण सप्ताह के अंतर्गत रविवार को पुरा-पर्यावरण की टीम मेवाड़ की प्राचीन राजधानी नागदा में खुम्माण रावल का देवरा पहुंच कर अध्ययन व अवलोकन किया।

पुराविद् डा ललित पाण्डे ने कहा कि खुम्माण रावल का देवरा एक पूर्व मध्यकालीन मंदिर है जो नागर शैली में शास्त्रोक्त सिद्धांतों पर भगवान शिव को समर्पित मंदिर है जिसमें कला शौष्ठव से पूर्ण नंदी शिव के सम्मुख बिराजे गए हैं। गर्भ गृह में स्थित शिवलिंग को देखने से यह आभास होता है कि अष्ट कोणीय विशाल जलधारी के मध्य स्थित है। मंदिर के एक स्तम्भ पर विक्रमी संवत 1244 अर्थात 1182 ई का एक अभिलेख भी उत्कीर्ण है। मंदिर इन्टर लोकिंग अर्थात सूखी चुनाई से निर्मित वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है जो उस काल में उच्च वास्तुविज्ञान का एक जीवंत प्रमाण है लेकिन मंदिर की जीर्ण शीर्ष अवस्था देखकर अत्यंत आत्म ग्लानि का अनुभव होता है जबकि मंदिर परिसर में राजकीय संरक्षित स्मारक का बोर्ड भी शोभायमान है। मंदिर को इस सीमा तक हानि पहुंचाई गई है कि फर्शी के शीला खण्ड के साथ-साथ मंदिर की पार्श्व दीवारों पर उत्कीर्ण मूर्तियां तक काट कर ले जाई जा चुकी हैं।

शान्तिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने ऐतिहासिक देवरे के जीर्णोद्धार की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि हम स्वर्णिम अतीत को विस्मृत करके सुखद भविष्य का निर्माण नहीं कर सकते। पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक, राजस्थान सतीश श्रीमाली ने क्षेत्र का प्लान बनाने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि मंदिर संरक्षण के साथ ही जैवविविधता को बरकरार रखे जाने की खास आवश्यकता है। उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा ने शास्त्रोक्त उल्लेख करते हुए कहा कि जलाधारी की आकृति डमरू जैसी होने से यह विग्रह हरेश्वर स्वरूप है। सुविवि पर्यावरण प्रमुख डॉ. राजेन्द्र सिंह राठौड़, कैलाश पुरी के पूर्व सरपंच अशोक मोड़, एडवोकेट भरत कुमावत, निखिल माली, मदनलाल ओड़, लोकेश चौधरी, पूर्व वन अधिकारी दलपत बातरा, राजमल चौधरी, हितेष वैष्णव, शीतल वैष्णव आदि उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, रविवार 02 जून, 2024

# जन सहभागिता से ही टाल सकते हैं प्राकृतिक असंतुलन : खराड़ी

## टीएडी मंत्री ने किया पर्यावरण जागरण सप्ताह का उद्घाटन

**उदयपुर** | जनजाति विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने कहा कि पर्यावरण संकट मानव जनित ही है। इसके जिम्मेदार हम सब हैं। पर्यावरण को शुद्ध करने और प्रदूषण को रोकने के लिए वैज्ञानिक प्रयासरत हैं, लेकिन जब तक समाज खुद जागरूक और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नहीं होगा, तब तक इस समस्या का समाधान संभव नहीं है। जनसहभागिता के बिना प्राकृतिक असंतुलन को नहीं टाला जा सकता।



खराड़ी शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस पर शांति पीठ संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ विवि, सुविवि एवं बीएन विवि के साझे में प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में पर्यावरण जागरण सप्ताह के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। अध्यक्षता कर रहे विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि मानव सेवा और जीव सेवा जीवन का सर्वोत्तम सारगर्भित ध्येय है, जो वसुधैव कुटुंबकम् की संकल्पना को सिद्ध करता है। हरित क्रांति और हरो-भरे राजस्थान की संकल्पना को पुनर्जीवित करने का उत्तरदायित्व समाज का है।

आरंभ में शांति पीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने स्वागत किया। पूर्व कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने मेवाड़ की पर्यावरण विरासत को बचाने तथा पीपल, आम, आंवला, तुलसी आदि के पौधों को अधिकाधिक लगाने पर जोर दिया। सुविवि के पर्यावरण विभाग प्रमुख डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़ ने पर्यावरण संरक्षण के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझाया। भाजपा देहात अध्यक्ष चंद्रगुप्त सिंह चौहान व डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री ने भी विचार रखे। इस अवसर पर डॉ. जयश्री, रजिस्ट्रार डॉ. तरुण श्रीमाली, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन, डॉ. युवराज सिंह राठौड़, डॉ. धर्मेंद्र राजौरा, लोक अधिकार संभाग अध्यक्ष बसंती देवी वैष्णव, उपाध्यक्ष दलपत राज बातरा, जिलाध्यक्ष तरुणा पुरोहित, घनश्याम लाल पटवा, प्रमोद वर्मा आदि मौजूद रहे। संचालन भरत कुमावत ने किया।

प्रातःकाल
उदयपुर, रविवार 2 जून, 2024

# जनसहभागिता से ही टाला जा सकता है, पर्यावरण संकट : मंत्री खराड़ी

**उदयपुर (वि)।** प्राणी मात्र के लिए पर्यावरण संकट मानव जनित ही है, जिसके लिए हम सभी जिम्मेदार है, जिसे मानव को ही अपनी जागरूकता और निस्वार्थ प्रयासों से संकटमोचन का कार्य प्रकृति सौंदर्य की दिशा में करना होगा। पर्यावरण शुद्धिकरण एवं प्रदूषण को रोकने के लिए देश के विभिन्न वैज्ञानिक विभिन्न दिशा में प्रयासरत और क्रियाशील, लेकिन जब तक मानव स्वयं जागरूक और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नहीं होगा तब तक इसका उपचार संभव नहीं है। यह विचार शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस पर शांति पीठ संस्थान, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि, मोहन लाल सुखाड़िया विवि एवं भूपाल नोबल्स विवि के संयुक्त तत्वावधान में विद्यापीठ के प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में आयोजित पर्यावरण जागरण सप्ताह का शुभारंभ करते हुए राजस्थान सरकार के जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने बतौर मुख्य अतिथि कही। खराड़ी ने कहा कि उद्योग




आदि से होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए नवीन तकनीक को अपना कर मानव के निस्वार्थ समर्पण और अनुशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता बताई। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि मानव सेवा और जीव सेवा जीवन का सर्वोत्तम सारगर्भित ध्येय है, जो वसुधैव कुटुंबकम की संकल्पना को सिद्ध करता है। उन्होंने मंत्री खराड़ी की सादगी और सरलता को सकारात्मक ऊर्जा का परिचायक बताते हुए कहा कि उनके विचार, मन में उमंग उनके आदर्श, समाज में सेवा भाव के लिए प्रेरणा स्वरूप है उन्होंने पर्यावरण जागरूकता के लिए मानवीय गतिविधि का सक्रिय होना अत्यंत आवश्यक है तथा हरित क्रांति और हरा भरा राजस्थान की संकल्पना को पुनर्जीवित करने का उत्तरदायित्व समाज का है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा आर्श ग्रन्थों वेद पुराणों में पर्यावरण सम्बंधित तथ्यों पर विस्तृत विवेचना करते हुए सभी को भारतीय ज्ञान का स्वरूप समझाया तथा कहा की आत्मा और परमात्मा के बीच जो चक्र है उनके अनेक तत्वों को परिलक्षित करना अनिवार्य है, जिस प्रकार अंधकार से प्रकाश की ओर एक से अनेक की संकल्पना पर प्रकाश डाला। पूर्व कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने मेवाड़ की पर्यावरण विरासत को बचाने तथा पीपल, आम, आंवला, तुलसी आदि के पौधों को अधिकाधिक लगाने पर जोर दिया। डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़, देहात अध्यक्ष चन्द्रगुप्त सिंह चौहान, भाजपा नेता डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री ने विचार रखे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, रविवार, 2 जून 2024

# पर्यावरण संकट मानव जनित, इसके लिए हम सभी जिम्मेदार : खराड़ी

## जल, जंगल, जमीन को बचाने का लिया संकल्प

**ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर।** प्राणी मात्र के लिए पर्यावरण संकट मानव जनित ही है, जिसके लिए हम सभी जिम्मेदार है, जिसे मानव को ही अपनी जागरूकता और निस्वार्थ प्रयासों से संकटमोचन का कार्य प्रकृति सौंदर्य की दिशा में करना होगा। ये विचार शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस पर शांति पीठ संस्थान, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि, मोहनलाल सुखाड़िया विवि एवं भूपाल नोबल्स विवि के संयुक्त तत्वावधान में विद्यापीठ के प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में आयोजित पर्यावरण जागरण सप्ताह के शुभारंभ करते हुए जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए।



अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि मानव सेवा और जीव सेवा जीवन का सर्वोत्तम सारगर्भित ध्येय है, जो वसुधैव कुटुंबकम की संकल्पना को सिद्ध करता है। संस्थापक अनंग गणेश त्रिवेदी ने जलवायु परिवर्तन को गंभीर वैश्विक समस्या बताते हुए कहा कि महाराणा प्रताप तथा अरावली की प्रकृति आपस में एक दूसरे के पूरक हैं तथा दोनों ने एक दूसरे की रक्षा की व आश्रय दिया। पूर्व कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने मेवाड़ की पर्यावरण विरासत को बचाने तथा पीपल, आम, आंवला, तुलसी आदि के पौधों को अधिकाधिक लगाने पर जोर दिया। सुखाड़िया विवि के पर्यावरण विभाग प्रमुख डॉ. देवेंद्र सिंह राठौड़ ने पर्यावरण संरक्षण के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझाया। देहात अध्यक्ष चंद्रगुप्त सिंह चौहान ने पर्यावरण को सबसे महत्वपूर्ण सत्कार्य एवं ईश्वरीय पूजा के समकक्ष बताया। इस मौके पर भाजपा के युवा नेता डॉ. जिनेंद्र शास्त्री, सेवानिवृत्त मुख्य सिंचाई अभियंता जीपी सोनी, पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक सतीष श्रीमाली ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर डॉ. जयश्री, रजिस्ट्रार डॉ. तरुण श्रीमाली, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन, डॉ. युवराज सिंह राठौड़, डॉ. धर्मेंद्र राजौरा, लोक अधिकार के संभाग अध्यक्ष बसंती देवी वैष्णव, उपाध्यक्ष दलपत राज बातरा, जिलाध्यक्ष एडवोकेट तरूणा पुरोहित, घनश्याम लाल पटवा, प्रमोद वर्मा आदि उपस्थित थे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 02 जून, 2024

# जनसहभागिता से ही टाला जा सकता है पर्यावरण संकट - मंत्री खराड़ी



**उदयपुर.** प्राणी मात्र के लिए पर्यावरण संकट मानव जनित ही है, जिसे मानव को ही अपनी जागरूकता और निस्वार्थ प्रयासों से संकटमोचन का कार्य प्रकृति सौंदर्य की दिशा में करना होगा। पर्यावरण शुद्धिकरण एवं प्रदूषण को रोकने के लिए देश के विभिन्न वैज्ञानिक विभिन्न दिशा में प्रयासरत और क्रियाशील हैं, लेकिन जब तक मानव स्वयं जागरूक और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नहीं होगा तब तक इसका उपचार संभव नहीं है। ये बात शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस के संदर्भ में पर्यावरण जागरण सप्ताह के शुभारंभ के अवसर पर जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने बतौर मुख्य अतिथि कही। कार्यक्रम शांति पीठ संस्थान, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ, मोहन लाल सुखाड़िया विवि एवं भूपाल नोबल्स विवि के तत्वावधान में विद्यापीठ के प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में हुआ। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने पर्यावरण जागरूकता के लिए मानवीय गतिविधि का सक्रिय होना अत्यंत आवश्यक बताया तथा हरित क्रांति और हरा भरा राजस्थान की संकल्पना को पुनर्जीवित करने का उत्तरदायित्व समाज का है। संस्थापक अनंग गणेश त्रिवेदी ने जलवायु परिवर्तन को गंभीर वैश्विक समस्या बताते हुए कहा कि महाराणा प्रताप तथा अरावली की प्रकृति आपस में एक दूसरे के पूरक है तथा दोनों ने एक दूसरे की रक्षा की व आश्रय दिया। पूर्व कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने मेवाड़ की पर्यावरण विरासत को बचाने तथा पीपल, आम, आंवला, तुलसी आदि के पौधों को अधिकाधिक लगाने पर जोर दिया। कार्यक्रम में सुखाड़िया विवि के पर्यावरण विभाग प्रमुख डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़, देहात अध्यक्ष चन्द्रगुप्त सिंह चौहान, डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री, जीपी सोनी, सतीश श्रीमाली, डॉ. जयश्री, डॉ. तरूण श्रीमाली, डॉ. पारस जैन, डॉ. युवराज सिंह राठौड़ आदि मौजूद रहे।

राजस्थान पत्रिका pa
उदयपुर, शुक्रवार, 31 मई 2024

# पर्यावरण जागरण सप्ताह 1 जून से



**उदयपुर.** विश्व पर्यावरण दिवस के संदर्भ में पर्यावरण जागरण सप्ताह का आयोजन किया जाएगा। शान्तिपीठ संस्थान, मो.सु.विश्वविद्यालय, बी.एन.विश्वविद्यालय, ज.रा.नागर विद्यापीठ विश्वविद्यालय, जोनल रेलवे ट्रेनिंग इंस्ट्रीयूट आदि संस्थानों के संयुक्त तत्वावधान में 1 जून से इसका शुभारंभ होगा। इसके तहत अलग-अलग स्थानों पर विभिन्न आयामों पर ठोस कार्य तय किए जाएंगे। पिछले पखवाड़े में अलग-अलग संवाद करते हुए साप्ताहिक कार्यक्रम को शान्तिपीठ संस्थान के सभागार में आयोजित बैठक में अंतिम रूप दिया गया। इसकी अध्यक्षता विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने की।शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी,राजस्थान के पूर्व वरिष्ठ नगर नियोजक सतीश शर्मा, डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री व एडवोकेट भरत कुमावत, पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा, मो.सु.विश्वविद्यालय में पर्यावरण प्रकोष्ठ के प्रमुख डॉ. राजेन्द्र सिंह राठौड़, बी.एन.विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. जयश्री सिंह, उच्च न्यायालय के अधिवक्ता एडवोकेट उमेश चन्द्र शर्मा, पूर्व सिंचाई मुख्य अभियंता जी.पी.सोनी आदि मौजूद रहे।

दैनिक भास्कर, उदयपुर . शुक्रवार, 31 मई, 2024

# पर्यावरण दिवस पर 1 जून से होगा पर्यावरण सप्ताह



**उदयपुर** | विश्व पर्यावरण दिवस पर 1 जून से पर्यावरण जागरण सप्ताह का आयोजन होगा। आयोजन शान्तिपीठ संस्थान, सुविवि, बीएनविवि, राजस्थान विद्यापीठ, जोनल रेलवे ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट आदि संस्थानों के साझे में होगा। साप्ताहिक कार्यक्रम को लेकर गुरुवार को शान्तिपीठ संस्थान के सभागार में बैठक हुई। अध्यक्षता विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने की।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, बुधवार, 24 अप्रेल 2024

# अत्यधिक दोहन से जलवायु में बदलाव बनी गंभीर समस्या

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com




**उदयपुर.** शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में पृथ्वी दिवस पर संगोष्ठी हुई। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि अत्यधिक दोहन से जलवायु बदलाव की गंभीर समस्या हैं। इससे निजात पाने के लिए दुनिया में आवाजें उठ रही हैं। चिंता की बात यह है कि नई पीढ़ी को हम रहने के काबिल धरती विरासत में नहीं सौंप पाएंगे। एमएलएसयू में संस्कृत विभाग के प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि पृथ्वी के प्रति हमारी आदर्श आचार संहिता ही पृथ्वी को सुरक्षित रख पाएगी और हम भी सुरक्षित रहेंगे। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि लोभ और अधिग्रहण की लालसा ने आत्मघात का रास्ता अख्तियार कर लिया हैं। हम आदर्श आचार संहिता से कोसों दूर हो गए हैं। उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा ने छोटे शहर में पैदल मार्ग व साइक्लिंग की जरुरत बताते हुए शहर के अंदर नो व्हीकल जोन अपनाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का मानना है कि जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से लोगों को मुक्त रखा जाना उनका मौलिक अधिकार है। अधिवक्ता भरत कुमावत, पूर्व रेंजर दलपतराम बातरा, संध्या ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, गुरुवार, 25 अप्रैल 2024

# प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करने से जलवायु परिवर्तन, समाधान पर विचार मंथन

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर




पृथ्वी के अत्यधिक दोहन से जलवायु बदलाव की गंभीर समस्या से निजात पाने के लिए दुनिया भर में आवाजें उठ रही हैं। चिंता इस बात की है कि नई पीढ़ी को हम रहने के क़ाबिल धरती विरासत में नहीं सौंप पाएंगे। माता पृथ्वी के लिए वेदोक्त आचार संहिता प्रस्तुत है इसे अभ्यास में लाने से ही हमारे प्रयास कारगर होंगे।

ये विचार शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में हुई संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए।

प्रो नीरज शर्मा ने पृथ्वी सूक्त की विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा कि पृथ्वी के प्रति हमारी आदर्श आचार संहिता ही पृथ्वी को सुरक्षित रख पायेगी और हम भी सुरक्षित रहेंगे। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि सारे जीवों की संतान और उनकी माता का प्रेम पूर्ण और पवित्र संबंध से बढ़ कर क्या हो सकता है, यही पृथ्वी और हमारे बीच है किन्तु लोभ और अधिग्रहण की लालसा ने विकास आधुनिक यात्रा ने आत्मघात का रास्ता अख्तियार कर लिया है ऐसे में भी हम आदर्श आचार संहिता से कोसों दूर हो गये हैं। उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा ने स्थानीय हालात की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए डी टूरिज्म कैंपेन को प्रमोट करने की बात कही।

छोटे शहर में पैदल मार्ग व साइक्लिंग की जरूरत बताते हुए शहर के अंदर में नो व्हीकल जोन अपनाने आवश्यकता प्रतिपादित की । अधिवक्ता भरत कुमावत ने युवाओं को आह्वान किया कि वे उत्तरदायित्व से मेवाड़ की प्राकृतिक सम्पदा को उजड़ने से बचा पाने आगे आएं। एक दिवसीय संगोष्ठी में कई वक्ताओं ने अपनी अपनी बात कहते हुए पर्यावरण संरक्षण को महत्वपूर्ण बताया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शनिवार, 20 अप्रेल 2024

# विरासत में मिली प्रताप की चेतना को पुनर्जागृत करें



**उदयपुर.** विश्व विरासत दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के "पर्यावरण एवं दिव्य विरासत पुनरोत्थान अभियान" के तहत संगोष्ठी हुई। ग्लोबल हिस्ट्री फार्म के संस्थापक अध्यक्ष एवं तक्षशिला विद्यापीठ के निदेशक डॉ. जी.एल.मेनारिया ने कहा कि बप्पा रावल ने उत्तर भारत में सर्वप्रथम जलप्रबंधन के लिए एवं एकलिंगजी की सुरक्षा हेतु झीलों का निर्माण कराया। इसमें मंदिर की पूर्व दिशा में भौजेला तालाब व घासा ग्राम में तालाब बनवाए जो अति प्राचीन सरस्वती नदी की लुप्त शाखा त्रिकूट गंगा की त्रिवेणी पर वर्तमान एकलिंगजी बनवाया जिसकी सुरक्षा के लिए पर्वतों पर चितिकोट बनवाई जो सुदृढ़ थी। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हमें विरासत में मिली प्रताप की चेतना को पुनर्जागृत करेंगे तभी हम विलुप्ति के कगार पर पहुंची मेवाड़ की दिव्य विरासत को बचा पाएंगे। बी.एन.विश्वविद्यालय फार्मेसी के विभागाध्यक्ष डॉ. कमल सिंह राठौड़, विरासत संरक्षण समिति, देलवाड़ा के बहादुर सिंह चुण्डावत, कैलाश पालीवाल, भरत कुमावत, बाबूलाल गमेती आदि ने भी विचार रखे।

प्रातःकाल
उदयपुर, शनिवार 20 अप्रेल, 2024

# एकलिंगजी की सुरक्षा दीवार का संरक्षण जरूरी



**उदयपुर (वि.)।** एकलिंगजी-नागदा नगरी की सुरक्षा हेतु निर्मित चितिकोट (सुरक्षा दीवार) संरक्षण के अभाव में नष्ट होने के कगार पर है। एकलिंगजी मंदिर भले ही मेवाड़ के राजा गुहिल वंशज बप्पा रावल के समय निर्मित हुआ था किन्तु सुरक्षा दीवारे-चितिकोट अति प्राचीन संभवत: राजा चित्रांगद मौर्य के समय बनी जो अतित के इतिहास को बयां करती हैं। विश्व विरासत दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के 'पर्यावरण एवं दिव्य विरासत पुनरोत्थान अभियान' के तहत आयोजित अध्ययन में उक्त बात सामने आई। ग्लोबल हिस्ट्री फार्म के संस्थापक अध्यक्ष एवं तक्षशीला विद्यापीठ के निदेशक डॉ. जी.एल. मेनारिया ने कहा कि बप्पा रावल ने उत्तर भारत में सर्वप्रथम जलप्रबंधन हेतु एवं एकलिंगजी की सुरक्षा हेतु झीलों का निर्माण कराया जिसमें मंदिर की पूर्व दिशा में भौजेला तालाब व घासा ग्राम में तालाब बनवाये जो अति प्राचीन सरस्वती नदी की लुप्त शाखा त्रिकुट गंगा की त्रिवेणी पर वर्तमान एकलिंगजी बनवाया जिसकी सुरक्षा हेतु पर्वतों पर चितिकोट बनवाई जो सुदृढ़ थी। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि महाराणा प्रताप ने क्षात्र धर्म का निर्वहन करते हुए मेवाड़ को अजेय बना दिया, आज आवश्यकता है हमें विरासत में मिली प्रताप की चेतना को पुनर्जागृत करें। बी.एन. विश्वविद्यालय फार्मेसी के विभागाध्यक्ष डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने कहा कि हमें बिना विलम्ब किये सक्रिय जनभागीदारी से मेवाड़ की विरासतों को सुरक्षित करना होगा। विरासत संरक्षण समिति, देलवाड़ा के बहादुर सिंह चुण्डावत ने कहा कि प्रकृति और विरासत को बचाये बगैर हम सुरक्षित नहीं हो सकते, हमें इसे व्यापक अभियान बनाना होगा। अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती कोच कैलाश पालीवाल, एडवोकेट भरत कुमावत, बाबुलाल गमेती आदि ने भी अध्ययन के बाद आयोजित संवाद में भागीदारी की।

दैनिक नवज्योति

उदयपुर, शनिवार, 20 अप्रेल 2024

# संरक्षण के अभाव में नष्ट होने के कगार पर सुरक्षा दीवार



**ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर।** एकलिंगजी-नागदा नगरी की सुरक्षा के लिए निर्मित चितिकोट (सुरक्षा दीवार) संरक्षण के अभाव में नष्ट होने के कगार पर है। यह बात विश्व विरासत दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के पर्यावरण एवं दिव्य विरासत पुनरोत्थान अभियान के तहत आयोजित अध्ययन में सामने आई। वक्ताओं ने कहा कि एकलिंगजी मंदिर भले ही मेवाड़ के राजा गुहिल वंशज बप्पा रावल के समय निर्मित हुआ था किन्तु सुरक्षा दीवारे-चितिकोट अति प्राचीन संभवतः राजा चित्रांगद मौर्य के समय बनी जो अतित के इतिहास को बयां करती हैं।

ग्लोबल हिस्ट्री फार्म के संस्थापक अध्यक्ष एवं तक्षशीला विद्यापीठ के निदेशक डॉ. जी.एल.मेनारिया ने कहा कि बप्पा रावल ने उत्तर भारत में सर्वप्रथम जलप्रबंधन एवं एकलिंगजी की सुरक्षा के लिए पर्वतों पर चितिकोट बनवाई जो सुदृढ़ थी। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि महाराणा प्रताप ने क्षात्र धर्म का निर्वहन करते हुए मेवाड़ को अजेय बना दिया। आज आवश्यकता है कि हमें विरासत में मिली प्रताप की चेतना को पुनजागृत करें तभी हम विलुप्ति के कगार पर पहुंची मेवाड़ की दिव्य विरासत को बचा पायेंगे। उन्होंने कहा कि अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि एकलिंगजी मंदिर के पास ही राजा भर्तहरी की गुफा है जो विंध्यवासिनी मंदिर के सम्मुख है। राजा विक्रमादित्य भर्तहरी के छोटे भाई थे, पिता राजा गंधर्व सेन ने भर्तहरी को उत्तराधिकारी बनाया किन्तु उन्होंने अपने भाई को सिंहासन सौंपकर सन्यास ले लिया। यह स्थल ईसापूर्व प्रथम शताब्दी से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार विरासत से जुड़े अनेक छोटे-बड़े मंदिर और कलात्मक पुरास्थल अतिक्रमण के शिकार हो रहे है।

बी.एन.विश्वविद्यालय फामेर्सी के विभागाध्यक्ष डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने कहा कि हमें बिना विलम्ब किए सक्रिय जनभागीदारी से मेवाड़ की विरासतों को सुरक्षित करना होगा। विरासत संरक्षण समिति, देलवाड़ा के बहादुर सिंह चूंडावत, कुश्ती कोच कैलाश पालीवाल, एडवोकेट भरत कुमावत, बाबुलाल गमेती आदि ने भी अध्ययन के बाद आयोजित संवाद में भागीदारी की।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, गुरुवार, 29 जुलाई, 2021



## विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कई आयोजन

# संतुलन के लिए संग्रह प्रवृत्ति पर अंकुश लगे

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

**उदयपुर.** विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर बुधवार को शहर में कई आयोजन हुए। शान्तिपीठ की ओर से आयोजित संवाद में संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवदी ने कहा कि प्रकृति के नियमों के विपरीत जाकर मानव संस्कृति सुरक्षित नहीं रह सकती। अरावली की पहाड़ियों एवं प्राकृतिक स्त्रोतों के मध्य शौर्य, त्याग और प्रकृति उपासना की चेतना विकसित हुई, जो यहां की पहचान बनी। यदि हम इस निधि को बचा पाने में सफल हुए तो भविष्य भी संकटों से मुक्त होगा। भूगोलवेत्ता डॉ. पी.आर.व्यास ने प्रकृति में संतुलन बनायें रखने के लिए मानव की संग्रह प्रवृत्ति पर अंकुश लगाए जाने की आवश्यकता बताई। इस दौरान सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता जी.पी.सोनी, मोती सिंह राणावत आदि ने भी विचार व्यक्त किए। झील प्रेमियों की ओर से आयोजित संवाद में जल विशेषज्ञ डॉ. अनिल मेहता ने कहा कि पृथ्वी को बचाने एवं प्रकृति के संरक्षण की जिम्मेदारी प्रत्येक नागरिक की है। प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने के लिए हमारी झीले ,पानी, हवा, मिट्टी, वनस्पति, पशु-पक्षियों को सुरक्षित-संरक्षित करते हुए उन्हें सुरक्षा देने की जरूरत है। झील प्राधिकरण के सदस्य तेज शंकर पालीवाल, गांधी मानव कल्याण सोसायटी के निदेशक नंद किशोर शर्मा, भोमट विकास मंच के परियोजना प्रबंधक मयंक नागदा, कुशल रावल आदि ने विचार रखे। भारत विकास परिषद राजस्थान दक्षिण प्रांत, आलोक संस्थान और इन्टरेक्ट क्लब आलोक के तत्वाधान में आलोक संस्थान में प्रकृति वन्दन कार्यक्र म किया गया। अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष डॉ. प्रदीप कुमावत ने की। उन्होंने कहा कि प्रकृति के अनेक ऐसे तथ्य है जो आज भी अनसुलझे हैं। इस अवसर पर शशांक टांक, प्रतीक कुमावत, दीपक चौबीसा, नवीन चौबीसा आदि उपस्थित थे।



उदयपुर. पूजन कार्यक्रम के दौरान मौजूद लोग। पत्रिका

**विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर प्रकृति पूजन:** विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर सेवा भारती उदयपुर की ओर से कृष्णकांत कुमावत अध्यक्ष, प्रताप नगर विकास समिति एवं गोपाल कनेरिया, सेवा भारती चित्तौड़ प्रान्त प्रचार मंत्री के आतिथ्य एवं महेश साहू अध्यक्ष छत्रपति शिवाजी नगर की अध्यक्षता में प्रकृति पूजन कार्यक्रम हुआ। इसमें वृक्ष एवं जल का पूजन व आरती कर जल, जंगल, जीव और वनस्पति के संरक्षण का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर दिनेश, मुकल मेहरा, पंकजसिंह, रेखा आमेटा, प्रीतम कौर, विमला साहू, कांता चौहान, प्रतिभासिंह आदि उपस्थित थे।

### विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर वेबिनार

**उदयपुर.** भारतीय सांस्कृतिक निधि, इंटैक, उदयपुर चैप्टर एवं मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के भू-विज्ञान महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को गोविंद गुरु जनजाति विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी के मुख्य आतिथ्य में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर वेबिनार हुआ। अध्यक्षता इंटैक उदयपुर चेप्टर के संयोजक ललित पांडेय ने की। डा. बीपी भटनागर, डॉ. सुनील दुबे, प्रो. रितेश पुरोहित, सुनील वशिष्ठ, प्रो. महीप भटनागर, पी एस राणावत ने विचार व्यक्त किए। सह संयोजक गौरव सिंघवी ने आभार जताया। संचालन डॉ. हरीश ने किया।

City भास्कर

**विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस** • इंटेक उदयपुर और सुखाड़िया विश्वविद्यालय की वेबिनार में विशेषज्ञों ने रखी राय

# पर्वत-पानी उदयपुर के प्राण, इन्हें सहेजें, तभी हम भी सुरक्षित

**उदयपुर|** विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर बुधवार को कई संस्थाओं की वेबिनार हुईं और पौधे रोपे गए। भारतीय सांस्कृतिक निधि (इंटेक), उदयपुर चैप्टर और सुविवि के भू-विज्ञान महाविद्यालय की वेबिनार में मुख्य अतिथि गोविंद गुरु जनजाति विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी ने कहा कि प्रकृति संरक्षण के लिए हमें उपभोक्तावादी संस्कृति के स्थान पर 'जो प्राप्त है, वह पर्याप्त है' के सिद्धांत को अपनाना होगा। विशिष्ट अतिथि इंटेक के पूर्व संयोजक डॉ. बीपी भटनागर ने कहा कि बचपन से ही प्रकृति के प्रति आस्था विकसित करना जरूरी है। अध्यक्षता करते हुए इंटेक उदयपुर के संयोजक ललित पांडेय ने कहा कि वैदिक धर्म का अनिवार्य भाग शांति पाठ भारतीयों में प्राचीन काल से ही प्रकृति संरक्षण के प्रति चेतना को स्वयं सिद्ध करता है। डीडवाना राजकीय महाविद्यालय के सह आचार्य डॉ. अरुण व्यास, डॉ. सुनील दुबे, प्रो. रितेश पुरोहित आदि ने भी विचार रखे। इधर, शान्तिपीठ का संवाद कार्यक्रम हुआ। इसमें संस्थापक महासचिव अनन्त



विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर भारती विकास परिषद का कार्यक्रम।

गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अरावली की पहाड़ियां एवं प्राकृतिक स्रोतों के मध्य शौर्य, त्याग और प्रकृति उपासना की चेतना विकसित हुई जो यहां की पहचान बनी। यदि हम इस निधि को बचा पाने में सफल हुए तो न केवल अतीत का गौरव अक्षुण्ण रहेगा बल्कि दांव पर लगा भविष्य भी संकटों से मुक्त होगा। भूगोलवेत्ता डॉ. पीआर व्यास ने भी विचार रखे। भारत विकास परिषद राजस्थान दक्षिण प्रांत और इन्टरेक्ट क्लब आलोक का प्रकृति वंदन कार्यक्रम हुआ। इस मौके पर भाविप परिषद राजस्थान दक्षिण प्रांत के अध्यक्ष डॉ. प्रदीप कुमावत ने लोगों को प्रकृति का दोहन नहीं करने, पौधे रोपण करने, पानी बचाएंगे,, प्रदूषण नहीं फैलाने और पॉलीथीन का प्रयोग नहीं करने की शपथ दिलाई। शशांक टांक, दीपक चौबीसा, नवीन चौबीसा, राजेश कुमावत, मनमोहन भटनागर मौजूद थे। सेवा भारती का प्रकृति पूजन का कार्यक्रम हुआ। इसमें वृक्ष और जल का पूजन किया गया। कृष्णकांत कुमावत, गोपाल कनेरिया, महेश साहू मौजूद थे। झील प्रेमियों का विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर संवाद हुआ। इसमें जल विशेषज्ञ डॉ. अनिल मेहता ने कहा कि पृथ्वी को बचाने एवं प्रकृति के संरक्षण की जिम्मेदारी प्रत्येक नागरिक की है। गांधी मानव कल्याण सोसायटी के निदेशक नंद किशोर शर्मा, मयंक नागदा, कुशल रावल आदि मौजूद थे। विराटेश्वरी दुर्गा माता मंदिर समिति ने 80 पौधे रोपे। भूपालसिंह राठौड़, हिमांशु शर्मा, नरेंद्र सिंह राठौड़ मौजूद थे।

दैनिक भास्कर उदयपुर, सोमवार 14 जून, 2021

# प्रताप राष्ट्र की गरिमा, शक्ति और अजेय साहस की प्रेरणा

शान्तिपीठ के संवाद में संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि महाराणा प्रताप राष्ट्र की गरिमा, शक्ति और साहस की नित नूतन प्रेरणा हैं। प्रो. एसआर व्यास, डॉ. ललित पाण्डेय ने भी विचार रखे। अध्यक्षता चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने की। कायस्थ महासभा की महाराणा प्रताप के हस्तलिखित पत्र विषयक ऑनलाइन संगोष्ठी हुई। इतिहासविद डॉ. गोविंद लाल मेनारिया, वाय.के. बोलिया ने विचार रखे। महाराणा प्रताप स्मारक आंदोलन समिति ने डबोक में प्रताप को पुष्पांजलि दी। जय भोमियाजी बावजी नवयुवक मंडल, पानेरियों की मादड़ी के राकेश नाथावत, देवेंद्र मेनारिया, धर्मेंद्र नेतावत ने प्रताप को पुष्पांजलि दी। फैन्स ऑफ भगत सिंह टीम ने भी प्रताप को पुष्प अर्पित किए। तीतरड़ी में सर्व समाज ने पुष्पांजलि दी। ब्राह्मण परिषद ने नगर निगम में प्रताप की प्रतिमा पर पुष्प वर्षा की। सेवा भारती ने गाडोलिया लोहार समाज, प्रतापनगर के साथ प्रताप जयंती मनाई। प्रान्त प्रचार मंत्री गोपाल कनेरिया, निमंतीलाल आमेटा मौजूद थे। योगाचार्य प्रीतम सिंह चूंडावत ने 481 सूर्य नमस्कार कर प्रताप को नमन किया। आलोक संस्थान, भारत विकास परिषद दक्षिण प्रांत राजस्थान, भारत विकास परिषद मेवाड़, बजरंग सेना, इंस्पायरो, रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3054 जोन के साझे में श्रीराम मंदिर, सेक्टर-11 में प्रताप प्रतिमा का दुग्धाभिषेक हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. प्रदीप कुमावत थे। हिन्दू जागरण मंच ने ठोकर चौराहा रेलवे स्टेशन स्थित प्रताप प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। टाउनहॉल के शहीद स्मारक परिसर में महाराणा प्रताप प्रतिमा पर मेयर जी.एस. टांक, डिप्टी मेयर पारस सिंघवी और पार्षदों ने पुष्पांजलि दी। बड़गांव पंचायत में सरपंच संजय शर्मा, उप सरपंच मीनाक्षी सुथार, वार्ड पंच निशा शर्मा और ग्रामीणों ने नमन किया। इधर शहर विधायक गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि जीवन मूल्यों के लिए लड़ने वालों की ईश्वर हर प्रकार से मदद करता है। हम महाराणा प्रताप के जीवन मूल्यों के लिए संघर्षरत रहें, यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जनता सेना नेता मांगीलाल जोशी और कार्यकर्ताओं ने भी टाउनहॉल में महाराणा प्रताप को नमन किया। उधर, भाजपा शहर जिलाध्यक्ष रवींद्र श्रीमाली, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, भाजपा के राष्ट्रीय परिषद सदस्य ताराचंद जैन, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य प्रमोद सामर, पूर्व सभापति युधिष्ठिर कुमावत, महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. अलका मुंदड़ा ने राणा प्रताप नगर रेलवे स्टेशन परिसर में प्रताप प्रतिमा पर पुष्प चढ़ाए। वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रेम सिंह शक्तावत, तख्त सिंह शक्तावत, रवि नाहर, युवा मोर्चा शहर जिलाध्यक्ष गजेंद्र भंडारी, कविता जोशी, सत्यनारायण मोची भी मौजूद थे।



आलोक संस्थान



हिन्दू जागरण मंच



भाजपा राणा प्रताप मंडल



महादेव सेना

## कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने किया 54 यूनिट रक्तदान



प्रताप जयंती पर युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नयाखेड़ा में रक्तदान शिविर रखा। इसमें 54 यूनिट रक्तदान हुआ। साथ ही 127 लोगों का अगले शिविर के लिए रजिस्ट्रेशन किया गया। गिर्वा प्रधान सज्जन कटारा और एआईसीसी मैंबर विवेक कटारा ने रक्तदाताओं का उत्साह बढ़ाया। तुलसी के पौधे भी बांटे गए। ओनार सिंह सिसोदिया, हरिसिंह देवड़ा, मगन गमेती, युवा कांग्रेस अध्यक्ष किशन डांगी, गोपाल पारगी, पूर्व सरपंच बाबूलाल आदि मौजूद थे।

ब्राह्मण हिंदुत्व शक्ति मोर्चा के प्रदेश सचिव जिग्नेश शर्मा, योगाचार्या मनिता शर्मा, प्रदेश संस्कार सचिव भूपेंद्र शर्मा ने यज्ञ और सूर्य नमस्कार कर प्रताप को पुष्पांजलि दी। अन्नपूर्णा माताजी धर्मोत्सव समारोह समिति ने महाराणा प्रताप की अश्वारूढ़ प्रतिमा पर पुष्पांजलि दी। महाराणा प्रताप सेना ने भी पुष्पांजलि दी। उदयपुर साइकलिंग क्लब ने दुलावतों का गुड़ा स्थित ऐतिहासिक मायरा की गुफाओं तक साइकलिंग की। श्रीराम सेना ने राणा प्रताप नगर रेलवे स्टेशन पर प्रताप प्रतिमा पर जलाभिषेक किया। हेल्पिंग यूथ संस्थान ने मादड़ी औद्योगिक क्षेत्र में राशन सामग्री बांटी। मेवाड़ राजपूत सेवा संस्थान, गोवर्धन विलास ने पुष्पांजलि अर्पित की। कांग्रेस शिक्षक प्रकोष्ठ की ओर से महाराणा प्रताप का सामाजिक न्याय एवं समरसता पर वेबिनार हुआ। मंसूरी समाज की ऑनलाइन बैठक में अध्यक्ष यूनुस मंसूरी ने कहा कि महाराणा प्रताप राष्ट्र के गौरव है। महाराणा प्रताप युवा सेना ने शिव मंदिर, चित्रकूट नगर में पुष्पांजलि दी। राजस्थान विद्यापीठ के साहित्य संस्थान की ऑनलाइन संगोष्ठी हुई। कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि प्रताप सर्वधर्म समभाव के पैरोकार थे। उनकी सेना में हर वर्ग के योद्धा थे। महादेव सेना ने तीतरड़ी में महाआरती कर पौधे रोपे व राशन किट बांटे। संस्थापक राजेंद्र सिंह भाटी, ओनार सिंह सिसोदिया मौजूद थे। लेकसिटी न्यूमिस्मैटिक सोसायटी ने हर-हर राणा घर-घर राणा कार्यक्रम शुरू किया। महेश जैन ने बताया कि कोरोना वॉरियर्स को महाराणा प्रताप का सिक्का भेंट कर सम्मानित किया गया। एमपीयूएटी में छात्र कल्याण निदेशालय के कार्यक्रम में कुलपति डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़, छात्र कल्याण निदेशालय अधिकारी डॉ. सुधीर जैन आदि ने हिस्सा लिया। संभागीय अनुसूचित जाति जनजाति संघर्ष मोर्चा ने भी प्रताप को नमन किया।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, शनिवार 5 जून, 2021

# हमने प्रकृति को संकट में डाला, अब प्रकृति भी बढ़ा रही हमारे लिए संकट

## पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर अरावली की दशा और प्रत्यास्थापन पर मंथन

**उदयपुर** | प्रकृति से इंसान के बिगड़े तालमेल और निरंकुश विकासवाद के चलते हम पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को खंड-खंड कर चुके हैं। दुष्परिणाम यह है कि अस्तित्व मात्र पर संकट आए हैं और हम इसके प्रत्यास्थापन के लिए चिंतित भी हो उठे हैं। ये विचार विश्व पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर शुक्रवार को शान्तिपीठ की मेजबानी में अरावली की दशा और प्रत्यास्थापन विषयक वेबिनार में सामने आए। अध्यक्षता करते हुए विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि अरावली के हालात बदतर हो गए हैं। चिंता यह भी है कि पारिस्थितिकी तंत्र कैसे मजबूत रह पाएगा। भूगोलविद प्रो. पी.आर. व्यास ने उदयपुर की झीलों के



पश्चिमी भाग में स्थित प्राकृतिक प्रवाह क्षेत्र को संरक्षित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि यहां किसी भी प्रकार के स्ट्रक्चर या संरचना विकसित नहीं करना किसी भी सूरत में ठीक नहीं। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित थीम का उल्लेख करते हुए कहा कि जो विरासत में मिला, उसे मानव जाति सहेज नहीं पा रही।

**ग्रीन पीपल्स सोसायटी की वेबिनार आज** : ग्रीन पीपल्स सोसायटी की वेबिनार शनिवार सुबह 11 बजे होगी। अध्यक्ष एवं सेवानिवृत सीसीएफ डॉ. राहुल भटनागर ने बताया कि इको सिस्टम रीस्टोरेशन थीम पर वेबिनार को ख्यातनाम वैज्ञानिक डॉ. के.एस. गोपी सुन्दर और पर्यावरणविद व सेवानिवृत आईएएस विक्रम सिंह संबोधित करेंगे।

**निबंध प्रतियोगिता के परिणाम घोषित** : अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर हुई सोसायटी की निबंध प्रतियोगिता के परिणाम घोषित कर दिए गए हैं। इसमें 109 प्रविष्टियां आई थीं। प्रथम स्थान पर डॉ. हंसा हिंगड़, द्वितीय धीरज बैरागी और तृतीय स्थान पर मनप्रीत कौर रहीं।विजेताओं को ई-सर्टिफिकेट और पुरस्कार राशि ऑनलाइन भेजी जाएगी।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शनिवार, 5 जून 2021

# निरंकुश विकास वाद ने बिगाड़ा पर्यावरण

**उदयपुर।** प्रकृति और मानव के बीच असामंजस्य तथा निरंकुश विकास वाद के चलते हम समग्र पारिस्थितिकी तंत्र को विखंडित कर चुके हैं और दुष्परिणाम स्वरूप अस्तित्व मात्र पर आये संकटों का अहसास करते हुए इसके प्रत्यास्थापन के लिए चिंतित हो उठे हैं। इससे पर्यावरण संतुलन बिगड़ गया है। उक्त विचार विश्व पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ द्वारा अरावली की दशा और प्रत्यास्थापन विषयक वेबिनार में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो एस एस सारंगदेवोत ने अरावली के क्रंदन पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि अत्यधिक खनन की वजह से इसका आकार खण्डित होते रहने से पश्चिम में पसरा रेगिस्तान इन पहाड़ियों में दाखिल हो गया है। भूगोल विद् प्रो पीआर व्यास ने उदयपुर की झीलों के पश्चिमी भाग में स्थित प्राकृतिक प्रवाह क्षेत्र की संरक्षित करने की आवश्यकता बताई। पूर्व नगर नियोजक सतीश श्रीमाली ने किसी भी प्रकार के दबाव से मुक्त होकर पर्यावरण संरक्षण के बहुआयामी कार्यों को निष्पादित करने पर बल दिया। शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जो विरासत में मिला उसे सहेज नहीं पाये। पुरातत्व विद् डॉ ललित पाण्डेय ने कहा कि प्राचीन समय से हम पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र को अपने अनुकूल बनाने की जद्दोंजहद में संलग्न हैं। चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने विकास और पर्यावरणीय विकास, एडवोकेट मोती सिंह राणावत ने गुरुकूल संस्कृति की ओर लौटने की आवश्यकता पर जोर दिया। सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता ज्ञान प्रकाश सोनी, जन स्वास्थ्य विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता निर्मल चित्तौड़ा ने पानी का मितव्ययिता से उपयोग एवं भूजल दोहन समझ पर गंभीरता व्यक्त की।

dainiknavajyoti.com दैनिक नवज्योति

# धरती को जैविक इकाई मान गतिविधियां ठीक करें : सारंगदेवोत

**ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर।** राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने गुरुवार को विश्व पृथ्वी दिवस पर कहा कि ब्रह्मांड में पृथ्वी एक ऐसा ग्रह है जिसमें जीवन है। जीवन को बचाना है तो पहले पृथ्वी को बचाना होगा। भारत में वसुधा को पूजने की परंपरा रही है, उपनिषदों में पृथ्वी को वसुधा कहा गया है। धरती जल आकाश से बनी वसुधा यानी पृथ्वी आज मानवीय भूलों की वजह से बड़े संकट से जूझ रही है।

## पृथ्वी के प्राकृतिक तंत्र पर पड़ रहा प्रतिकूल प्रभाव

मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय के भूविज्ञान विभाग, जियोसाईन्टिस्ट सोसायटी ऑफ राजस्थान एवं इंटैक चैप्टर के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पृथ्वी दिवस पर वेबिनार हुआ। इसमें विज्ञान महाविद्यालय के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. विनोद अग्रवाल ने कहा कि विगत कुछ वर्षों से मानवीय गतिविधियों के कारण पृथ्वी के प्राकृतिक तन्त्र पर प्रतिकूल प्रभाव पडे हैं, उसके चलते आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरणीय समस्याओं से प्रभावित हो रहा है। प्रारम्भ में पृथ्वी विज्ञान संकाय के अध्यक्ष प्रो. बीआर बामनिया ने कहा कि 19 वीं सदी में हुई औद्योगिक क्रान्ति के बाद से ही विश्वव्यापी पर्यावरणीय समस्याओं में निरन्तर बढ़ोतरी हुई है।

## माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः के भाव से ही बचेगी धरती

विद्या भवन पोलिटेक्निक के प्राचार्य डॉ अनिल मेहता ने कहा कि धरती की सहनीय व स्व संवर्धन क्षमता से अधिक आघात पहुंचाने को रोकना होगा। माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः यह धरती मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूं, के भाव ही पर्यावरण की समस्त समस्याओं को दूर कर सकता है। झील प्रेमी तेज शंकर पालीवाल, गांधी मानव कल्याण समिति के निदेशक नंद किशोर शर्मा, कुशल रावल, पर्यावरण प्रेमी पल्लब दत्ता, द्रुपद सिंह ने भी विचार रखे।

## विकास की विवेकहीन रफ्तार से प्राणी मात्र का अस्तित्व दांव पर

हमारे विकास की विवेकहीन रफ्तार ने धरती के पारिस्थितिकी सन्तुलन को इस स्तर तक विघटित कर दिया है कि प्राणी मात्र का अस्तित्व दांव पर लग चुका है। यह विचार शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में वेबिनार में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। मो.सु. विश्वविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो नीरज शर्मा, भूगोल विद् प्रो पी आर व्यास, वरिष्ठ पत्रकार राकेश अग्रवाल, शान्तिपीठ संस्थान के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, प्रो उदय पालीवाल, डॉ बी के जोशी, डा अनिता राठौड़, डॉ अम्बा लाल कटारा, डॉ ललित पाण्डेय, डॉ आर बी कुमार आदि ने विचार व्यक्त किये। पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित वर्चुअल संगोष्ठी में पशुपालन, पर्यावरण, वनसम्पदा, वन्यजीव एवं जैव विविधता सम्बन्धी विषयों पर चर्चा की। संस्थान के डॉ. सुरेन्द्र छंगाणी, डॉ सुरेश शर्मा, डॉ. पदमा ने विचार रखे। आलोक संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन वेबिनार के मुख्य वक्ता आलोक संस्थान के निदेशक और पर्यावरण विद डॉ प्रदीप कुमावत ने कहा कि केवल पेड़ लगाना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना पेड़ को बड़ा करना महत्वपूर्ण है। ऑनलाइन पेंटिंग प्रतियोगिता में



आलोक संस्थान


स्काउट गाइड




पौधरोपण

छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। पर्यावरण रक्षा संस्थान द्वारा पशुपतिनाथ पार्क सेक्टर 11 में पौधरोपण कर भगवान महाकाल से कोरोना महामारी से मानव प्रजाति की रक्षा हेतु प्रार्थना की। संस्थापक कमलेन्द्र सिंह कांकरवा ने वर्तमान स्थिति में आक्सीजन की महत्ता को रेखांकित करते हुए आमजन से स्थानीय पर्यावरण के संरक्षण हेतु एक पौधा लगाने एवं प्रदूषण कम करने की अपील की। इस अवसर पर अध्यक्ष डॉ प्रद्युम्न सिंह, इन्द्र सिंह राणावत, दिपक टेलर, दिनेश श्रीमाली, राव प्रेमरतन सिंह, भंवर सिंह जोलावास मौजूद रहे। अखिल विश्व ब्राह्मण हिंदुत्व शक्ति मोर्चा प्रदेश सचिव जिग्नेश शर्मा एवं जिलाध्यक्ष उमेश चंद्र श्रीमाली द्वारा पर्यावरण शुद्धि के लिए औषधीय गुणों से युक्त सामग्री से यज्ञ किया गया। डाकन कोटड़ा क्षेत्र में पौधरोपण एवं यज्ञ अनुष्ठान कर धरती माता को सभी जीवों के लिए रहने योग्य बनाने हेतु पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया गया। संस्थान के महामंत्री प्रकृति प्रेमी प्रीतम सिंह चुण्डावत, डॉ भूपेंद्र शर्मा ने विचार व्यक्त किए। संस्कार भारती चित्तौड प्रांत द्वारा आयोजित भू अलंकरण दिवस पर धरा सजाओ कार्यक्रम में उदयपुर की कलाकार प्रीति नन्दवाना ने आकर्षक बहुरंगी रंगोली से भावों को अभिव्यक्ति प्रदान की।

पत्रिका डिजिटल कनेक्ट
patrika.com
खबरें pat

## विश्व विरासत दिवस पर संगोष्ठी व संवाद का आयोजन

# मौजूदा दौर में आयुर्वेद का संरक्षण व विकास जरूरी : डॉ.भटनागर

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

**उदयपुर.** पहाड़ों, जंगलों में पाई जाने वाली विलुप्त होती महत्वपूर्ण औषधियों, वनस्पतियों के साथ प्राचीन परंपरागत चिकित्सा पद्धति आदि का संरक्षण व आधुनिक तौर पर विकास अत्यंत आवश्यक है। ये विचार भारतीय चिकित्सा विकास परिषद के अध्यक्ष डॉ मनोज भटनागर ने विश्व विरासत दिवस के अवसर पर भारतीय चिकित्सा विकास परिषद उदयपुर द्वारा आयोजित आयुर्वेद की प्राचीनता एवं आधुनिक युग में महत्व विषयक ऑनलाइन संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए। मुख्य अतिथि राजस्थान आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी संघ उदयपुर के अध्यक्ष डॉ. गुणवंत सिंह देवड़ा व विशिष्ट अतिथि इतिहासकार प्रो. गिरीश नाथ माथुर, डॉ. संगीता भटनागर, वैद्य सावित्री देवी भटनागर, डॉ. महेश शर्मा ने भी विचार रखे। संयोजन शिरीष नाथ माथुर ने किया ।

इधर, झील मित्रों की ओर से आयोजित संवाद में जल विशेषज्ञ डॉ. अनिल मेहता ने कहा कि एक दूसरे से जुड़ी झीलों, पहाड़ों से बहकर आने वाले पानी को सहेजने के लिए बने तालाबों व आयड़ नदी का यह सम्पूर्ण तंत्र समृद्ध जैव विविधता का पोषक रहा है। इस अद्वितीय विरासत के मूल स्वरूप का बिगड़ना उदयपुर के लिए बुरे भविष्य की चेतावनी है। पर्यावरणविद् नंद किशोर शर्मा, पल्लब दत्ता व कुशल रावल ने भी विचार रखे।

ऐतिहासिक दरवाजों को जनता क्लिनिक के रूप में उपयोग लिया जाए विश्व विरासत दिवस के अवसर पर इंटैक भारतीय सांस्कृतिक निधि की ओर से वर्चुअल संगोष्ठी हुई। स्मार्ट सिटी द्वारा शहर के ऐतिहासिक दरवाजों पर 36 करोड़ रुपए खर्च कर जीर्णोद्धार किया गया है। किंतु जीर्णोद्धार के साथ ही इनका संरक्षण भी जरूरी है। मुख्य वक्ता प्रो. महेश शर्मा ने कहा कि इन विभिन्न दरवाजों के कक्षों में कांच की दीवारों से उन्हें बढ़िया आकार दिया गया है अतः उनका उपयोग मुख्यमंत्री द्वारा पिछले बजट में घोषित जनता क्लिनिक के रूप में किया जाना चाहिए। इंटैक की स्थानीय इकाई के संयोजक प्रो.बी.पी.भटनागर ने कहा कि किसी भी ऐतिहासिक विरासत का सफल संरक्षण तभी सम्भव है जब उस इमारत का वास्तविक उपयोग किया जाए और ये विरासतें अपने पैरों पर खड़ी हो कर अपने रख रखाव के राजस्व को कमाने की स्थिति में हो।

वास्तु एवं शहरी विकास समन्वयक सतीश श्रीमाली, अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक राजस्थान तथा प्रो. महेश शर्मा, ललित नलवाया, गौरव सिंघवी आदि ने भी विचार रखे।

## धरोहर की सुरक्षा के लिए हो जनभागीदारी : प्रो. सारंगदेवोत

**जनार्दनराय नागर** राजस्थान विद्यापीठ के संघटक साहित्य संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण जोधपुर व जयपुर मंडल, पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग राजस्थान सरकार के तत्वावधान में ऑनलाइन संगोष्ठी हुईअध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि दुनिया में कहीं भी भारत की संस्कृति और विरासत का मुक़ाबला नहीं है। धरोहर की सुरक्षा के लिए जनभागीदारी होनी चाहिए। विरासत को बचाने के लिए विद्यापीठ अपनी स्थापना से ही साहित्य संस्थान



विभाग के माध्यम से यह कार्य कर रहा है। हाल ही में संस्थान द्वारा डबोक परिसर में स्थित कर्नल टॉड हॉल, 250 वर्ष पुरानी प्राचीन बावड़ी व सरस्वती मंदिर को भी मूर्तरूप में लाने का काम शुरू कर दिया है। विशिष्ट अतिथि पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग की उपनिदेशक डॉ. कृष्णकांता शर्मा, डॉ. विपिन चंद्र नेगी - अधीक्षण पुरातत्वविद् , जोधपुर मंडल जोधपुर, डॉ. प्रवीण सिंह - अधीक्षण पुरातत्वविद् जयपुर मंडल, मुख्य अतिथि डॉ. रीमा हूजा - निदेशक सिटी पैलेस जयपुर, पूर्व मंत्री ओंकार सिंह लखावत, डॉ. जीवनसिंह खरकवाल व डॉ. कुलशेखर व्यास ने भी विचार रखे। इधर, शान्तिपीठ की ओर से आयोजित ऑनलाइन गोष्ठी में ऑस्ट्रेलिया, वियतनाम, इथोपिया सहित हैदराबाद दिल्ली, शिमला, अहमदाबाद, ओडिशा आदि के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत विद्वानों ने सहभागिता की। गोष्ठी में संस्कारों, रीति-रिवाजों, खानपान व वेशभूषा की बहुरंगी विरासत के संरक्षण व संवर्द्धन पर बल दिया गया। इसमें इथोपिया के डॉ. मुलुनेह फ्रोम्सा, वियतनाम के डॉ. सूरज भगत, ऑस्ट्रेलिया के सुनील ठक्कर सहित वरिष्ठ चिंतक व पूर्व प्रशासक मोहन सिंह कोठारी, शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, पुरातत्वविद् डॉ. ललित पांडे, डॉ. जी.एल.मेनारिया आदि ने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने किया।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, सोमवार, 19 अप्रैल, 2021

# आयुर्वेद भी विरासत, इसका संरक्षण और विकास जरूरी : डॉ. भटनागर

उदयपुर | विश्व विरासत दिवस पर रविवार को भारतीय चिकित्सा विकास परिषद की मेजबानी में आयुर्वेद की प्राचीनता एवं आधुनिक युग में महत्व विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी हुई। परिषद अध्यक्ष डॉ. मनोज भटनागर ने कहा कि भारतीय अष्टांग आयुर्वेद चिकित्सा और परंपरागत सुगम चिकित्सा पद्धति हमारी विरासत है। आयुर्वेद के सिद्धांतों पर चलकर प्राचीन काल में लोगों ने पुरुषार्थ प्राप्त किया था, लेकिन वर्तमान में उत्पन्न भयंकर रोग आरोग्य को नष्ट कर रहे हैं। ऐसे में जीवन को बचाने के लिए हमारे पहाड़ों, जंगलों में पाई जाने वाली विलुप्त होती औषधियों, वनस्पतियों से परंपरागत चिकित्सा पद्धति और आयुर्वेद में अनुसंधान के संरक्षण और आधुनिक विकास बहुत जरूरी है। डॉ. गुणवंत सिंह देवड़ा, इतिहासकार प्रो. गिरीश [illegible]थुर, डॉ. संगीता भटनागर, वैद्य सावित्री देवी भटनागर, डॉ. महेश शर्मा आदि मौजूद थे। इधर, राजस्थान विद्यापीठ के साहित्य संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण जोधपुर व जयपुर मंडल, पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग की आजादी के 75 वर्ष और राजस्थान का पुरातत्व विषय पर राष्ट्रीय ऑनलाईन संगोष्ठी हुई। इसमें कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि दुनिया में कही भी भारत की संस्कृति और विरासत का मुकाबला नहीं है।

## कल्याण और समृद्धि का भाव भारत की विरासत में समाहित



जटिल भूतकाल व विविध भविष्य विषय पर शान्तिपीठ की ऑनलाइन गोष्ठी हुई। इसमें ऑस्ट्रेलिया, वियतनाम, इथोपिया सहित हैदराबाद, दिल्ली, शिमला, अहमदाबाद, ओडिशा आदि के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत विद्वानों ने भाग लिया। अध्यक्षता करते हुए मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि सबके कल्याण और समृद्धि का भाव भारत की विरासत में समाहित है। अनंत गणेश त्रिवेदी ने अनेकता में एकता तथा वसुधैव कुटुंबकम को विरासत सहेजने मूल मंत्र बताया। इथोपिया के डॉ. मुलुनेह फ्रोम्सा, वियतनाम से डॉ. सूरज भगत, ऑस्ट्रेलिया से सुनील ठक्कर, डॉ. ललित पांडे, डॉ. जी.एल. मेनारिया, डॉ. विवेक भटनागर, डॉ. एलडी पटेल, आरसी भट्ट, डॉ. आरबी कुम्हार ने भी विचार रखे।

**ऐतिहासिक दरवाजों को जनता क्लीनिक की तरह काम लें** : भारतीय सांस्कृतिक निधि, इंटेक की वर्चुअल संगोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि स्मार्ट सिटी के तहत विरासत के जीर्णोद्धार का काम हुआ है। अब स्वरूप ऐसा ही रहे, यह भी जरूरी है। ऐतिहासिक दरवाजों को जनता क्लीनिक के रूप में काम लिया जाए। संयोजक प्रो. बीपी भटनागर ने कहा कि ऐतिहासिक विरासतों का वास्तविक उपयोग भी हो। राज्य के पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक सतीश श्रीमाली, महेश शर्मा, ललित नलवाया और गौरव सिंघवी ने भी विरासत संरक्षण के सुझाव दिए।

**कुदरत की अनमोल धरोहर है उदयपुर** : झील प्रेमियों के संवाद में डॉ. अनिल मेहता ने कहा कि पहाड़ियों से घिरा उदयपुर अनमोल प्राकृतिक विरासत है। पहाड़ों से बहकर आने वाले पानी को सहेजने के लिए बने तालाबों व आयड़ नदी का यह सम्पूर्ण तंत्र समृद्ध जैव विविधता का पोषक रहा है। तेज शंकर पालीवाल, नंद किशोर शर्मा, पल्लब दत्ता, कुशल रावल ने भी विचार रखे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, गुरुवार, 04 मार्च, 2021

# जाना कल्याणपुर क्षेत्र का महत्व

## अभियान के तहत सर्वेक्षण



**उदयपुर@ पत्रिका.** शान्तिपीठ संस्थान के पर्यावरण एवं दिव्य विरासत पुनरोत्थान अभियान के तहत दल ने कल्याणपुर का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण में संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी के साथ ही इतिहासविद डॉ. जी.एल. मेनारिया, उच्च न्यायालय के अधिवक्ता मोतीसिंह राणावत, बीएन विवि के डॉ. कमलसिंह राठौड़, भूगोलवेत्ता डॉ. करणसिंह कृष्णावत शामिल थे।

इतिहासवेत्ता डॉ. मेनारिया ने बताया कि मेवाड़ के गुहिल शासकों में बप्पारावल एवं उनके पूर्ववर्ती गुहिल नरेश ईडर में जाने के पूर्व गुजरात के वल्लभी से मेवाड़ में कल्याणपुर (किश्किंधा) में रहे थे। मेवाड़ में बप्पारावल ने राजधानी की सुरक्षा के लिए झीलों के निर्माण कार्य प्रथम बार कल्याणपुर में किए, जहां आज भी सोम नदी व उसकी सहायक नदियों के पानी से गिरे कल्याणपुर की सामरिक, राजनीतिक व व्यापारिक महत्ता बनी रही। दिल्ली से दक्षिण जाने वाले व्यापारिक मार्ग पर चित्तौड़, नागदा, आहड़, कल्याणपुर, अमझेरा (डूंगरपुर), पैठन (प्रान्तीज) अहमदाबाद, भड़ोच, अहमदनगर, दौलताबाद (देवगिरी) इत्यादि जुड़े हुए थे।

स्थानीय विद्यालय में प्राध्यापक डॉ. करणसिंह कृष्णावत ने बताया कि उदयपुर चित्तौड़ पाटनामा नामक एक पौथी से मेवाड़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा (बागड) क्षेत्र के साथ ही रामपुरा के चन्द्रावतों के राजवंशो के इतिहास की जानकारी होती है। मोतीसिंह राणावत और डॉ. कमलसिंह राठौड़ ने कहा कि कल्याणपुर पुरावेशों का दुर्लभ खजाना है इसका संरक्षण प्राथमिकता से किया जाना महत्ती आवश्यकता है। अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हमारे पुरास्थल, स्मारक, वास्तुशिल आदि हमारी समृद्ध संस्कृति के साक्षी है इनके संरक्षण व जीर्णोद्धार की विधा से युवा पीढ़ी को परिचित कराना तथा जन-जागृति पैदा करने में हमें अपने दायित्व को समझना चाहिए। पुरातत्वविद डॉ. ललित पाण्डे ने कहा कि कल्याणपुर के इतिहास को प्रकाश में लाने का श्रेय विश्वविख्यात इतिहासकार और अभिलेख शास्त्र के.पुरोधा डी.सी.सरकार को है।

दैनिक भास्कर उदयपुर, गुरुवार, 4 मार्च, 2021

# पुरातत्व स्थल का अध्ययन और सर्वेक्षण



**उदयपुर |** शांतिपीठ संस्थान के पर्यावरण और दिव्य विरासत पुनरुत्थान अभियान के तहत दल ने कल्याणपुर (ऋषभदेव) में पुरातत्व स्थल का अध्ययन और सर्वेक्षण किया। इस दौरान संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, उच्च न्यायालय के अधिवक्ता मोती सिंह राणावत, डॉ. कमल सिंह राठौड़, भूगोलवेत्ता डॉ. करण सिंह कृष्णावत, ललित पण्ड्या मौजूद थे।

**पृथ्वी दिवस •** पृथ्वी की सेहत को दुरुस्त रखने के लिए पेड़ बहुत जरूरी, इसलिए लें पौधरोपण का संकल्प

# पर्यावरणविदों ने कटते पहाड़-घटते जंगलों पर जताई चिंता, बच्चों ने पौधरोपण और पेंटिंग बनाकर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

**पर्यावरणविदों ने कहा : पर्यावरण सूचकांक में 180 देशों की सूची में भारत का 168वां स्थान चिंताजनक**

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

पृथ्वी दिवस पर गुरुवार को शहर में कई कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। कोरोना संक्रमण के चलते इस बार लोगों ने घरों में रहते हुए कार्यक्रम हुए।

शहर में बच्चों से लेकर बड़ों ने पौधारोपण, पेंटिंग और रंगोली बनाकर पर्यावरण बचाने का संदेश दिया है। शहरवासियों ने घटते जंगल और पहाड़ों पर चिंता व्यक्त की है। जंगल और पहाड़ लगातार खत्म होने से ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, अम्ल वर्षा, ओजोन परत में छेद, जैव-विविधता आदि समस्याओं से परेशान हो रहे हैं। इन समस्याओं से बचने के लिए अधिक से अधिक संख्या में पेड़ लगाने की जरूरत है।

सुविवि के भूविज्ञान विभाग, जियोसाइंटिस्ट सोसायटी ऑफ राजस्थान, इंटक उदयपुर चैप्टर की मेजबानी में वेबिनार हुआ। इसमें साइंस कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. विनोद अग्रवाल ने कहा कि विगत कुछ वर्षों से मानवीय गतिविधियों के कारण पृथ्वी के प्राकृतिक तन्त्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े हैं। इससे आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरणीय समस्याओं से प्रभावित हो रहा है। इसी कारण पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक में 180 देशों की सूचि में भारत 168वें स्थान पर है। जो कि चिंता का विषय है। पर्यावरणविद् डॉ. आरके गर्ग ने बताया कि जलवायु परिवर्तन इस सदी की सबसे बड़ी चुनौती है। जिससे पृथ्वी की प्राकृतिक संपदा नष्ट हो रही है। हमने अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण दोहन किया है उससे हम आज ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं से प्रभावित हो रहे हैं।

## जगह-जगह हवन, ऑनलाइन संगोष्ठियां हुई, कई संस्थाओं ने पौधे भी रोपे

शहरभर में जगह-जगह विभिन्न कार्यक्रम हुए। संस्कार भारती चित्तौड़ प्रांत की ओर भू-अलंकरण दिवस के मौके पर धरा सजाओ कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में प्रीति नंदवाना ने रंगोली बनाई। वार्थ योग, आयुर्वेद और यज्ञ संस्थान की ओर डाकन कोटड़ा क्षेत्र में पौधरोपण एवं यज्ञ अनुष्ठान कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। संस्थान के महामंत्री प्रीतम सिंह चूंडावत मौजूद रहे। आलोक संस्थान का ऑनलाइन वेबिनार का हुआ। डॉ. प्रदीप कुमावत ने शहर के आसपास की पहाड़ियों को तेजी से काटे जाने पर चिंता जताई। शांतिपीठ संस्थान का रिस्टोर आवर थीम पर वेबिनार हुआ। इसमें सुविवि के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि आने वाली पीढ़ियों को संसाधनों से भरपूर पृथ्वी सौंपना चाहते हैं, तो भोगवाद की जगह योगवाद को प्राथमिकता देनी होगी। नामिबिया विवि के पूर्व कुलपति प्रो. उदय पालीवाल, डॉ. बीके जोशी, डॉ. अनिता राठौड़, डॉ. अंबालाल कटारा, डॉ. ललित पांडे, डॉ. आरबी कुमार ने भी विचार रखे। पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान में ऑनलाइन संगोष्ठी हुई। इसमें डॉ. सुरेंद्र छंगाणी ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी को प्रयास करने होंगे।राजस्थान विद्यापीठ विवि के कुलपति प्रो. शिव सिंह सारंगदेवोत ने भी पृथ्वी संरक्षण पर जोर दिया।



पर्यावरण रक्षा संस्थान ने पशुपतिनाथ पार्क में पौधे रोपे।

2.

iknavajyoti.com दैनिक नवज्योति उदयपुर, बुधवार, 3 मार्च 2021 5

# मेवाड़ के ऐतिहासिक स्थलों को पर्यटन से जोड़ें

## टीम ने किया पुरा महत्व के कल्याणपुर का दौरा

**ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर।** कल्याणपुर मेवाड़ के गुहिलों की किष्किंधा शाखा की राजधानी थी तथा सभी शासक सातवीं-आठवीं शताब्दी में इस क्षेत्र में स्थापित थे। इसके अभिलेखीय साक्ष्य यह प्रमाणित करते हैं कि इनका प्रशासनिक तंत्र अत्यन्त विकसित था और इन्होंने एक सुदृढ़ सिंचाई तंत्र को विकसित किया। इससे इनकी अर्थ व्यवस्था सुदृढ़ नींव पर अवलम्बित थी। इसके अलावा यह भूभाग उत्तर गुप्तकाल में कला और शिल्प का अलौकिक केन्द्र रहा था। वर्तमान में यह भारतीय पुरातत्व विभाग का संरक्षित स्थल है। चावण्ड, सराड़ा, बलुआ, कल्याणपुर, केशरियाजी, जयसमन्द, सलूम्बर आदि में बप्पारावल, महाराणा उदयसिंह, प्रताप, जयसिंह आदि के जीवन एवं कार्यों से जुड़े महत्वपूर्ण पुरा एवं प्रेरणा स्थल हैं, जिन्हें पर्यटन की दृष्टि से एक सर्किल के रूप में जोड़ा जाए।

शान्तिपीठ संस्थान के पर्यावरण एवं दिव्य विरासत पुनरोत्थान अभियान के तहत पहुंचे एक दल ने पुरा महत्व स्थल कल्यापुर का एक दिवसीय अध्ययन एवं सर्वेक्षण किया। इसमें शामिल इतिहासविदों और विशेषज्ञों ने इन स्थलों को पर्यटन की दृष्टि से एक सर्किल के रूप में जोड़ने की मांग की। टीम में शांतिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी के साथ इतिहासविद् डॉ. जीएल मेनारिया, उच्च न्यायालय के अधिवक्ता मोतीसिंह राणावत, बी.एन.विश्वविद्यालय के डॉ. कमलसिंह राठौड़, भूगोलवेत्ता डॉ. करणसिंह कृष्णावत शामिल थे।

सर्वेक्षण व अध्ययन के दौरान इतिहासवेत्ता डॉ. जीएल मेनारिया ने बताया की मेवाड़ के गुहिल शासकों में बप्पारावल एवं उनके पूर्ववर्ती नरेश ईडर में जाने के पूर्व गुजरात के वल्लभी से मेवाड़ में कल्याणपुर (किष्किंधा) में रहे थे। उन्होंने बताया कि मेवाड़ में बप्पारावल ने राजधानी की सुरक्षा के लिए झीलों का निर्माण कार्य प्रथम बार कल्याणपुर में किया जहां आज भी सोम नदी व उसकी सहायक नदियों के पानी से घिरे कल्याणपुर की सामरिक, राजनैतिक व व्यापारिक महत्ता बनी रही।

स्थानीय सरकारी विद्यालय में प्राध्यापक डॉ. करणसिंह कृष्णावत ने बताया कि उदयपुर चितौड़ पाटनामा नामक एक पौथी से मेवाड़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा (वागड़) क्षेत्र के साथ ही रामपुरा के चन्द्रावतों के राजवंशों के इतिहास की जानकारी होती है। मोतीसिंह राणावत और डॉ. कमलसिंह राठौड़ ने कहा कि कल्याणपुर पुरावेशों का दुर्लभ खजाना है इसका संरक्षण प्राथमिकता से किया जाना महत्ती आवश्यकता है। अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हमारे पुरास्थल, स्मारक, वास्तुशिल आदि हमारी समृद्ध संस्कृति के साक्षी है इनके संरक्षण व जीर्णोद्धार की विधा से युवा पीढ़ी को परिचित कराना तथा जन-जागृति पैदा करने में हमें अपने दायित्व को समझना चाहिए। कल्याणपुर संरक्षण अध्ययन में पुरातत्वविद डॉ. ललित पाण्डे, कुमार रविन्द्र, ललित पण्ड्या, शंकर जोशी, लालूराम पटेल, मनोज जोशी आदि उपस्थित थे।

---

प्रातःकाल उदयपुर, बुधवार 3 मार्च, 2021

# कल्याणपुर मेवाड़ के गुहिलों की किष्किंधा शाखा की राजधानी

**उदयपुर (वि)।** कल्याणपुर मेवाड़ के गुहिलों की किष्किंधा शाखा की राजधानी थी तथा सभी शासक सातवीं-आठवीं शताब्दी में इस क्षेत्र में स्थापित थे। इसके अभिलेखीय साक्ष्य यह प्रमाणित करते हैं कि इनका प्रशासनिक तंत्र अत्यन्त विकसित था और इन्होंने एक सुदृढ़ सिंचाई तंत्र को विकसित किया जिससे इनकी अर्थ व्यवस्था सुदृढ़ नींव पर अवलम्बित थी। इसके अलावा यह भूभाग उत्तर गुप्तकाल में कला और शिल्प का अलौकिक केन्द्र रहा था। वर्तमान में यह भारतीय पुरातत्व विभाग का संरक्षित स्थल है। आवश्यकता है चावण्ड, सराड़ा, बलुआ, कल्याणपुर, केशरियाजी, जयसमन्द, सलूम्बर आदि में बप्पारावल, महाराणा उदयसिंह, प्रताप, जयसिंह आदि के जीवन एवं कार्यों से जुड़े महत्वपूर्ण पुरा एवं प्रेरणा स्थल हैं, जिन्हें पर्यटन की दृष्टि से एक सर्किल के रूप में जोड़ा जाए। सोमवार को शान्तिपीठ संस्थान के पर्यावरण एवं दिव्य विरासत पुनरोत्थान अभियान के तहत पहुंचे एक दल ने पुरा महत्व स्थल कल्यापुर का एक दिवसीय अध्ययन एवं सर्वेक्षण किया जिसमें संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी के साथ ही इतिहासविद् डॉ. जी.एल. मेनारिया, उच्च न्यायालय के अधिवक्ता मोतीसिंह राणावत, बी.एन. विश्वविद्यालय के डॉ. कमलसिंह राठौड़, भूगोलवेत्ता डॉ. करणसिंह कृष्णावत सम्मिलित थे।

सर्वेक्षण व अध्ययन के दौरान इतिहासवेत्ता डॉ. जी.एल. मेनारिया ने बताया की मेवाड़ के गुहिल शासकों में बप्पारावल एवं उनके पूर्ववर्ती गुहिल नरेश ईडर में जाने के पूर्व गुजरात के वल्लभी से मेवाड़ में कल्याणपुर (किष्किंधा) में रहे थे। उन्होंने बताया कि मेवाड़ में बप्पारावल ने राजधानी की सुरक्षा हेतु झीलों के निर्माण कार्य प्रथम बार कल्याणपुर में किए जहाँ आज भी सोम नदी व उसकी सहायक नदियों के पानी से गिरे कल्याणपुर की सामरिक, राजनैतिक व व्यापारिक महत्ता बनी रही। दिल्ली से दक्षिण जाने वाले व्यापारिक मार्ग पर चितौड़, नागदा, आहड़, कल्याणपुर, अमझेरा (डूंगरपुर), पैठन (प्रान्तीज) अहमदाबाद, भंडोच, अहमदनगर, दौलताबाद (देवगिरी) इत्यादि जुड़े हुए थे। दिल्ली से मुस्लिम शासको के सिंध, मुल्तान विजय के मार्ग में पड़ने वाले स्थलों में कल्याणपुर भी एक था जो गुजरात की प्राचीन रा[illegible]ी अन्हिलवाड़ा जाने वाले मार्ग पर स्थित था। अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हमारे पुरास्थल, स्मारक, वास्तुशिल आदि हमारी समृद्ध संस्कृति के साक्षी है इनके संरक्षण व जीर्णोद्धार की विधा से युवा पीढ़ी को परिचित कराना तथा जन-जागृति पैदा करने में हमें अपने दायित्व को समझना चाहिए। अभियान परिप्रेक्ष्य में पुरातत्वविद डॉ. ललित पाण्डे ने कहा कि कल्याणपुर के इतिहास को प्रकाश में लाने का श्रेय विश्वविख्यात इतिहासकार और अभिलेख शास्त्र के पुरोधा डी.सी.सरकार को है। उन्होंने पहली बार यहां से प्राप्त ताम्रपत्रों को सम्पादित कर इनका इतिहास लिखा। कल्याणपुर संरक्षण अध्ययन में कुमार रविन्द्र, ललित पण्ड्या, शंकर जोशी, लालूराम पटेल, मनोज जोशी आदि उपस्थित थे।

राजस्थान पत्रिका
patrika.com
उदयपुर, मंगलवार, 28 जुलाई, 2020

# 'विकास की आंधी ने विरासतों को उजाड़ा'



**उदयपुर.** विकास की आंधी ने कई विरासतों को उजाड़ दिया, लेकिन इन हालात में भी वे ही धरोहरें सुरक्षित रह पाई, जहां की सभ्यताएं निरन्तर सजग रही। हमें नहीं भूलना चाहिए कि महान विरासतें सुखद भविष्य की इबारतें लिखती हैं। हमें मेवाड़ की प्राकृतिक और मानव निर्मित विरासतें, जो अब भी मौजूद हैं, उनके प्रति सचेत रहकर इनकी महत्ता से युवा वर्ग को जोड़ना होगा। तभी प्रकृति, पुरा और विकास के नवाचारों में अपेक्षित समन्वय स्थापित हो पाएगा।

ये विचार रविवार शाम शान्तिपीठ के तत्वाधान में 'विरासत समृद्ध मेवाड़ और इसका भविष्य' विषयक संगोष्ठी में कई विषय विशेषज्ञों ने व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि विरासत का अर्थ केवल स्मारक, मंदिर एवं अन्य मूर्त रचनाओं से इतर पर्यावरण, परम्पराओं और रीति रिवाजों आदि से भी है, जिनके विरुद्ध खड़ी चुनौतियों को समझना होगा। राज्य पर्यावरण विभाग के पूर्व प्रमुख एस.के. वर्मा ने कहा कि उदयपुर हमारे लिए ईश्वरीय निधि है और इसे मेवाड़ के महाराणाओं ने और आकर्षक बनाया। हमें इसके लिए जागरूक हो जाना चाहिए, अन्यथा बहुत देर हो चुकी होगी।

इंटक के उदयपुर स्कंध समन्वयक डॉ. बी. पी. भटनागर ने कहा कि इंटक युवाओं में विरासत के प्रति चेतना पैदा करने का कार्य शिक्षण संस्थाओं में गठित विरासत क्लबों के माध्यम से कर रहा है। इतिहासविद् डॉ. राजशेखर व्यास ने कहा कि उदयपुर विरासत का खजाना है। हमें किसी एक या दो का चयन कर क्रमशः संरक्षण के कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। परिचर्चा आगे बढ़ाते हुए डॉ. ललित पाण्डेय ने कहा कि सभी प्रकार के स्मारक हमारे पूर्वजों की महानता के हस्ताक्षर हैं। शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि विरासत विचार के पीछे हमारे शाश्वत मूल्य हैं। इनके संरक्षण के बिना समावेशी विकास की कल्पना अधूरी है। सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता जी.पी. सोनी ने चिंता व्यक्त की कि तोहफे में मिली धरोहरों को भी हम सुरक्षित नहीं कर पाए। अभी भी चेत जाएं तो बचा हुआ सुरक्षित हो सकता है। कैलाश पालीवाल ने आभार जताया।

दैनिक भास्कर उदयपुर, मंगलवार 28 जुलाई 2020

## विरासत समृद्ध मेवाड़ और इसके भविष्य पर चर्चा

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

शान्तिपीठ की विरासत समृद्ध मेवाड़ और इसका भविष्य विषय पर संगोष्ठी हुई। राजस्थान राज्य पर्यावरण विभाग के पूर्व प्रमुख एसके वर्मा ने कहा कि उदयपुर हमारे लिए ईश्वरीय निधि है और इसे मेवाड़ के महाराणाओं ने और आकर्षक बनाया। हमें इसके लिए जागरूक हो जाना चाहिए अन्यथा बहुत देर हो चुकी होगी। इंटक के उदयपुर स्कंध के समन्वयक डॉ. बीपी भटनागर ने कहा कि इंटक युवाओं में विरासत के प्रति चेतना पैदा करने का कार्य शिक्षण संस्थाओं में गठित विरासत क्लबों के माध्यम से कर रहा है। इतिहासविद डॉ. राज शेखर व्यास, अनन्त गणेश त्रिवेदी आदि ने भी विचार रखे। अध्यक्षता राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने की।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, मंगलवार, 28 जुलाई 2020

## विरासत के समक्ष चुनौतियों को समझना होगा

**ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर।** शांतिपीठ के तत्वावधान में विरासत समृद्ध मेवाड़ और इसका भविष्य विषयक संगोष्ठी हुई। अध्यक्षता करते हुए जेआरएन राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि विरासत का अर्थ केवल स्मारक, मंदिर एवं अन्य मूर्त रचनाओं से इतर पर्यावरण, परम्पराओं और रीति रिवाजों आदि से भी है और इसके विरुद्ध खड़ी चुनौतियों को समझना होगा। राजस्थान राज्य पर्यावरण विभाग के पूर्व प्रमुख एसके वर्मा ने शहर के नैसर्गिक सौन्दर्य के संरक्षण पर जोर दिया। इंटक के उदयपुर स्कंध के समन्वयक डॉ. बीपी भटनागर ने कहा कि इंटक युवाओं में विरासत के प्रति चेतना पैदा करने का कार्य शिक्षण संस्थाओं में गठित विरासत क्लबों के माध्यम से कर रहा है।

## सूरजपोल के संदर्भ में संवाद

# 'सूरजपोल प्रवेश द्वार पर कभी सूरजगढ़ नाम का बुर्ज था'

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

**उदयपुर.** सूरजपोल शहर की पहचान के साथ ही महत्वपूर्ण 'लेण्डमार्क' है। इसकी दीवार ध्वस्त होना धरोहर की क्षति के साथ ही लोगों की संवेदनाओं पर भी गंभीर आघात लगा है।

यह बात शान्तिपीठ की ओर से 'मूल्य परक हमारी विरासत के साक्षीः सूरजपोल के संदर्भ में' विषयक संवाद में रखी। अध्यक्षता करते हुए वास्तुविद् डॉ. ललित पांडेय ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में संभवतः खुदाई में असावधानी से सूरजपोल की दीवार गिर जाने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह अतीत से जुड़ी वास्तु पहचान ही नहीं अपितु उस समय के विज्ञान, तकनीक और सांस्कृतिक परम्पराओं को जानने का साधन है। उन्होंने बल दिया कि भारतीय पुरातत्व विभाग की 'कन्जर्वेशन ब्रांच' से सम्पर्क कर इसे पुनर्जीवित किया जा सकता है। भविष्य में एहतियातन स्मार्ट सिटी समिति में पुराविद् का सदस्य अनिवार्य होना चाहिए। इतिहासविद् डॉ. राजशेखर व्यास ने कहा कि हमारे वास्तु चिह्न और स्मारक बदलते युगों पर भी नई पीढ़ियों को समाज से अखण्डित रखते आए है, इनका अनादर एवं उपहास अक्षम्य है। डॉ. जी.एल. मेनारिया ने कहा कि उदयपुर, जिसे पूर्व का वेनिस कहा जाता है, मेवाड़ के सूर्यवंशी राज्य का प्रवेश द्वार सूरजपोल करीब 300 वर्ष के इतिहास का साक्षी है। ऐतिहासिक प्रवेश द्वार पर पहले सूरजगढ़ नाम का बुर्ज था। शहर परगना गिर्वा सम्बन्धी विवरण प्रसिद्ध इतिहास लेखक महामहोपाध्याय कवि श्यामलदास ने पुस्तक वीर विनोद के प्रथम खण्ड में लिखा- उदयपुर को भारत का एथेंस कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं।

सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियन्ता जी.पी. सोनी ने कहा कि अमरीका में पुरामहत्व के निर्माण सौ साल से भी कम पुराने हैं पर सार संभाल निष्ठा से किया जाता है, किन्तु भारत में सैकड़ों वर्ष पुराने पुरामहत्व के निर्माणों पर हम गंभीर नहीं है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हमारी विरासतें और इनके वृत्तान्त 'जेनरेशन गेप' से हमें मुक्त रखेंगे, ये हमारे जीवन्त स्वाभिमान की पहचान है। संवाद में शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी, डॉ. कमलसिंह राठौड़ ने सांस्कृतिक विरासत के महत्व को रेखांकित किया।

## कल्ला को बताया सूरजपोल का दर्द



**उदयपुर.** पुरातत्व विभाग के मंत्री बी.डी. कल्ला से शुक्रवार को प्रतिनिधिमंडल ने मिलकर शहर की कई समस्याओं से अवगत कराते हुए ऐतिहासिक सूरजपोल दरवाजे की गिरी दीवार को लेकर पूरा दर्द बयां किया। होटल लेकेंड में कल्ला से कांग्रेस नेता भीमसिंह चुडावत, देहात कांग्रेस के उपाध्यक्ष निरंजन नारायण सिंह राठौड़, मनोहर सिंह मेड़तिया, भरत आमेटा, पार्षद अरुण टांक मिले। प्रतिनिधियों ने कल्ला को बताया कि सूरजपोल दरवाजे की दीवार गिर गई, पुरा महत्व वाले इस स्थान को संरक्षित करने की मांग करते हुए दीवार गिरने की घटना की पूरी जांच कराने की मांग की। साथ ही शहर में स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत सीवरेज की लाइनें डालने से टूटी पाइप लाइनों को ठीक करने की भी मांग करते हुए कई अन्य मुद्दे उनके समक्ष रखे।

राजस्थान पत्रिका
patrika.com
04
उदयपुर, शुक्रवार, 5 जून, 2020

पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर संवाद

# पर्यावरण संरक्षण से ही बचेगी हमारी जैव विविधता

**उदयपुर.** पर्यावरण संवाद में झील प्रेमियों ने पर्यावरण व पारिस्थितिकी के संरक्षण के संकल्प को दोहराया। आयोजन झील मित्र संस्थान, झील संरक्षण समिति, गांधी मानव कल्याण समिति के साझे में हुआ। डॉ. अनिल मेहता ने कहा कि जैव विविधता को नुकसान पहुंचाने से वैश्विक महामारियां पैदा होती हैं। यह समझ संभवतया हमारी जीवन शैली में प्रकृति के साथ सामंजस्य को स्थापित करेगी। पहाड़-तालाब को बचाना होगा। झील विकास प्राधिकरण के तेजशंकर पालीवाल ने चिंता जताई कि जैव विविधता खतरे में है। नंदकिशोर शर्मा, कुशल रावल, दिगम्बर सिंह, पल्लब दत्ता, द्रुपद सिंह ने भी विचार रखे।

## पर्यावरण से समन्वय जरुरी

**शान्तिपीठ** की ओर से आयोजित वेबिनार में मुख्य अतिथि राजस्थान विद्यापीठ विवि के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि शरीर के पांच तत्वों में से एक तत्व में भी खराबी आ जाए तो शरीर तंत्र कार्य नहीं करता, यही पृथ्वी पर भी समान रूप से लागू होता है। संतुलन को बरकरार कैसे रख सकें यही एक चुनौती है। अध्यक्षता पंजाब के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने की। उन्होंने कहा कि विकास और पर्यावरण का समन्वय आधुनिक युग का मूल मंत्र है। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि स्वावलम्बन के आदर्श तब ही पूरे हो सकते हैं, जब स्थानीय प्राकृतिक स्त्रोतों का संरक्षण व संवर्धन किया जा सके। निरमा विवि अहमदाबाद से डॉ. उदय पालीवाल, गल्फ यूनिवर्सिटी रियाज सउदी अरब से डॉ. श्याम सुन्दर पंचोली, डॉ. ललित पाण्डे, इतिहासविद् डॉ. गोविन्द मेनारिया ने विचार रखे। संयोजन डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने किया।

## अतिदोहन से बचना होगा

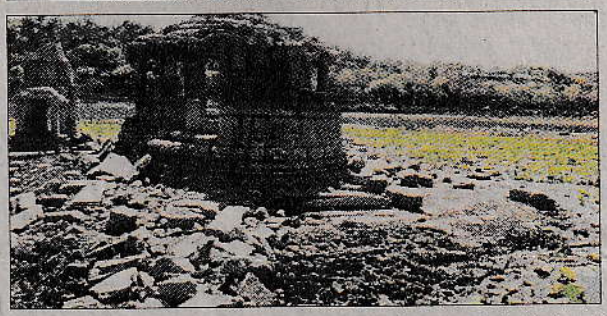
**आईआईटीयन** और पर्यावरणविद जीपी सोनी के अनुसार, हर जीव अपने-अपने काम को पूरा करने के लिए प्रकृति के बनाए अंधेरे और उजाले से अपनी जैविक घड़ी का संचालन करता है और अपने काम के लिए उसे शांति व निर्विघ्नता की भी आवश्यकता होती है। प्रकृति के सभी संसाधनों का इच्छानुसार उपभोग कर सकते हैं तो यह हमारा भ्रम है। अति आवागमन, अति शोर शराबा, अति खनन, अति निर्माण आदि सभी गतिविधियां प्रकृति की मूल व्यवस्थाओं को छिन्नभिन्न करती हैं और उसका फ ल हमें ही देर सवेर भोगना पड़ता है। हमें किसी भी धरोहर जैसे पानी, हवा, खनिज आदि के अति दोहन से बचना ही होगा। इस दो माह की गतिविधिरहित व्यवस्था से हम अनुभव लें और अपने क्रियाकलापों में आवश्यक नीतिगत परिवर्तन करें तो भविष्य में पर्यावरण संरक्षण में आसानी रहेगी।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, गुरुवार, 25 अप्रैल 2019

# नागदा की दुर्दशा पर जताई चिंता

**उदयपुर।** मेवाड़ की प्रथम राजधानी नागदा की हालात देखकर नगर के इतिहासविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों ने गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए प्रशासन से क्षेत्र की सुरक्षा की मांग की है। यह चिंता शान्तिपीठ द्वारा नागदा की दशा व दिशा के संदर्भ में आयोजित सर्वे-अध्ययन व चिंतन संगोष्ठी में जताई गई। सर्वे टीम में सम्मिलित इतिहासकार एवं शिक्षाविद् डॉ. राजशेखर व्यास ने कहा कि क्षेत्र में आठवीं और दसवीं शताब्दी के मंदिरों की बहुत सारी अमूल्य सामग्री विलुप्त हो चुकी है, इसके बावजूद अब भी यहां बहुत कुछ है। सरकार व समाज को आगे बढ़कर बचे हुए मंदिरों व मूर्तियों के संरक्षण के लिए तत्काल कदम उठाने चाहिए। पुरातत्वविद् डॉ. ललित पाण्डे ने कहा कि यहां स्थित सास-बहू मंदिर, खुम्माण रावल देवल तथा परकोटे के अवशेष मेवाड़ के लगभग 1300 वर्षों के गौरवमयी इतिहास के मूक दर्शक हैं। इतिहासविद् डॉ. जी.एल. मेनारिया ने अफसोस जताते हुए कहा कि अद्भुतजी के परिसर में कई मूल्यवान मूर्तियां बेतरतीब डाल रखी है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवाओं को आह्वान किया कि वे विरासत की सार सम्हाल को अपना दायित्व समझे और सनातन आदर्शों की रक्षा हेतु आगे आएं। नागदा-एकलिंगजी के सरपंच तेजसिंह, उमेश चन्द्र शर्मा, मोती सिंह राणावत, पूर्व प्रधान बंशीलाल कुम्हार, निखिलकान्त,





गणेश पालीवाल, तुलसीराम डांगी, गिरधारीलाल, नवीन मेनारिया, हरीश गोस्वामी के साथ ही गांवों के पूर्व सरपंच, वार्डपंच आदि उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर उदयपुर, गुरुवार 25 अप्रैल, 2019
dainikbhaskar.com

**सर्वे अध्ययन और गोष्ठी** • मेवाड़ की प्रथम राजधानी नागदा के क्षत-विक्षत हालात देख इतिहासकार, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने जताई चिंता

# कभी जैन, बौद्ध और सनातन संस्कृतियों के लिए विश्व विख्यात थी मेवाड़ की पहली राजधानी नागदा, संरक्षण नहीं मिलने से विलुप्ति के कगार पर

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

मेवाड़ की प्रथम राजधानी नागदा के हालात इतने खराब हैं कि कभी जहां राजा-महाराजाओं का गढ़ हुआ करता था, वहां चारों ओर सन्नाटा पसरा रहता है। मेवाड़ की कई धरोहरें, प्राचीन मूर्तियां यहां रखी पड़ी हैं लेकिन देखरेख के अभाव में सब खराब हो रहे हैं।

यहां के क्षत-विक्षत हालात देखकर नगर के इतिहासविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, प्रबुद्धजन ने गंभीर चिंता व्यक्त की है और प्रशासन से क्षेत्र की सुरक्षा की मांग की है। शान्तिपीठ की ओर से नागदा की दशा व दिशा के संदर्भ में हुए सर्वे-अध्ययन व चिंतन संगोष्ठी में यह चिंता इतिहासकारों ने व्यक्त की। सर्वे टीम में शामिल इतिहासकार डॉ. राजशेखर व्यास ने कहा कि नागदा (मेवाड़) भारतीय संस्कृति, स्थापत्य कला, मूर्तिकला और तक्षित पाषाण की दृष्टि से मेवाड़ राजस्थान का ही नहीं बल्कि पूरे भारत वर्ष का एक महत्वपूर्ण स्थल है। क्षेत्र में आठवीं और दसवीं शताब्दी के मंदिरों की बहुत सारी अमूल्य सामग्री विलुप्त हो चुकी हैं, इसके बावजूद अब भी यहां बहुत कुछ है। सरकार व समाज को आगे बढ़कर बचे हुए इन मंदिरों व मूर्तियों के संरक्षण के लिए तत्काल कदम उठाने चाहिए और जीर्णोद्धार के लिए आगे आना चाहिए। पुरातत्वविद् डॉ. ललित पाडे ने कहा कि यहां स्थित सास-बहु मंदिर, खुम्माण रावल देवल तथा परकोटे के अवशेष मेवाड़ के लगभग 1300 वर्षों के गौरवमयी इतिहास के मूक दर्शक हैं।



## मूल्यवान मूर्तियां भी बेतरतीब रखी हैं, कोई संभालने वाला नहीं

इतिहासविद् डॉ. जी.एल. मेनारिया ने अफसोस जताया कि यहां आदिबुद्ध मंदिर जिसे अद्भुतजी कहते हैं, के परिसर में कई मूल्यवान मूर्तियां बेतरतीब डाल रखी हैं। यह क्षेत्र बौद्ध, जैन और सनातन संस्कृतियों को लेकर विश्व विख्यात रहा है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने उपस्थित ग्रामीण युवाओं को आह्वान किया कि वे विरासत की सार संभाल को अपना दायित्व समझें और सनातन आदर्शों की रक्षा के लिए आगे आएं। इससे न केवल प्राचीन गरिमा को समझने की रोशनी मिलेगी बल्कि उच्च जीवन मूल्यों व व्यक्तित्व विकास का सशक्तिकरण भी होगा।





## पंचायतों से भी देखरेख करने की अपील

नागदा-एकलिंगजी के सरपंच तेजसिंह ने संरक्षण अभियान में ग्राम पंचायत के साथ आस-पास के गांवों के लोगों की प्रतिबद्धता व्यक्त की।बड़गांव के पूर्व प्रधान बंशीलाल कुम्हार ने कमल तलाई स्थित जीर्ण-शीर्ण शिव पंचायतन मंदिर के गर्भगृह में कुछ नवनिर्माण की हरकत देखते हुए इसके मूल स्वरूप को नष्ट करने के इरादों पर गंभीर चिंता व्यक्त की।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर, गुरुवार, 25 अप्रेल, 2019
patrika.com

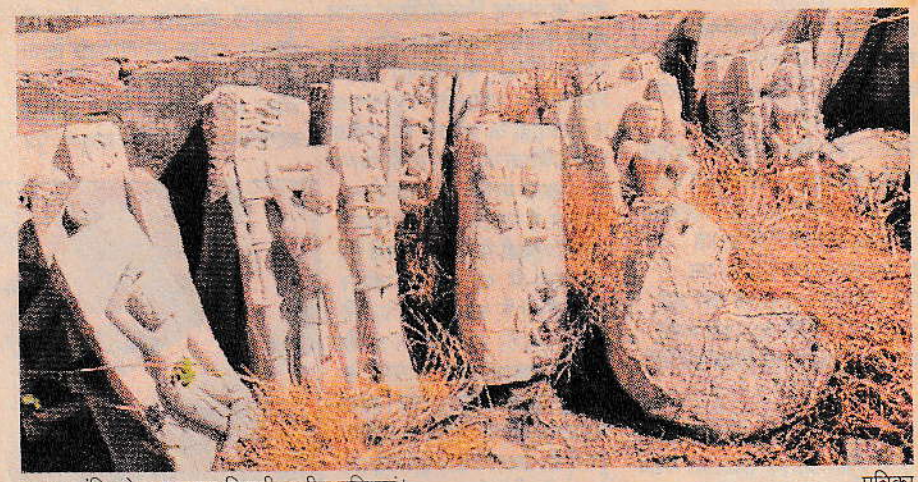
## शहर के इतिहासकारों, पुरातत्वविदों ने उठाई आवाज

# मेवाड़ की प्रथम राजधानी नागदा को बचाने की जरुरत

पत्रिका ग्राउंड रिपोर्ट

### शांतिपीठ संस्था के साथ किया निरीक्षण

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com



नागदा मंदिर के आसपास बिखरी प्राचीन प्रतिमाएं। पत्रिका

**उदयपुर** . मेवाड़ की प्रथम राजधानी नागदा की दशा और दिशा के संदर्भ में शान्तिपीठ संस्था की ओर से सर्वे-अध्ययन और चिंतन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। निरीक्षण के दौरान क्षत-विक्षत हालात देखकर शहर के इतिहासविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों, ग्रामीणों ने चिंता जाहिर की। क्षेत्र की सुरक्षा की मांग की है।

क्षेत्र के अवलोकन के बाद संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए डॉ. राजशेखर व्यास ने कहा कि नागदा (मेवाड़) भारतीय संस्कृति, स्थापत्य कला, मूर्तिकला और तक्षित पाषाण की दृष्टि से पूरे देश का अहम स्थल है। क्षेत्र में आठवीं और दसवीं शताब्दी के मंदिरों की अमूल्य सामग्री विलुप्त हो चुकी है। जो कुछ बचा है, उसके संरक्षण के लिए तत्काल कदम उठाने की जरुरत है। डॉ. ललित पाण्डे ने कहा कि यहां स्थित सहस्त्र बाहु मंदिर, खुम्माण रावल देवल और परकोटे के अवशेष मेवाड़ के लगभग 1300 वर्षों के इतिहास को बयां करते हैं। डॉ. जी.एल. मेनारिया, शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, सरपंच तेजसिंह, उमेश चन्द्र शर्मा, मोती सिंह राणावत, बंशीलाल कुम्हार ने विचार रखे। निखिल कान्त, गणेश पालीवाल, तुलसीराम डांगी, गिरधारीलाल, नवीन मेनारिया, हरीश गोस्वामी मौजूद थे।

प्रातःकाल
उदयपुर, गुरूवार 25 अप्रैल, 2019
pratahkal.com

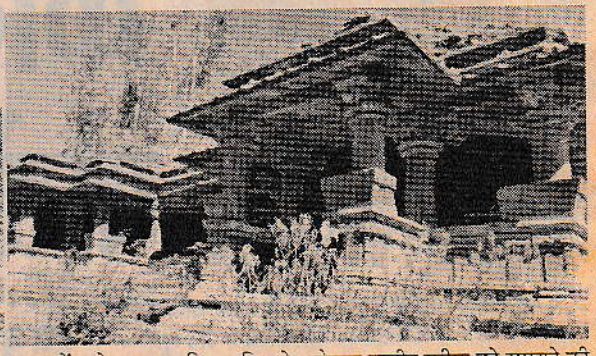
# नागदा के क्षत-विक्षत हालात पर चिंता, विरासत सहेजने पर चर्चा

**उदयपुर (वि.)।** मेवाड़ की प्रथम राजधानी नागदा के क्षत-विक्षत हालात देखकर नगर के इतिहासविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, स्थानीय जन प्रतिनिधियों तथा ग्रामीण युवा व प्रबुद्धजन ने गंभीर चिंता व्यक्त की है तथा प्रशासन से क्षेत्र की सुरक्षा की मांग की है। शान्तिपीठ द्वारा नागदा की दशा व दिशा के संदर्भ में आयोजित सर्वे-अध्ययन व चिंतन संगोष्ठी में उक्त भाव व्यक्त किये गए।

सर्वे टीम में सम्मिलित इतिहासकार एवं शिक्षाविद् डॉ. राजशेखर व्यास ने कहा कि नागदा (मेवाड़) भारतीय संस्कृति, स्थापत्य कला, मूर्तिकला और तक्षित पाषाण की दृष्टि से मेवाड़ राजस्थान का ही नहीं वरन पुरे भारत वर्ष का एक महत्वपूर्ण स्थल है। क्षेत्रावलोकन के बाद आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए डॉ. व्यास ने कहा कि क्षेत्र में आठवीं और दसवीं शताब्दी के मंदिरों की बहुत सारी अमूल्य सामग्री विलुप्त हो चुकी है, इसके बावजुद अब भी यहाँ बहुत कुछ है। सरकार व समाज को आगे बढ़कर

शिव पंचायतन मंदिर





बचे हुए मंदिरों व मूर्तियों के संरक्षण हेतु तत्काल कदम उठाने चाहियें और जीर्णाद्धार की कार्यवाही करनी चाहिए। पुरातत्वविद् डॉ. ललित पाण्डे ने कहा कि यहाँ स्थित सास-बहु मंदिर, खुम्माण रावल देवल तथा परकोटे के अवशेष मेवाड़ के लगभग 1300 वर्षों के गौरवमयी इतिहास के मूक दर्शक हैं। इतिहासविद् डॉ. जी.एल. मेनारिया ने अफ्सोस जताया कि यहाँ आदिबुद्ध मंदिर जिसे अद्भुतजी कहते हैं के परिसर में कई मूल्यवान मूर्तियाँ बेतरतीब डाल रखी है। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र बौद्ध, जैन व सनातन संस्कृतियों को लेकर विश्व विख्यात रहा है।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने उपस्थित ग्रामीण युवाओं को आह्वान किया कि वे विरासत की सार सम्हाल को अपना दायित्व समझे और सनातन आदर्शों की रक्षा हेतु आगे आएं जिससे न केवल प्राचीन गरीमा को समझने की रोशनी मिलेगी बल्कि उच्च जीवन मूल्यों व व्यक्तित्व विकास का सशक्तिकरण भी होगा। उन्होंने क्षेत्र के संरक्षण हेतु अल्पावधि एवं दीर्घावधि कार्ययोजना की आवश्यकता बताते हुए कहा कि निष्ठा से हमारे मिले-जुले प्रयास होंगे तो विलुप्त हो चुका भी मूर्त हो उठेगा।



नागदा-एकलिंगजी के सरपंच तेजसिंह ने संरक्षण अभियान में ग्राम पंचायत के साथ ही आस-पास के गांवों के लोगों की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

**विश्व विरासत दिवस** • जगह-जगह संगोष्ठी, प्रण लिया-विरासत संरक्षण के लिए जनभागीदारी सुनिश्चित करेंगे, इतिहासकार बोले-

# वैश्विक धरोहर है हमारा मेवाड़, आज नहीं बचाया तो आने वाली पीढ़ियां सिर्फ फोटो और इतिहास में ही देख सकेंगी



उदयपुर. महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन के वार्षिक गाइड ओरिएंटेशन लेक्चर प्रोग्राम में मौजूद शहर के गाइड प्रण लेते हुए।



जावर माइंस में संगोष्ठी में मौजूद लोग(इनसेट में) संबोधित करते हुए वक्ता।

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

उदयपुर. विश्व धरोहर दिवस पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण जोधपुर मंडल और साहित्य संस्थान के साझे में जावर माइंस स्थित एसआई सभागार में गुरुवार को संगोष्ठी हुई। मुख्य अतिथि विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि आज वर्तमान टेक्नोलॉजी एवं प्रतिस्पर्धा के दौर में बोलियां, खानपान, संस्कृति, नदियां, मंदिर, इतिहास ऐसी कई चीजें प्राचीन धरोहर है जिसे हम भूलते जा रहे हैं और हमारी आने वाली पीढ़ी इसे सिर्फ फोटो एवं इतिहास में ही पढ़ पाएंगे। इसके लिए सरकार एवं आम जन को जागरूक होना होगा। इसके बिना प्राचीन धरोहरों का संरक्षण असंभव है। आज हमारी जावर माइंस में जस्ता एवं चांदी को गलाने का काम विश्व में सबसे पहले यहीं से हुई थी। इसका भी संरक्षण आवश्यक है। जावर के भू वैज्ञानिक अरविंद कुमार ने जावर के मंदिर व धरोहरों की जानकारी देते हुए बताया कि इस क्षेत्र में सैकडों प्राचीन मंदिर व बावड़ियां हैं जिनको सरकार की मदद से संरक्षण की आवश्यकता है। अध्यक्षता करते हुए इतिहासविद् प्रो. के.एस.गुप्ता ने कहा उदयपुर शहर के विभिन्न वाचनालयों एवं पर्यटक स्थलों पर उपलब्ध पांडुलिपियों का भी सरक्षण किया जाना चाहिए क्योंकि ये भी हमारी पहचान एवं धरोहर हैं। उन्होंने कहा कि भारत के इतिहास की बात करें तो उसमें राजस्थान और राजस्थान में से भी मेवाड़ का इतिहास निकाल दें तो वो इतिहास अधूरा ही होगा। इतिहासविद डॉ. राजशेखर व्यास ने कहा कि विरासत एवं धरोहर का मतलब पुराने किले, खंडहर, हो चुके भवनों तक ही सीमित नहीं है, हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारा रहन सहन, साहित्य, लोक गीत, वन, नदियां, संयुक्त परिवार आदि भी विरासत के अभिन्न अंग हैं। विरासत संरक्षण को लेकर उन्होंने कहा कि विरासत संरक्षण के लिए जनभागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। वरिष्ठ भू भौतिकी वैज्ञानिक डॉ. ज्ञानेश लश्करी ने कहा कि देश में भारत की संस्कृति एवं विरासत का कोई मुकाबला नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत विरासतों का गढ़ है साथ ही मेवाड़ की विरासत पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। यही कारण है कि यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या अधिक रहती हैं।

## मेवाड़ का अस्तित्व और अस्मिता प्राकृतिक धरोहर से सुरक्षित रहे : त्रिवेदी

**उदयपुर** | विश्व विरासत दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के सभागार में गुरुवार को संवाद कार्यक्रम हुआ। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि मेवाड़ का अस्तित्व और अस्मिता यहां की प्राकृतिक धरोहर से सुरक्षित रही है। प्रकृति को आत्मसात करने वाली संस्कृति ने शौर्य, भक्ति, त्याग, बलिदान, सामाजिक समरसता व विश्व कल्याण के आदर्शों को अक्षुण्ण रखा है, लेकिन वर्तमान में यह सब संकटग्रस्त है। उन्होंने कहा कि विरासत और संस्कृति का संरक्षण भी एक संस्कार है जिसे शिक्षा का आवश्यक हिस्सा बनाया जाना चाहिए। इतिहासविद् डॉ. गोविंद मेनारिया ने कहा कि यूरोप में जो स्थान यूनान के एथेन्स और स्पार्टा नगर का है। वही स्थान भारत में नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला, वल्लभी व नागदा नगर का रहा है। ये समस्त केन्द्र प्राचीन शिक्षा प्रणाली की दृष्टि से विश्व धरोहर में सम्मिलित किये जा सकते हैं। एडवोकेट मोतीसिंह राणावत ने युवा वर्ग को विरासत सेशे जोड़ने की आवश्यकता बतायी। कार्यक्रम में आरएस चैबीसा, राजीव लोढ़ा आदि मौजूद थे।

### गाइड उच्च श्रेणी का अध्यापक

**उदयपुर** | विश्व विरासत दिवस पर महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन का दो दिवसीय वार्षिक गाइड ओरिएंटेशन लेक्चर प्रोग्राम गुरुवार को शुरू हुआ। इतिहास संस्था की संस्थापक निदेशक स्मिता वत्स ने कहा कि एक गाइड उच्च श्रेणी का अध्यापक होता है जो अपने यहां आने वाले पर्यटकों को अपनी धरोहर का इतिहास के बारे में बारीकी से समझाता है। फाउण्डेशन के मुख्य प्रशासन भूपेन्द्र सिंह आउवा व आउट रिच प्रोग्राम की एक्जीक्यूटिव पूर्वा भाटिया मौजूद थे।

दैनिक नवज्योति
8 | उदयपुर ■ शनिवार ■ 16 मार्च, 2019

# नागदा की करुण गाथा कौन सुने!



**उदयपुर।** मेवाड़ की प्रथम राजधानी नागदा देख-रेख के अभाव में नष्ट होने के कगार पर है। मंदिरों से मूर्तियां विलुप्त हो गई हैं और अवशेष, भग्नावशेषों की करुण गाथा सुनने वाला कोई नहीं है। शाक्तिपीठ की पहल पर संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, देवस्थान विभाग के अतिरिक्त आयुक्त दिनेश कोठारी, पुरातत्वविद् डॉ. ललित पाण्डे और एडवोकेट मोती सिंह राणावत नागदा पहुंचे। कोठारी ने कहा कि विभागीय स्तर पर क्या किया जा सकता है, इस पर विचार करेंगे।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 19 अप्रैल 2019

# संरक्षण करें नहीं तो सिर्फ फोटो में ही दिखाई देंगी प्राचीन धरोहरें : प्रो. सारंगदेवोत

## विश्व धरोहर दिवस पर एक दिवसीय संगोष्ठी

उदयपुर। वर्तमान टेक्नोलॉजी एवं प्रतिस्पर्द्धा के दौर में हम हमारी बोलियां, खान-पान, संस्कृति, नदियां, मंदिर, इतिहास ऐसी कई प्राचीन धरोहर हैं जिसे भूलते जा रहे है। आने वाली पीढ़ी इसे सिर्फ फोटो एवं इतिहास में ही पढ़ पायेंगे। इसके लिए सरकार एवं आमजन को जागरूक होना होगा।

उक्त विचार गुरुवार को राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक साहित्य संस्थान व भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण व भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण जोधपुर मंडल के संयुक्त तत्वावधान में विश्व धरोहर दिवस पर जावर माइंस स्थित भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण सभागार में आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी में कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए। जावर के भू वैज्ञानिक अरविंद कुमार ने जावर क्षेत्र में सैकड़ों प्राचीन मंदिर व बावड़ियां हैं जिनको सरकार की मदद से संरक्षण की आवश्यकता है। अध्यक्षता करते हुए इतिहासविद् प्रो. के.एस.गुप्ता ने कहा उदयपुर शहर के विभिन्न वाचनालयों एवं पर्यटक स्थलों पर उपलब्ध पांडुलिपियों का भी सरंक्षण किया जाना चाहिए। क्योंकि ये भी हमारी पहचान एवं धरोहर हैं।

### विरासत संजोने की जरूरत

इतिहासविद डॉ. राजशेखर व्यास ने कहा कि विरासत एवं धरोहर का मतलब पुराने किले, खण्डहर हो चुके भवनों तक ही सीमित नहीं है, हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारा रहन-सहन, साहित्य, लोकगीत, वन, नदियां, संयुक्त परिवार आदि भी विरासत के अभिन्न अंग हैं। उन्होंने कहा कि विरासत संरक्षण के लिए जनभागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। वरिष्ठ भू भौतिकी वैज्ञानिक डॉ. ज्ञानेश लश्करी ने कहा कि देश में भारत की संस्कृति एवं विरासत का कोई मुकाबला नहीं है। विशिष्ठ अतिथि जोधपुर के पुरातत्वविद वीएस बाडीगर ने कहा कि हमारे देश में विरासत ही है जो आज भी अपनी पहचान लिए हुए है। संचालन डॉ. जीवन सिंह खरकवाल ने किया। आभार डॉ. कुलशेखर व्यास ने दिया।

## विरासत को बनाएं शिक्षा का आवश्यक हिस्सा

उदयपुर। हम अपनी विरासत को संजोकर ही भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं, इसका उपहास हमें खुशहाली से वंचित कर देगा। अगर हालात पर नियंत्रण नहीं किया तो अस्तित्व मात्र पर अद्वितीय संकट खड़ा हो जाएगा।

ये विचार गुरुवार को विश्व विरासत दिवस पर शान्तिपीठ द्वारा संस्थान के सभागार में रखे संवाद कार्यक्रम में प्रतिभागियों द्वारा व्यक्त किए गए। इतिहासविद् डॉ. गोविन्द मेनारिया ने कहा कि यूरोप में जो स्थान यूनान के एथेन्स एवं स्पार्टा नगर अथवा रोमन नगर का है वही स्थान भारत में नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला, वल्लभी व नागदा नगर का रहा है। ये समस्त केन्द्र प्राचीन शिक्षा प्रणाली की दृष्टि से विश्व धरोहर में सम्मिलित किये जा सकते है।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि विरासत व संस्कृति का संरक्षण भी एक संस्कार है जिसे शिक्षा का आवश्यक हिस्सा बनाया जाना चाहिए। एडवोकेट मोतीसिंह राणावत ने युवा वर्ग को विरासत से जोड़ने की आवश्यकता बतायी। आरएस चौबीसा ने आभार व्यक्त किया।

## सिटी पैलेस में वार्षिक गाइड ओरिएंटेशन प्रोग्राम शुरू



उदयपुर। विश्व विरासत दिवस पर गुरुवार को महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन द्वारा प्रतिवर्ष की भांति दो दिवसीय वार्षिक गाइड ओरिएंटेशन लेक्चर प्रोग्राम का शुभारम्भ किया गया। जिसमें प्रथम दिवस का प्रथम बैच 10 से 1 बजे तक तथा दूसरा बैच 3 से 5 बजे तक आयोजित किया गया। इस वर्ष गाइड ओरिएंटेशन प्रोग्राम के लिए इतिहास संस्था की संस्थापक निदेशक स्मिता वत्स को बुलाया गया। यह संस्था देश में विरासत अध्ययन, विरासत प्रबन्धन और विरासत शिक्षा का अग्रणी संगठन है। पर्यटन के क्षेत्र में इतिहास की मुख्य भूमिका का महत्वपूर्ण योगदान के बारे में जानकारी देते हुए वत्स ने बताया कि एक गाइड उच्च श्रेणी का अध्यापक होता है जो अपने यहां आने वाले पर्यटकों को अपनी धरोहर का इतिहास के बारे में बारिकी से समझाता है तथा उसका महत्व बताता है। प्रथम दिन के प्रोग्राम के लिए 50-50 गाइड्स के 2 समूह बनाकर उन्हें लेक्चर दिया गया। इस अवसर पर महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन के मुख्य प्रशासन भूपेन्द्र सिंह आउवा व आउटरिच प्रोग्राम की एक्जीक्यूटिव पूर्वा भाटिया उपस्थित रहे।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर, शुक्रवार, 19 अप्रेल, 2019
patrika.com

विश्व धरोहर दिवस : शहर में गोष्ठी और संवाद कार्यक्रम

# दुनिया में भारतीय संस्कृति और विरासत अद्वितीय

त्रिका न्यूज़ नेटवर्क
ajasthanpatrika.com

**उदयपुर** . विश्व विरासत दिवस पर गुरुवार को शहर में विविध आयोजन हुए। कहीं गोष्ठी, संवाद हुए तो कहीं प्रशिक्षण दिया गया।

राजस्थान विद्यापीठ विवि के संघटक साहित्य संस्थान और भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण व भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण जोधपुर मंडल की ओर से जावरमाइंस स्थित भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण सभागार में संगोष्ठी हुई। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत थे। उन्होंने कहा कि दुनिया में कहीं भी भारत की संस्कृति और विरासत का मुकाबला नहीं है। जावर के भू वैज्ञानिक अरविंद कुमार ने बताया कि क्षेत्र में सेकड़ों प्राचीन मंदिर व बावड़ियां हैं, जिनको संरक्षण की जरुरत है। अध्यक्षता प्रो. इतिहासकार केएस गुप्ता ने की। उन्होंने कहा कि भारत के इतिहास की बात करें तो राजस्थान और राजस्थान से भी मेवाड़ का इतिहास निकाल दें तो, इतिहास अधूरा रह जाएगा। डॉ. राजशेखर व्यास, भू भौतिकी वैज्ञानिक डॉ. ज्ञानेश लश्करी, जोधपुर के पुरातत्वविद वीएस बाड़ीगर ने विचार रखे। संचालन डॉ. जीवनसिंह खरकवाल ने किया। डॉ. कुलशेखर व्यास ने आभार जताया।



विरासत दिवस पर सिटी पैलेस में आयोजित कार्यक्रम में चर्चा करते संभागी।

## गाइड ऑरिएंटेशन प्रोग्राम

विश्व विरासत दिवस पर महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन की ओर से वार्षिक गाइड ऑरिएंटेशन लेक्चर प्रोग्राम शुरू हुआ। पहले दिन पहला बैच 10 से 1 बजे तक और दूसरा बैच 3 से 5 बजे तक चला। इतिहास संस्था की संस्थापक निदेशक स्मिता वत्स बतौर वक्ता मौजूद रही। संस्था देश में विरासत अध्ययन, प्रबन्धन और शिक्षा का अग्रणी संगठन है। वत्स ने बताया कि गाइड पर्यटकों को धरोहर के इतिहास की जानकारी देता है। फाउण्डेशन के मुख्य प्रशासन भूपेन्द्रसिंह आउवा, एक्जीक्यूटिव पूर्वा भाटिया की मौजूदगी रही।



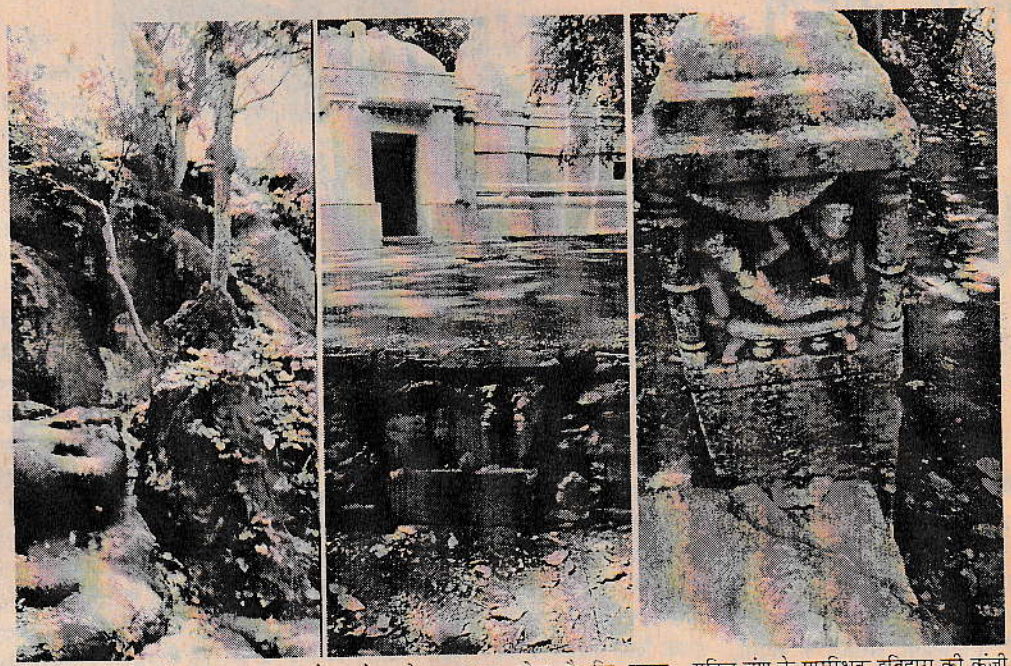
राजस्थान विद्यापीठ में विरासत दिवस पर आयोजित संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए वक्ता। पत्रिका

## संवाद में रखे विचार

शान्तिपीठ की ओर से संस्थान के सभागार में संवाद कार्यक्रम हुआ। वक्ताओं ने कहा कि हम विरासत को संजोकर ही भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं। विकास और प्रगति को लेकर हम प्राकृतिक विरासत को नष्ट करते जा रहे हैं। नियंत्रण नहीं किया तो अस्तीत्व पर संकट होगा। इतिहासविद् डॉ. गोविन्द मेनारिया ने कहा कि यूरोप में जो स्थान यूनान के एथेन्स एवं स्पार्टा नगर का है अथवा रोमन नगर का है। वही स्थान भारत में नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला, वल्लभी व नागदा का रहा है। शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, मोतीसिंह राणावत ने विचार रखे।

प्रातःकाल उदयपुर, शनिवार 29 जून, 2019

# कुंडेश्वर की पारिस्थितिकी तत्कालीन मानव प्रतिभा का अप्रतिम नमूना



उदयपुर (वि)। कुण्डेश्वर की पारिस्थितिकी आज भी मानव अधिवास के अत्यंत अनुकूल है, तो यह कल्पना आसानी से की जा सकती है कि 1500 वर्ष पूर्व यह कैसी रही होगी। यह तत्कालिन मानव प्रतिभा को ही प्रदर्शित करती है। प्राचीन कुण्ड ग्राम में 661 ई. का शिलालेख गुहिल वंश के तेजस्वी शासक अपराजित का उल्लेख करता है, जिसमें यशोमती के द्वारा कैटभरिषु अर्थात विष्णु मंदिर के निर्माण का उल्लेख तो है लेकिन शिव मंदिर का उल्लेख नही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि या तो मंदिर पूर्व से ही निर्मित था। अद्भुत शवलिंग की जलाधारी आश्चर्यकारी है। मंदिर में गर्भ ग्रह, अंतराल सभा मण्डप है। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी स्वस्थ व समृद्ध पारिस्थितिकी एवं दिव्य विरासतों की सुरक्षा के लिए कड़े ईंतजाम किये जाएं और इन्हें प्रकृति प्रेरणा स्त्रोत के रूप में संरक्षित किये जाएं। उक्त विचार आज शांतिपीठ संस्थान के पर्यावरण एवं दिव्य विरासत पुनरोत्थान कार्यक्रम के तहत सर्वे-अध्ययन के लिए कुण्डेश्वर पहुँचें इतिहासकारों, वास्तुविदों व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने व्यक्त किए।

सर्वे-अध्ययन उपरांत आयोजित संवाद में बोलते हुए इतिहासकार-शिक्षाविद डॉ. राजशेखर व्यास ने कहा कि यह मंदिर मेवाड़ के किसी प्रारम्भिक रावल द्वारा बनवाया गया है जिसकी शैली गुप्तकालीन है, लेकिन स्थानीय लोगों के अज्ञान के कारण इसका मौलिक स्वरूप बिगड़ चुका हैं। यदि पुरातत्व विभाग का सहयोग प्राप्त हो तो इसको वास्तविक स्वरूप में लाया जा सकता है। यह प्रारम्भिक मध्य काल के वास्तु का अप्रतिम नमूना है।

मंदिर परिसर में रखी देव-प्रतिमाओं के अध्ययन-अवलोकन के दौरान एक गणेश प्रतिमा भी प्रकाश में आई। वास्तुविद डॉ. ललित पाण्डे ने कहा कि विज्ञान की दृष्टि से यह असाधारण प्रतिमा है।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने अरण्य संस्कृति में विधमान विरासतों के प्रति संवेदनशील होने की जरूरत बताते हुए कहा कि अध्ययन व शोध से यह स्पष्ट होता है कि समग्र पारिस्थितिकी तंत्र आस्था और विश्वास केन्द्रित रहा है, अतः विरासतों का पुनरोत्थान प्रकृति के शास्वत नियमों को आत्मसात करने के सरल मार्ग को अपनाने से संभव हैं और यह अपरिहार्य भी है। उन्होनें इस दिशा में शासन और समाज की अपेक्षित भूमिका के अभाव पर चिंता व्यक्त की।

इतिहासकार डॉ. जी.एल. मेनारिया ने कहा कि कुण्डा ग्राम की प्राचीन प्रशस्ति गुहिल वंश के प्रारम्भिक इतिहास की कुंजी हैं। बड़गांव पंचायत समिति के पूर्व प्रधान बंशीलाल कुम्हार ने स्थानीय लोगों व जनप्रतिनिधियों की सक्रिय भूमिका की आवश्यकता बताई।

कवि एवं साहित्यकार अधिवक्ता मदन क्षितिज ने मेवाड़ को विरासतों की शौर्य स्थली बताते हुए स्वरचित रचनाएं सुनाई। कमलेन्द्र सिंह राठौड़, एडवोकेट उमेश शर्मा, अरविन्द सिंह ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शनिवार, 29 जून 2019

# कुंडेश्वर मंदिर का मौलिक स्वरूप बिगड़ा

**उदयपुर।** कुण्डेश्वर की पारिस्थितिकी आज भी मानव अधिवास के अत्यंत अनुकूल है, तो यह कल्पना आसानी से की जा सकती है कि 1500 वर्ष पूर्व यह कैसी रही होगी। यह तत्कालीन मानव प्रतिभा को ही प्रदर्शित करती है। प्राचीन कुण्ड ग्राम में 661 ई. का शिलालेख गुहिल वंश के तेजस्वी शासक अपराजित का उल्लेख करता है, जिसमें यशोमती द्वारा कैटभरिषु अर्थात विष्णु मंदिर के निर्माण का उल्लेख तो है लेकिन शिव मंदिर का उल्लेख नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि मंदिर पूर्व से ही निर्मित था। उक्त विचार शुक्रवार को शांतिपीठ संस्थान के पर्यावरण एवं दिव्य विरासत पुनरोत्थान कार्यक्रम के तहत सर्वे-अध्ययन के लिए कुण्डेश्वर पहुंचे इतिहासकारों, वास्तुविदों व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने व्यक्त किए। सर्वे-अध्ययन उपरांत आयोजित संवाद में इतिहासकार-शिक्षाविद डॉ. राजशेखर व्यास ने कहा कि यह मंदिर मेवाड़ के किसी प्रारम्भिक रावल द्वारा बनवाया गया है जिसकी शैली गुप्तकालीन है, लेकिन स्थानीय लोगों के अज्ञान के कारण इसका मौलिक स्वरूप बिगड़ चुका है। यदि पुरातत्व विभाग का सहयोग प्राप्त हो तो इसको वास्तविक स्वरूप में लाया जा सकता है। यह प्रारम्भिक मध्य काल के वास्तु का अप्रतिम नमूना है।



मंदिर परिसर में रखी देव-प्रतिमाओं के अध्ययन-अवलोकन के दौरान एक गणेश प्रतिमा भी प्रकाश में आई। वास्तुविद डॉ. ललित पाण्डे. ने कहा कि विज्ञान की दृष्टि से यह असाधारण प्रतिमा है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने अरण्य संस्कृति में विधमान विरासतों के प्रति संवेदनशील होने की जरूरत बताते हुए कहा कि अध्ययन व शोध से यह स्पष्ट होता है कि समग्र पारिस्थितिकी तंत्र आस्था और विश्वास केन्द्रित रहा है।

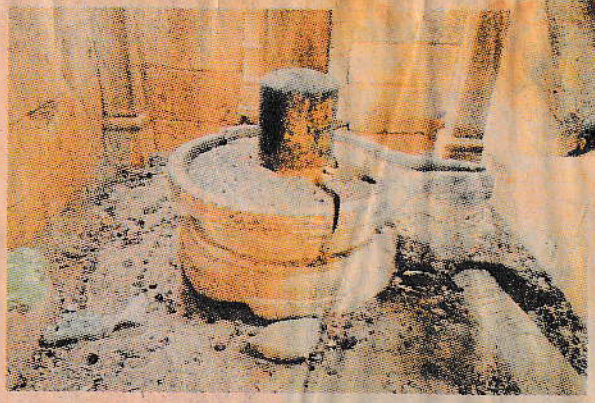
इतिहासकार डॉ. जी.एल. मेनारिया ने कहा कि कुण्डा ग्राम की प्राचीन प्रशस्ति गुहिल वंश के प्रारम्भिक इतिहास की कुंजी है। बड़गांव पंचायत समिति के पूर्व प्रधान बंशीलाल कुम्हार ने स्थानीय लोगों व जनप्रतिनिधियों की सक्रिय भूमिका की आवश्यकता बताई। कवि एवं साहित्यकार अधिवक्ता मदन क्षितिज ने मेवाड़ को विरासतों की शौर्य स्थली बताते हुए स्वरचित रचनाएं सुनाई। कमलेन्द्र सिंह राठौड़, अरविन्द सिंह ने भी विचार व्यक्त किए।

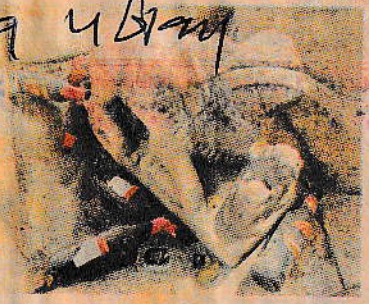
शिवरात्रि विशेष

4 मार्च, 2019 4 Bhaskar

# फिर क्यों न करें शिव तांडव?

राकेश शर्मा 'राजदीप'
rajasthanpatrika.com





**उदयपुर** . शहर से करीब 19 किलोमीटर दूर कैलाशपुरी में मेवाड़ के प्रथम आराध्य एकलिंगनाथजी विराजते हैं। कैलाशपुरी से महज एक-डेढ़ किलोमीटर पहले मेवाड़ की प्राचीन राजधानी नागदा नगरी में बघेले तालाब के निकट एक छोटी-सी पहाड़ी पर शिव मंदिर (खुमाण रावल का देवरा) बना है। यह कौन से रावल खुमाण का है, यह तो स्पष्ट नहीं है, लेकिन इसकी निर्माण शैली से पता चलता है कि यह मंदिर नवीं-दसवीं सदी का है। इसमें लगी सप्त मातृका मूर्तियां विशेष वर्णनीय हैं।

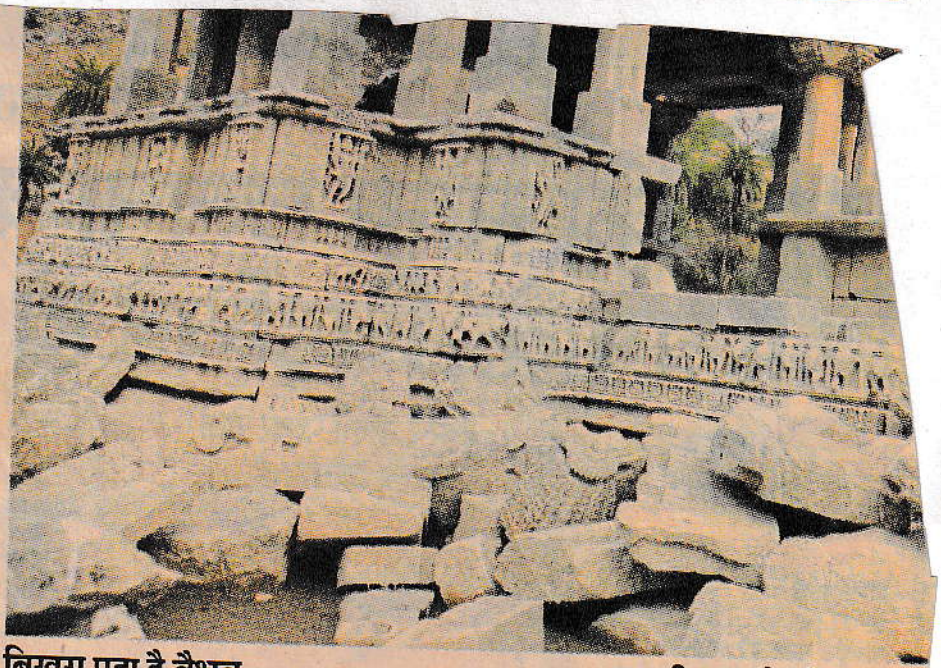
मंदिर की ऐतिहासिकता एवं महत्व को देखते हुए इसका पुनरुत्थान महाराणा कुम्भा के काल में हुआ। मंदिर में प्रतिष्ठित शिवलिंग भी कुम्भा काल का ही नजर आता है क्योंकि इतने विशाल शिवलिंग कुम्भा से पूर्व 12वीं सदी के एक-दो ही मिले हैं। कुम्भा काल में इनकी पूरी शृंखला नजर आने लगती है। खुमाण रावल देवरे में मिला शिवलिंग और कुम्भलगढ़ में कुम्भा द्वारा निर्मित नीलकंठ महादेव के शिवलिंग का शिल्प एक समान नजर आता है। फर्क महज इतना है कि खुमाण रावल देवरे का शिवलिंग स्थानीय पत्थर का है और नीलकंठ महादेव का शिवलिंग काले संगमरमर का बना है।क्षेत्रवासी और इतिहासकार बताते हैं कि मेवाड़ की प्राचीन राजधानी नागदा का हजारों साल पुराना पुरा वैभव को बारहवीं शताब्दी में जितना इल्तुत्मिश ने लूटा नहीं होगा, उससे कई गुना अधिक आज तक इसे अपनों ने छलनी किया है। पिछले दिनों भारतीय सांस्कृतिक निधि (इंटेक) की ओर से आयोजित विरासत फोटो प्रदर्शनी के कुछ चित्रों में इनकी दुर्गति देखी। उसके बाद पत्रिका संवाददाता जब खुमाण रावल देवरा पहुंचा तो बाहर से मंदिर की उजाड़ दशा और फिर अंदर स्थापित शिवलिंग के आसपास बिखरी गंदगी और गर्भगृह के बाहर स्थापित नंदी की खंडित प्रतिमा सहित परिसर के आसपास बिखरी बीयर-शराब की बोतलें देखकर मन विचलित हो गया।

rajasthanpatrika.com

**उदयपुर** . करीब 1000 से 1200 वर्ष पुराने सैकड़ों मंदिरों के अवशेष मेवाड़ की प्राचीन राजधानी नागदा में जीर्ण-शीर्ण अवस्था में बिखरे पड़े हैं, लेकिन हैरत कि इसका रखरखाव किसी सरकारी महकमे के पास नहीं है। देवस्थान, पर्यटन व पुरातत्व विभाग के अधिकारी इनकी जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं हैं। इसका नतीजा है कि मूर्ति तस्कर यहां से बेशकीमती मूर्तियों की तस्करी में कामयाब रहे। यहां खजाने की खोज में मंदिरों के गर्भगृह तक खोदे जा रहे हैं।

## इनका नहीं भरा जी

मेवाड़ की प्राचीन राजधानी नागदा में खंडहर हो चुके सैकड़ों मंदिरों से मूर्तियां चुराकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तस्करी करने वालों का जी अभी भरा नहीं है। यहां मंदिरों के गर्भगृह से लेकर अन्य जगह खजाने की तलाश में खुदाई का दौर जारी है। वहीं, कुछ लोग यहां टूटी-फूटी बिखरी पड़ी मूर्तियों को बेशकीमती बताकर विदेशी पर्यटकों के साथ ठगी का गोरखधंधा कर रहे हैं। नागदा में बिखरे पुरावैभव पर समाजकंटकों की नजर को लेकर स्थानीय लोग चिंतित हैं।



## बिखरा पड़ा है वैभव

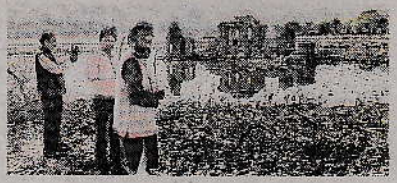
शहर से 19 एवं कैलाशपुरी से 2 किलोमीटर दूर नागदा के उपेक्षित मंदिर, क्षत विक्षत कला-वैभव का अद्भुत संसार बिखरा पड़ा है, जो अपनी करुण कथा को बयां कर रहा है। शैव, वैष्णव, जैन संप्रदाय के भग्नावशेष अपनी उपेक्षा व दुर्दशा पर आंसू बहाते देखे जा सकते हैं। बप्पा रावल शिलादित्य से लेकर तेरहवीं शताब्दी तक नागदा धर्म व संस्कृति का प्रमुख केंद्र रहा था। बताते हैं कि मंदिरों की इस नगरी में पूर्व में करीब दो हजार से अधिक मंदिर थे, कुछ तो पानी में डूब गए और कई खंडहर हो गए। जो बचे हैं, उनकी देखरेख भी नहीं हो पा रही।

## इनकी सुध तो लो

कहते हैं कि दिल्ली के सुल्तान इल्तुमिश जलाकर नष्ट कर दिया, लेकिन सास बहू को नष्ट नहीं किया था। उसमें से बाघेला शिवालय भी है, जो सड़क मार्ग से ठीक रावल का देवरा भी कहते हैं। इतिहास पूर्व मध्यकालीन उपेक्षित शिवालय छाज राज्य के रचना विधान का उत्कृष्ट उदाहर मंडोवर गिर चुके हैं। हालांकि, शिवलिंग अ

# मेवाड़ की पहली राजधानी नागदा देख-रेख के अभाव में हो रही नष्ट

**उदयपुर** | मेवाड़ की पहली राजधानी नागदा देख-रेख के अभाव में नष्ट होती जा रही है। यह नालंदा और तक्षशिला जैसे केन्द्रों के समान शिक्षा और संस्कृति का महान केन्द्र रहा है। मंदिरों की मूर्तियां विलुप्त हो गई हैं, अवशेष भग्नावशेषों की कारुणिक गाथा को कोई सुनने वाला नहीं है। मेवाड़ के शौर्य, त्याग और मानवीय आदर्शों के लिए समर्पण के यशोगान की गूंज दुनिया भर में है, लेकिन ऐतिहासिक साक्ष्यों को नजर अंदाज किया जाना अस्मिता की अवमानना



ही कहा जाएगा। आज आत्म स्वाभिमान के प्रति संवेदनशीलता की जरूरत है। यह बात शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी और देवस्थान विभाग के अतिरिक्त आयुक्त दिनेश कोठारी, पुरातत्वविद् डॉ. ललित पांडे और एडवोकेट मोती सिंह राणावत ने इस स्थल के निरीक्षण के बाद संयुक्त बयान में व्यक्त किए हैं। त्रिवेदी ने बताया कि टीम शान्तिपीठ की पहल पर नागदा के हाल देखने शुक्रवार को पहुंची। पुरातत्वविद् डॉ. पांडे ने कहा कि नागदा मंदिरों का वास्तुशिल्प प्राचीन वैभव का स्वयं सिद्ध प्रमाण है। जो मेवाड़ ही नहीं, बल्कि अखिल भारतीय समृद्ध परम्परा की सनातनता को सिद्ध करता है।





# नागदा का प्राचीन वैभव नष्ट होने के कगार पर

उदयपुर (वि)। मेवाड़ की प्रथम राजधानी नागदा देख-रेख के अभाव में नष्ट होने के कगार पर है, मंदिरों की मूर्तियाँ विलुप्त हो गई हैं और अवशेष भग्नावेशों की कारूणिक गाथा को कोई सुनने वाला नहीं है। मेवाड़ के शौर्य, त्याग और मानवीय आदर्शों के लिए समर्पण के यशोगान की गुँज दुनिया भर में है किन्तु ऐतिहासिक साक्ष्यों को नजर अदांज किया जाना अस्मीता की अवमानना ही कहा जायेगा। जरूरत है आत्म स्वाभिमान के प्रति संवेदनशीलता की व प्रतिबद्धता की जिससे महान सांस्कृति विरासत को संरक्षित किया जा सके और आने वाली पीढ़ियों के सामने मानवीय गरीमा की मिशाल प्रस्तुत हो सके। ये उद्गार आज नागदा के हालात का जायजा लेते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, देवस्थान विभाग के अतिरिक्त आयुक्त दिनेश कोठारी, पुरातत्व विद् डॉ. ललित पाण्डे और एडवोकेट मोती सिंह राणावत ने व्यक्त किये।

शान्तिपीठ की पहल पर पहुँची टीम में सम्मिलित डॉ. पाण्डे ने कहा कि नागदा मंदिरों का वास्तुशिल्प प्राचीन वैभव का स्वंय सिद्ध प्रमाण है जो मेवाड़ ही नहीं अखिल भारतीय समृद्ध परम्परा की सनातनता को सिद्ध करता है। उन्होंने कहा कि नागदा और आहाड़ की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति एवं इनके मध्य के उपजाऊ मैदान ने इसको राजनैतिक, व्यापारिक एवं सैनिक शक्ति बनाने में भी योगदान दिया जो कालान्तर में वैभव का कारण बना। आज भी नागदा में मंदिरों के अवशेष और चार दीवारी यहाँ के वैभव को स्वयं कहते प्रतीत होते हैं।

देवस्थान अतिरिक्त आयुक्त दिनेश कोठारी ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि विभागीय स्तर पर क्या किया जा सकता है, इस पर विचार अवश्य करेंगे।

प्रातःकाल
उदयपुर, शुक्रवार 22 फरवरी, 2019

# बिना संस्कृति राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता



उदयपुर (वि.)। बगैर संस्कृति के राष्ट्र आगे की ओर नहीं बढ़ सकता, आज आवश्यकता है सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की जिससे राष्ट्र विकास के साथ ही मौलिक पहचान से विश्व में अपनी छाप छोड़े। यह विचार आज फिल्म संस्कृति के संरक्षक एवं वृत चित्र निर्माता और फिल्म हेरिटेज फाउण्डेशन के संस्थापक निदेशक शिवेन्द्र सिंह डूंगरपुर ने शान्तिपीठ में संवाद करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने स्पष्ट किया की सामान्यतया फिल्म से लोग केवल सिनेमा में दिखाई जाने वाली फिल्म से लेते हैं जबकि वृत चित्र, लघु फिल्म, विज्ञापन फिल्म भी इसमें शामिल हैं। भावी पीढ़ी के लिए और संस्कृति के लिए इनका अमूल्य महत्व है, इसीलिए मुम्बई ने उन्होंने फिल्म संग्रहालय स्वंय की कमाई से बनाया और उसकी ख्याति विश्व भर में फैल गई। डूंगरपुर के योगदान के लिए हाल ही में ऑस्कर फिल्म समिति ने होलीवुड में सम्मानित भी किया तथा 'द सेल्यूलाईड मेन' लघु फिल्म की मुक्त कंठ प्रशंसा भी हुई है। शिवेन्द्र सिंह ने कहा कि आर.के.स्टुडियों के बिकने पर वहाँ की अनेक पुरानी फिल्मों, तस्वीरों, पोशाकों आदि को अपने संग्रहालय में सुरक्षित किया है। यहाँ तक कि पृथ्वीराज कपूर की उस मूर्ति को भी जिसे हम आर.के. बेनर तले बनी प्रत्येक फिल्म के प्रारम्भ में देखते है। उदयपुर को उन्होंने उज्वल संभावनाओं से भरा प्रिय शहर बताया। शान्तिपीठ संस्थान से जुड़कर उन्हें आत्मिक हर्ष व अपनापन महसूस हुआ। पायरोटेक इन्टरनेशनल के पी.एस.तलेसरा ने कहा कि फिल्म व्यक्ति के मानस पटल पर दीर्घावधि के लिए छाप छोड़ती है। संवाद में उपस्थित प्रो.एस.आर.व्यास ने डूंगरपुर को आधुनिक तपस्वी कहा। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवाओं में सांस्कृतिक विरासत के प्रशिक्षण की आवश्यकता बताई। सी.ए. आर.के.पोखरना, एडवोकेट मोती सिंह राणावत, आर.एस.चौबिसा आदि भी उपस्थित थे। प्रारम्भ में शिवेन्द्र सिंह का स्वतिवाचन के साथ परम्परागत स्वागत किया गया।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर, शुक्रवार, 22 फरवरी, 2019
patrika.com

## सांस्कृतिक विरासत संरक्षण की जरूरत- शिवेन्द्रसिंह

उदयपुर . वृतचित्र निर्माता और फिल्म हेरिटेज फाउण्डेशन के संस्थापक निदेशक शिवेन्द्रसिंह डूंगरपुर ने कहा कि बगैर संस्कृति राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता। जरुरत है सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की। जिससे राष्ट्र विकास के साथ ही मौलिक पहचान बनाई जा सकती है। शिवेंद्रसिंह शान्तिपीठ में आयोजित संवाद कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने स्पष्ट किया की सामान्यतया फिल्म से लोग केवल सिनेमा में दिखाई जाने वाली फिल्म से लेते हैं, जबकि वृतचित्र, लघु फिल्म, विज्ञापन फिल्म भी शामिल हैं। इस मौके पर पी.एस.तलेसरा, प्रो. एस.आर.व्यास, शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विचार रखे। आर.के.पोखरना, मोती सिंह राणावत, आर.एस.चौबिसा मौजूद थे।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 22 फरवरी 2019

## सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की आवश्यकता

उदयपुर। बगैर संस्कृति के राष्ट्र आगे की ओर नहीं बढ़ सकता। आज सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की आवश्यकता है जिससे राष्ट्र विकास के साथ ही मौलिक पहचान से विश्व में अपनी छाप छोड़े।

यह विचार गुरूवार को फिल्म संस्कृति के संरक्षक, वृत चित्र निर्माता और फिल्म हेरिटेज फाउण्डेशन के संस्थापक निदेशक शिवेन्द्र सिंह डूंगरपुर ने शान्तिपीठ में संवाद करते हुए व्यक्त किए।

संवाद में उपायरोटेक इन्टरनेशनल के पी.एस.तलेसरा, प्रो.एस.आर.व्यास, शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, सी.ए. आर.के.पोखरना, एडवोकेट मोती सिंह राणावत, आर.एस.चौबीसा आदि उपस्थित थे।

## भावी पीढ़ी के लिए संस्कृति का अमूल्य महत्व है: शिवेंद्र

शांति पीठ में संवाद करते हुए फिल्म निर्माता शिवेंद्र सिंह डूंगरपुर ने कहा कि मुंबई में फिल्म संग्रहालय इसलिए बनाया गया है क्योंकि भावी पीढ़ी के लिए इसका अमूल्य महत्व है। सिंह ने उदयपुर को संभावनाओं से भरा शहर बताया लेकिन चिंता व्यक्त् की कि इसके नैसर्गिक सौंदर्य में विकृतियां बेतहाशा बढ़ रही हैं।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . सोमवार . 28.11.2016

# प्राकृतिक स्रोतों को करना होगा संरक्षित

**उदयपुर.** शांतिपीठ की ओर से आयोजित 'स्मार्ट सिटी के संदर्भ में शांति सम्मत विकास की अवधारणा और उदयपुर' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने कहा कि जनसहभागिता के आधार पर विवेक सम्मत विकास स्मार्ट सिटी के लिए जरुरी है। हमें विरासत में मिले प्राकृतिक स्रोतों को संरक्षित करते हुए संस्कृति और विकास के बीच संतुलन कायम करने को प्राथमिकता देनी होगी।

यूआईटी के नवनियुक्त अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली का सम्मान किया गया। उन्होंने कहा कि स्मार्ट शहर योजना को साकार करने के लिए हमें विकास के साथ-साथ नागरिकों के संस्कार भी विकसित करने होंगे। जो हमें विरासत मे मिला है, उसे बनाए रखकर विकास की यात्रा हमें लक्ष्य दे पाएगी। अध्यक्षता कोटा विवि के कुलपति डॉ. परमेन्द्र दशोरा ने की।



उन्होंने कहा कि विरासत में मिले मानवीय मूल्य की बदौलत विकास कर सकते हैं। उन्होंने वाटर हार्वेस्टिंग, कचरे से ऊर्जा उत्पादन और वृक्ष वाटिकाओ के निर्माण की जरुरत बताई। एमपीयूएटी के कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि शहरी रोड नेटवर्क और हरियाली विकसित किए जाने के लिए वैज्ञानिक तरिकों की जरुरत है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने स्मार्ट शहर के लिये 100 किलोमीटर की परिधि को लेकर समुचित योजना बनाने की जरुरत बताई। पंजाब सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि शहर को स्मार्ट बनाने के लिए नागरिकों को स्मार्ट बनना होगा। पायरोटेक के पी.एस. तलेसरा, प्रो. चन्द्रशेखर शर्मा, पूर्व उप जिला कलेक्टर हीरालाल कुणावत, भंवरलाल व्यास, डॉ. शोभालाल औदिच्य, प्रो. महेश शर्मा, शंभूसिंह राठौड़, पुनित शर्मा, एम.एस. राणावत, मजहर खान मौजूद थे। संचालन मनोज गंधर्व ने किया।

दैनिक नवज्योति उदयपुर, सोमवार, 28 नवम्बर 2016

# विवेक सम्मत विकास स्मार्ट सिटी के लिए आवश्यक



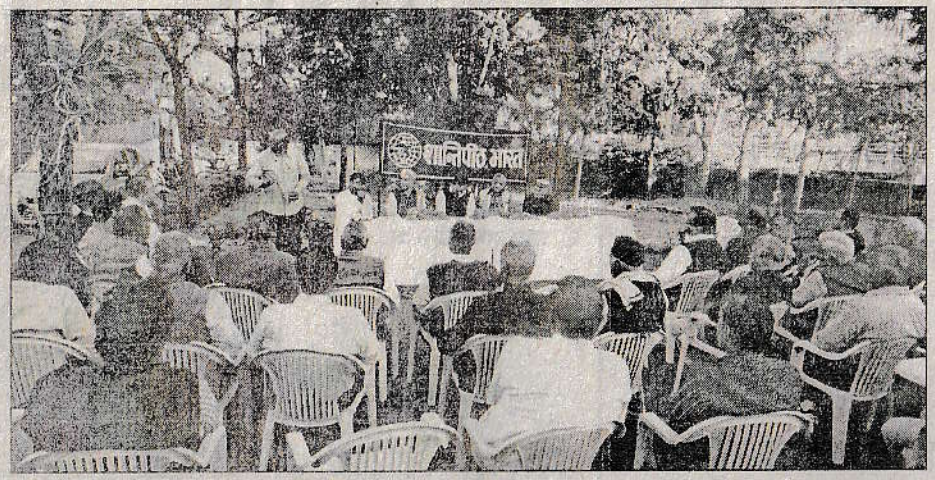
**उदयपुर।** जन सहभागिता के आधार पर विवेक सम्मत विकास स्मार्ट सिटी के लिए आवश्यक है। हमें विरासत में मिले प्राकृतिक स्त्रोतों को संरक्षित करते हुए संस्कृति ओर विकास के बीच संतुलन कायम करने को प्राथमिकता देनी होगी। उक्त विचार शांतिपीठ के तत्वावधान मे आयोजित स्मार्ट सिटी के संदर्भ में शांति सम्मत विकास की अवधारणा व उदयपुर विषय पर आयोजित संगोष्ठी में उभर कर आये।

नगर विकास प्रन्यास के नवनियुक्त अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली का सम्मान किया गया। श्रीमाली ने कहा कि उदयपुर को स्मार्ट शहर योजना को साकार करने के लिये हमे विकास के साथ साथ नागरिकों के संस्कार भी विकसित करने होंगे। अध्यक्षता करते हुए कोटा विश्वविधालय के कुलपति डा. परमेन्द्र दशोरा ने कहा कि हमें विरासत में मानवीय मूल्य ओर तहजीब मिली है जिसके बुते हम स्थायी विकास मे कामयाब हो सकते हैं। उन्होंने वाटर हार्वेस्टिंग, कचरे से उर्जा का उत्पादन व शहर की प्रत्येक कॉलोनी में वृक्ष वाटिकाओं के निर्माण की आवश्यकता बतायी। महाराणा प्रताप कृषि व प्रोद्योगिकि विश्वविधालय के कुलपति डा. उमा शंकर शर्मा ने कहा कि शहरी रोड नेटवर्क व हरियाली विकसीत किये जाने के लिये वैज्ञानिक तरिकों की आवष्यकता है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने स्मार्ट शहर के लिये 100 किलोमीटर की परिधि को लेकर समुचित योजना बनायी जाने की आवश्यकता बतायी। पंजाब सरकार के मूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि उदयपुर को स्मार्ट बनाने के लिये यहा के नागरिकों को स्मार्ट बनना होगा। इस अवसर पर नगर विकास प्रन्यास के नवनियुक्त अध्यक्ष का अभिनन्दन पायरोटेक के पी. एस. तलेसरा, प्रो. चन्द्र शेखर शर्मा, पूर्व उप जिला कलेक्टर हीरालाल कुणावत, एडवोकेट भवरलाल व्यास, डा. शोभालाल औदिच्य, प्रो. महेष शर्मा, एडवोकेट शंभुसिंह राठौड़, पुनित शार्मा, एडवोकेट एम.एस. राणावत, मजहर खान आदि ने किया। संचालन मनोज गंधर्व ने किया।

प्रातःकाल
उदयपुर, सोमवार 28 नवंबर, 2016

# संस्कृति और विकास के बीच संतुलन कायम रखना जरूरी

उदयपुर। जन सहभागिता के आधार पर विवेक सम्मत विकास स्मार्ट सिटी के लिए आवश्यक है। हमे विरासत में मिले प्राकृतिक स्त्रोतों को संरक्षित करते हुए संस्कृति और विकास के बीच संतुलन कायम करने को प्राथमिकता देनी होगी। उक्त विचार आज शांतिपीठ के तत्वावधान मे आयोजित स्मार्ट सिटी के संदर्भ में शांति सम्मत विकास की अवधारणा एवं उदयपुर विषय पर आयोजित संगोष्ठी में उभर कर आये।



इस अवसर पर नगर विकास प्रन्यास के नवनियुक्त अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली का परपरागत सम्मान किया गया। संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते हुए श्रीमाली ने कहा कि उदयपुर की स्मार्ट शहर योजना को साकार करने के लिये हमे विकास के साथ साथ नागरिकों के संस्कार भी विकसित करने होगें। जो हमे विरासत मे मिला है उसे अक्षुण्ण बनाये रखकर विकास की यात्रा हमे वांछित लक्ष्य को उपलब्ध करा पायेगी।

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति डा. परमेन्द्र दशोरा ने कहा कि हमे विरासत मे मानवीय मूल्य और तहजीब मिली है जिसके बुते हम स्थायी विकास मे कामयाब हो सकते हैं। उन्होंने वाटर हार्वेस्टिंग, कचरे से उर्जा का उतपादन एवं शहर की प्रत्येक कॉलोनी मे वृक्ष वाटिकाओ के निर्माण की आवष्यकता बतायी ।

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रोद्योगिकि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. उमा शंकर शर्मा ने कहा कि शहरी रोड नेटवर्क एवम हरियाली विकसित किये जाने के लिये वैज्ञानिक तरीकों की आवश्यकता है ।

शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने स्मार्ट शहर के लिये 100 किलोमीटर की परिधि को लेकर समुचित योजना बनायी जाने की आवश्यकता बतायी।

इस अवसर पर नगर विकास प्रन्यास के नवनियुक्त अध्यक्ष का अभिनन्दन पॉयरोटेक के पी. एस. तलेसरा, प्रो. चन्द्र शेखर शर्मा, पूर्व उप जिला कलेक्टर हीरालाल कुणावत, एडवोकेट भवरलाल व्यास, डा. शोभालाल औदिच्य, प्रो. महेश शर्मा, एडवोकेट शंभुसिह राठौड, पुनित शर्मा, एडवोकेट एम.एस. राणावत, मजहर खान आदि ने किया। सगोष्ठी का संचालन मनोज गंधर्व ने किया। इस अवसर पर श्रेणीदान चारण सिंह विद्रोही ने काव्य पाठ किया।

दैनिक भास्कर, उदयपुर
सोमवार 28 नवंबर, 2016

## शांति सम्मत विकास की अवधारणा पर संगोष्ठी

शांतिपीठ की शांति सम्मत विकास की अवधारणा पर संगोष्ठी हुई। इसमें यूआईटी चेयरमेन रवींद्र श्रीमाली ने कहा कि उदयपुर की स्मार्ट शहर योजना को साकार करने के लिए हमें विकास के साथ संस्कार भी विकसित करने होंगे। जो हमें विरासत में मिले है। अध्यक्षता कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. परमेंद्र दशोरा ने की। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. उमा शंकर शर्मा, शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी, पंजाब सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी आदि ने भी विचार रखे।

दैनिक भास्कर उदयपुर | 11 अप्रैल 2010

## पानी के पहरेदार

# जल संरक्षण को युगीन संस्कार समझा जाए

कौन नहीं मानता कि पुराने सरोवर हमारे लिए नायाब तोहफा है। हमारा कर्तव्य यही है कि उनको हम सुरक्षित रखें। यह विचार कोई ढाई दशक पहले, 5 जून 1991 को उदयपुर के **अनंत गणेश त्रिवेदी** के दिल में जागा। जब पीछोला झील पर जलकुंभी सुरसा की तरह फैली हुई थी। त्रिवेदी ने शहर की सभी प्रमुख संस्थाओं के पदाधिकारियों से संपर्क का सिलसिला शुरू किया। 1992 तक व्यक्तिगत बैठकें चलीं और बागोर की हवेली में शांतिपीठ के तत्वावधान में 7 जून, 1992 को झील संरक्षण समिति का गठन किया। अध्यक्ष बने प्रभुलाल अग्रवाल। वहीं पर संभागीय आयुक्त धर्मसिंह सागर, कलेक्टर राकेश श्रीवास्तव सहित अधिकारियों के साथ शताधिक शहरवासियों ने चिंतन किया। तीसरे ही दिन, शहरवासियों की भीड़ ने पहले ही चरण में 600 टन जलकुंभी और मलबा निकाल दिया। त्रिवेदी कहते हैं कि हमारी परंपरा सिद्ध करती है कि कोई गाय के खुर के बराबर भी सरोवर बना दे तो वह असंख्य पुण्य संग्रहित कर लेता है।



प्रातःकाल
वैशाख शुक्ला 8-10 शुक्रवार 23 अप्रेल 2010

# पृथ्वी बचाने पर्यावरण, जल व जनसंख्या पर नियंत्रण जरूरी

## विश्व पृथ्वी दिवस पर विविध आयोजन

उदयपुर, 22 अप्रेल (कासं.)। गुरूवार को विश्व पृथ्वी दिवस पर शहर के विभिन्न संगठनों ने पर्यावरण संरक्षण करने, जल की एक-एक बूंद बचाने, चहुंओर हरियाली फैलाने के संकल्प के साथ विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर विश्व पृथ्वी दिवस मनाया।

विश्व पृथ्वी दिवस पर पहल व वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में साइकिल रैली निकाली गई। इस दौरान बालकों ने पर्यावरण को सुरक्षित रखने संबंधित चार्ट, संदेश व बैनर लगाए। शहर के द स्टडी, आलोक स्कूल व सेंट एंथोनी के बालकों ने जल व पर्यावरण संरक्षण को सुरक्षित रखने की थीम पर आधारित नाटकों का मंचन किया।

पहल संस्थान की ज्योत्सना झाला ने बताया कि इस दौरान मुख्य वन संरक्षक एन.सी. जैन द्वारा प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम रखा गया जिसमें सही जवाब देने वाले छात्रों को डिवीजनल फोरेस्ट ऑफिसर शैलजा देवल द्वारा पुरस्कृत किया गया। वहीं कैदियों द्वारा तैयार की गई कागज की



उदयपुर। विश्व पृथ्वी दिवस पर हाथ उठाकर 5 पौधे लगाने की प्रतिज्ञा लेते पर्यावरण प्रेमी। फोटो-कमल कुमावत

चित्रकार शाहिद परवेज एवं शिवसिंह सोलंकी के निर्देशन में चित्रकला कार्यशाला का आयोजन किया गया। हरावल के समीर बनर्जी ने साइकिल चलाने की आवश्यकता संबंधित संदेश पत्रक बांटे। वहीं स्वामी विवेकानंद सोसायटी द्वारा जेल में थैलियों को प्रदर्शित किया।

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ लोक शिक्षण प्रशिक्षण प्रतिष्ठान द्वारा आयोज्य गोष्ठी में निदेशक सुशील कुमार ने पृथ्वी को बचाने हेतु पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण और जनसंख्या नियंत्रण पर विशेष बल दिया। गोष्ठी में शब्बीर हुसैन, प्रकाश जादोन, दिनेश तिवारी, दुर्गेश नंदवाना ने भी विचार रखे।

शांति पीठ संस्थान और जोनल रेलवे प्रशिक्षण केन्द्र की ओर से प्राचार्य जे.एस. मीणा की अध्यक्षता में विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया। मीणा ने कहा कि पृथ्वी संरक्षण का सर्वाधिक सुगम मार्ग पौधारोपण है किंतु इसका मूल्यांकन सर्वाइवल पर आधारित होना चाहिए।

शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि धरती का बढ़ता तापक्रम और जलवायु परिवर्तन के हालात परमाणु बम का दूसरा रूप है जिसकी आसन्न विभीषिका के खतरे से बचने के लिए हमें जीवन जीने की पद्धति को बदलना होगा।

इस अवसर पर उपस्थित जनों ने हाथ उठाकर पांच पौधे लगाकर उन्हें बड़ा करने एवं जीवन में वसुंधरा के प्रति प्रतिबद्धता की प्रतिज्ञा ली। संचालन गोपाल नागदा ने किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार, 23 अप्रेल, 2010

## पौधारोपण कर संकल्प लिया



**उदयपुर।** पृथ्वी दिवस पर शहर में गुरुवार को विभिन्न संस्थाओं की ओर से कई आयोजन किए गए। पुस्तकालय परिषद राजस्थान विद्यापीठ की ओर से लोकमान्य तिलक शिक्षण महाविद्यालय परिसर में नीम के पौधे लगाकर धरा संरक्षण व पॉलिथीन काम में नहीं लेने का संकल्प लिया गया। पुस्तकालय अध्यक्ष घनश्यामसिंह भींडर ने बताया कि प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। 6-राज एयर स्क्वाड्रन एनसीसी की ओर से पृथ्वी दिवस पर कैडेटों ने रैली निकालकर पर्यावरण व प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया। कमाण्डिंग ऑफिसर विंग कमाण्डर निर्मल राय ने यह जानकारी दी। भारत विकास परिषद प्रताप उदयपुर की ओर से उपभोग में संयम और पर्यावरण विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। संरक्षक डॉ. सत्यनारायण माहेश्वरी ने कहा कि उपभोग में असंयम के कारण ही विश्व में पर्यावरण संकटा आया है। शांतिपीठ संस्थान और जोनल रेलवे प्रशिक्षण केन्द्र की ओर से गुरुवार को केन्द्र परिसर में प्राचार्य जे.एस. मीणा की अध्यक्षता में समारोह का आयोजन किया गया। मीणा ने कहा कि पृथ्वी संरक्षण का सबसे अच्छा मार्ग पौधारोपण है। संस्थान के महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि धरती का बढ़ता तापमान और जलवायु परिवर्तन हालात परमाणु बम का दूसरा रूप है। भूगोलविद् प्रो. आर.एम. जोढ़ा ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से प्रकृति रूठ चुकी है। इससे पूर्व पौधों को पानी दिया गया। साथ ही सभी ने पौधे रोपे।